## સકતા અક્ષેત લક્ષબોધ પંચીકરણ

मामतप्रमगुरुष्डदमको वल्ययदम ॥ ज्याथ्यसकता न्याद्व त त्रम्बोधपंचीकरण्।। प्रारंभते॥ ईप्रथमसकरतास नकैववने नमसकारकरुछं॥तेसकरता केवत्यकेवा ल्राशातितोन्त्रवं उन्त्रमरनम् चुतन्त्रतादी साध्या ग्रा क्षयदीयद्रीगरूपमोहं यद एकदेमानारमलछ्रा। याञ्च तम्मचलसरवनी नमारीयुरातंत्रधां मछ्या तेते जयेज यन्मवयलसवरेनमसकारकरुष्ट्राधातेतमोसतव वलाइसएकदेसापरमउतकष्टन्मलोकीकरुपयता नेकालन मान्यसमान पवनपांणाचंद्रमास्वरजव रंचाचा सामाहरवर प्रकात पुरस्तती ग्या ध्रकाय तु ततत्वन्यसप्ण उपजेला नुता। धीतेकरता तस्वकत पण्याकारवा नाथया न ता। तेकाताना जे एकदे सान्त्रपारसुन्यने वाषे वाराजमां न एक गमनेवाषे॥ धान्यचलरहाने जाहारे यो ताने न्या यो न्या पुत्र युज्ञण्ड पजी।।तार पद्यासंकत्यच उन्प्रपार खंबतांता विध्य वास्तान्। चराचरदेव झुकाउसमेततत्वश्रमसउष जावतर चताकरेगाते व्यालोका जोतां ऋतुमां तगतीपो चतातथा। जेहे तेजो इत चतुर बंद ने ताकराते त्या धाषा णयछो।कारणस्त्रजेतमारुकरतत्वितासंमयुर्ण युम्दिवनावेदव चनमां युग्वनप्रातिकरतना व वेकयं नमा ने देजे खहमते है नाना ने गंम रही छे।। दो है गकरतातमा एकदे साद्या नारेश्राताकहछ जे एकदे सायदतालघुन्मत्यहोया जिनतेस्र वदसापदतो माहा मोर्होया ते स्वयंत्र मां येश्रे ए जां ए आशाए बुके हेस् तेहैं तो उत्र द्याग्य साने सन्वदे सात्र घुद्र रे घ्यंदती नरणे परमगुरुसं तसजनलो कते के हे छो। १०॥ अथंत यत्रवेदनो वनचारतो एकदेसी एएष्रक्रतापुरस मा घे ६१ वरते था यंत्रक यं ग्रिशति है ता उपरांत सरव

दसापटकं निमानमानगान्य स्थाप्त स्थापति । वसायहम्माद्यसम्बद्धाः स्थापत् अर्केर ताते तो शिक्त दे सी सामा ता ता ने साम ते हैं यलापरण स्वानम् करता जना एवा सम्बद्धाने पंची यतकरवायस्व गाणा ॥१३ मा सेतेहे ने जमकर ता वाखकरतवस्य स्थान स्थाने हेते में उपदक्षाते सुनाईते॥ कहातेसत्य से पायस्ति होते में उपदक्षाते सुनाईते॥ कहातसम्बद्धान्य अस्ति । १९५॥ ज्यते एक हेम श्वरप्र शपुरसस्य वित्रक्षेत्रं निता एता व्यक्त करती प्रवर्ध ए उर्गान्य माने हो। ति द्रयाने एक देसात हु परकर्उ। १९५१। छुंस तो त्या य कन्म वी त्या स्युत्यस रबन्मल हुन्मचल है।। एउम यस्तिधांत वतिधाता वेद नेवारवेकेहें छे॥१६॥प्रणातेकाधाताताता एकदिस्नीन्यते मरवदेमां यं ममाल में पडानधा का वेते एक देसा जातादासाध्यकेईप्रकारेपद्वसेष्ठ्र १९ वातेहतामर मसंतसजंत-मातुरतेकहं छं। % महोजेयां चमो वेद स्रमपरमगुरुवेव एवकहों छे। इट्या वी बेए करेसी नमनो पंमनमनुमने बोल्या छो। नारेन मोएम केरेसोजे एकदेसनस्य बदेसी पदती ता घुदार घरि तोसांभवजो जेबो त्याते पद्। १८ गीतो न्यादा एक देसी पान्त्रीरतां जां एवां तिउम ये पद् जे ना वडे वसे छोति एकरेसावर संक्रतावर मउतक क्टेकेव स्यक्र क्रि जांण्युष्टिमानिहेमास्कर समा व उप युकास्माकन्त्रार्ष अजमारहे हो। जमरवानम्मे नन्यत एकदेसम्र नेय्वायुकात्मव्यं सांरमेकरे छे। एशा स्मिनेयाजा युण् केंग्रमलन्ध्रमलेंग्रमलेंग्रामलयानामाराजसुधायकरें नियमतन्त्र विकासमारा वरा वरा यहा एकदे स्माराज तथास रजवरेषावध्यापर । त्या प्राप्त । व्यापन

साची।तमतो परमञ्जासतेजसनातंन-मद्देन ब्रांसस्य नवारविकानकतारहे छो। २३॥ नमनेकतयण प्रक्रकतापुर वस्या जो हो ते एक दे स्मा के हे छे।। ते संम पुर एत त्व छा स वस्त्र करता तेन्द्र करता एउ भये पद जे हे ना न्या धारे वस्ता छी थशी ते मांतत्व नमंस ए तो न्यवधा सुधा न तेषुकास बुंस तो न्यवधिका तरहा तस्य अज्ञ अध्य वायुका संख्या पकत्मर्वदेसा १५॥ जनेन्य्र तासुरत वाउप जेते एक देसा के हे वाया। पण्यकास तथा त्रम जार वहं एक देखा भां नुं धका ज ज महो व छ। १६। ते ज युकारे करतद्युमाउतत्वन्म्रससमेतान्म्र तावतताजकरताप जांणवां न्म ने छुंसाप एपसनातं न पुका समाज करमाने नछे।।श्याण्यकारेएकदेसायरमयदन्मताप्रेखदाव्य वषुरूपेसे। अतंततत्वयदार्यथातातछे। एषुक्रणसा मलातेष्रोता को हेछो। २८। जितमा सुक्षमं बेरते सामत्रस प्रतेकराते। सकरता एकदेसी पर्यु श्वकंषी पण चारवेद सारग्रनाकर तातो एसके हे छे। १०। जेहे पांच मोबेदको हो छो। तितो तरकवाद जां ए वे। । छुं सायेपां च मोबेदकेई युकारे उत्रयंत्र क यो छे। ३०० % मते एक देसा स करतायद् ध कान्त्रारलां पर्वाकोहो छो। तेह्रत्यण्यम तचारवेदत्रश्रुतामां तथी। ३ शोतारे हावे वेदतथा ने क होष्रानि हेतु तारोप एक पाक स्वते हे पर मणुरु श्रामेष क्रयो।एरलेतेहेनुं प्रवणकरातेन्त्रमाराक्षां समाम सिव्याएष्रकारेष्ठ्यम स्रांभतीने परमगुरुप्यमा वेदन नारायणकरेछ॥ ३३॥ ईताश्रायन्य जाना नार्वितलस्रवाध पंचानकण परमण्कहेन्सीयदमारोपणमामप्रथमोषुकण उर्ण ॥१॥ समासाम् प्राप्ता राभता। हा वेपांचमा वेद तुनारी पण्यां मत्यो । जे हे यां च प्रावेद क्रमता स्वस्था माहाश्रेष्ट वाजेकत्येद्धाः अवयं तथायद्याः शातकत्यतेवासेपा

चमोवेरप्रगरवायले। त्राकेश्कत्ययां चमावेद वन रनातातथारहां कत्यकत्यमेळ्लावरा॥ शागमवेदप णपंचेर्यवराजाहोरेताज करता करतउप जाने छे तेकरतम् तारान्कणन्मत्य नावतेकरीनेदेवाउपावत माक्रममानं मप्रे । ग्राता वास्ते वेदकर वानुकार ण्धरराहाउ। तुं छे। परंतु ज्ञाकत्यते वीरवे ब्रह्मा पांच मुचेकरीते पांचवर तुर्उचार एकर ताहुता छितिहम चतुरवेद नरणवमां तो नमोर खुकत प्रपंच वेहे वार मतथा। करतमां ही ताकरतागुणुई श्वरादीक न्यते ब्रुमन्त्रकरता।स्रानुतारोषणकरताहृता।त्मनेपांच मावेदनुउचार शापांचमेमुषे सन्कतानुं ऋत परमउत कदसंकल्पवडेकरलुनेन्प्रतोषमतत्वतथा धान्यंस सरजेलानीकलामेरव्रणवकरताता पछतेलो यथवा नुकारण्सुंपयुत्रेसामता।।अप्रिपंमकरतारेषुरस सक्तरपंजाव्यांतेषका नागु एदेव ब्राह्मा वा व्युमारे स्यरतथा। जणकत्याया थरी। तीतमतासं जमवडेन्प्र गतवास्तार पयो। तेसावते बेबात कथयां ते वा वसुते वंक्रसमाएकम् मानेव्यस्वप्रजाउतपंत्रधवानु रस्योध तेब्रंसातेष्रथंमचतुरस्रतकादीकथया। तारपद्मादस इजार पुत्र ब्रुख्नाते पतार्वा । पण्ने उत्पंत्र पायते ब्रुख्न नापासे छ्नां॥१८॥माराबुधाधनां जाय तेन्या यय यस्त पायतारे चतुरवेदतो उचा रखामतीते हेतुं ज्ञांत पाय त्र्यतेषां चमुवरस्रवेसेतारे ब्रह्मदेवता। ११। पांचमाम षतोसुरमवैदतो उचारसांभता वेते ते ते जात थाया। हावेयम केरे सोजेवाधातेमुयतो चारजसो मलाये छे। १ थाने यां न्यां मता मां न्या खंत था। तारे सां भते ब्रम्देवनेन्माकत्पतेवारवेषुधंमपां चमुषकसांह तां । तिहेन का रण जीव पर पंचराहा जीच तर वेद

यंची 2.

18

व्यासी स्मित्र में पांच्यमा यहे परमार प्रतिक्षकरता विकास स्वाहित जा गाउने कर ता ता ता का कर से ।। १९९० वर्षां वर्षा मुक्र अस्ताते वाचे उत्तयता य वाता रही। तिरजो गुण वस्त्रमागेते शेकराने। ज्यने साववासायकाताष त्ताताधवालायातेन्माय ण तो जा वछीये न्यतेन्त्र मत्राचितेन्द्रापणाकर्तातो सरवते स्वजाणन्त्र इताहिषात्राज्ञा भागवा विस्ताच्या ते करता ते स्वास् आपणाकर का सामाय जी। तथा यहा वाता रंजे तपुरस गुबेरामधार ए। कर्मते। १८ वित्वासार उपादा छो क्षाया।तारेन्माप ऐहाचे तेहे तसोधं तकराये।।एखं जाणितेषुथं मचतुरस्र तकास्यकतयकरवातेतरत पात्रतीकलागया। १८॥ तदेयाते व्यानापण्याधाषु ग्वपष्रवाडे एकदसङ्जारतपकरवासाक्राया मेषेत्रवपुत्रुतीसंस्वारसुगतमांतकर वातारसार षिपरमेश्वरजजनाते वासेवरतान्त्रपरवं उलागार ति अतमां तस्त सम्ब्रामारो। कर १ ते तम जध्यां तन्त्र भुत णकरेषे।११॥एवाद्गउतान्स्रव्यञ्ज्ञस्य स्वतापुर्धमप् णिया में वे एक कारेन वाइन वं ता तार जन में प्रसद षिताह्वाप्रशान्त्रमागात्रश्रव्यताचात्रत ने उपने तेत्रप भरवाजाया। तारप्रद्वापरप्रच्याच्याः व्यक्ताव्याः मेंबंधपयोग रहे। हा ने ता जन कर तारे पंच ने दसमेत भूतगर्माकता चेकद्मकर एउमां धी।।।।। भूतिसरेखाउवासम्ह्यातामध्यमां धी।।।।।। भूवनारलेवाउवानपडेपणाने हेकांणे घुचवण भूवनारलेवाउवानपडेपणाने कालतामारही भूतिका अस्पारान्त्रमांगन्मागाल-वालतामारही

सःम इ

रेरे का तेन्याका सवांगा करवी। जेश्रव्यान्ता मना रकराते न्मज्ञकांमचालतातथी ५६। तपरमवांस घं भारन्यारातारायणे नाद्य एसां मताते ना चारकः तार्वा। ते वादमुंचो त्ये ग्रंसदेव ता पा से नमा वा ने स कलचरामजोयुंद्रियातारारेपंच मुमुख्योलेने प्राच करा ते के हे छे जे एते कां हो स्वय वकता छे। ते मारे एस व नामध्ययामामाष्ट्रापरं पराचायमानामहा॥२त न्त्रतेतां हा खुधाताज करताती न्यासे प्राची वधवाती षुरण्तथाय्। पछेतेकालेवाक्षुसावपासेन्मावता ह्यारिजास्त्रवतुर्यस्ततकर्ततेस्ययवेत्रतमात्रश्रद काम यं धयो आनु कहा ने वती वाते छे के जिले हुन देव नेपांचमुं मुख्वतेकरतारेक रही। इनीतेन्मकारणक रसुजणायछेनेएमनेस्रोभतुनथन एमुचनुबोसंउजा एप यरसंमतागे छी। ३१। यहेनुं छेदन हमणां करातां ख स्रोतो वाधानु सुरवस्ता भायमा तदेखान्ते निताहां सुध छं सातं स्वरूप सारत पादे स्वातं॥३२॥ एपुकारे साव नायवाद्यत्व नचतसामतानेकहेछेने।यकोम्हर करतारातथा।।ताहारेवाक्षुयेकहां जे ए तोकयोवा क्याते।।३३॥फरभसावजभन्ने।त्याजेयतमोतेसुरुषश तेकाले वा ब्यु येस कलवर तांत्र संकेष सावते के। माह्याष्ट्रिशातवयान्यात्रेयके जेत्र तमारातमा रात्र्य यांचारकर बातुंकां मसां पेलुंछ। मारे सुबद्धेद वकर वासाम्बानामां तासामां तासामां देश बे ने कावे प्रज्ञान्यमंत्र प्रसेते का सेन्या गत्म धा कर्यामेन्मा वस्रीप्यारे वादमुवाल्याहेशावाहद्दान्मी ष ब्रह्मा ने गर्थ अने उस्मो म तुं नथा।। न्यहोसं कर न्यारे परंमपराश्रास्त्रवास्तार धयावास्तं हमणां छेद्राक ज्ञास्थान्म मोयेग्सम छद्नकरुदोत्तांयण्यण्यारी

मामहमा यात्रयप्रतिशा एतमो ते सां पेखु छे॥ न्यते रमारे सारते छे हाना युजा पाल एक रवातुं सारहे र विष्टलासा कतमान्या जधा नाधा मस्त कर पा गण्यताषुजेनछर्नकराने।।प्रारेभकरजो।।सासा हत्रामागलने मने मार्थी-श्रव्हा पर्छे वधना जाय त प्रतिम संघारकर वार्ते धतुजाया। ग्वसावेसांभ वाते तर वस्या छ सदेवना च तर स्वउपर पांच प्रात्ते ताध्वा संघा रक्तरा तांत्रच्य ता रे ते मुषतो मुंस द्रेवसवेताहुता तेह् बंब्र्झ कपासपर्ते सावता पण्चारे व्यास्त्र ते हैं ते इस्वाधिशासनय ने भारे प्रयामां हो 16 कारणतेम् वतोन्तान्तान्यरान्यरायाह्तं मासेनु è भ्रत्याधर्शाधर्था तेसमसां तत्रमा छेसाच जांशं जोद् त्रणलीयमाजाया।ता हातां इां खपरवा गारे।तेका जा सर्वेसा वजा ये जो एउजे लगाम यनमा पाते छोउतु 20 विभाध्या पद्धिते ताक्रां ये ये ये ये ये ये या या या या यो तो वि 38 तातामां राख्युं। तारे सर्वे ईपाउाताचार ण्पारी धि गवेश गुश्रो ना चे स्ता म स्ता ने य्यक्ता जं न ने के हें छै। जे है SH यंसापां च मे मुख्वे वात तार्वा। तेपो तामुं बो लेख 30 देश ध्धयोतात्रमालमन्तु यउत्यान्मत्रमात्म यस्त्रत हरे यारमासार्व्यया नवोत्या हो तत्रो छस्मान विमार्थ।।वधानयकरवात्रसाक्रतगयाहोतप्रपंच 29 वह वारकराने प्रमश्वरतं भजन करोता पण्ड 52 मजाणतात्रताकेस्य । ऽद्दात्तरतावास्तेवे मथयुर्से पुकारेयुद्धम् क्रातातुं स्रोभताते परमाप्रस्परंम प्रावेतस्य विसेगताचे ता। ऽशामात्येभ्रोतात्रान्मं दे 形石 भानीया रणाध्य वास्तारुग्नादी में दलक्ष्याण्यवेक श्चिकरात्रेकहे छ।तिन्यात्रात्रात्र्यत्र स्वति 

7

11

不

सन्दर्भ ध रमगतः जोगावामां न्यावसे ॥ धर्मान्यामा ॥ शत श्रायक्रमान्य देव तक्षां वाध्यां चाक्रय्ण खु देमवे स नेत लये ती रोपणो ता महनता यो जुन्त ए सु यु ॥ष्यारंभते॥", हावेजेमवाधातने पंचमुख तेनाज षरं परामान्यवदेव जां गवा नेहे ती तमुतीनमाप गा वारवेनमा वेलोछे ते गुंबो। शांग्कतोमु घ प्रगा छेजां जाजां चतुरस्यते मां एक जाभ्या तेतयंतन्त्र नकानने पांच मुंना कजां ए नुंधि। हा वे मुखनाभ्य एवोस्तरये तारे कांते सब्द सु एति ज जाय नमते ते नेकरीतेनमवासोकानकरतां यदारपाजणा थ पण्ताकतं वो तवं श्रोकथाय छोकतं साकतः तुषवातुं पयानुं मात्रप्रताय उष्मिने व्या तुं छ। वज्र भेद फलां गादासा एकां कते वेला सुषद् य नो सभा ख्रमप्रवातुमात्रमप्रोधियेनुजाण्युरस्रवात गयाचे॥तेषुकारेख्रांमापण्यं यमामुरवेपोतात बालबुजाले। स्मते तजां ग्रिततमाने कर्ने या । भाग होष्रधंमसतग्रस्ता चोधवडेकसीते छ्रांभदेवपा चमावेदती वारतासर्वजां गताहृता पश्चित्र ग्रेक लेखानाने वासारजातपण्डं ध्युत्यारोद्धा वालेषा पण्जंमस्यायतामेकोईबरतेछ्। तथाछांकथा तेपोताताजां ग्वामां तथान्त्रावतं। तेजयुकारे स्नामाजां ण्यामे वनस्य ज्ञां तथ ले करने ते न्या वर्ष श्रीबाज्यस्मानाणमाङ्कातेर्वेजकस्वीदाति जांगोतो उचारकां मकरोते का का वाधा प्रकारता है। दीनारायणेक योगितेण करीने ॥ १० । ब्यांस्माम् तर्भ

ममने ज्ञान मान जा का का माना जा माना या पछ व्यातातुंबालनुपोत्पेकां मनाजां ऐ॥११॥मारेसदाय क्रवस्म वेरताया छेपा चेर्चेरता ता जा एपते व्यवताह्ता। तारपछा घण कका लेखस्तक छेदन कर्षा तारे पांच मातावक्ष न्यभ्या सवीता छोसास ताया। १२॥ त्मतेच तुरवेदता त्मभ्या समां त्रमा वयुतालागा ये रति वा स्वर जेन प एहं धयां नो नायु क्रारतस्वभागमा वर मारामिनी न्यमा ताकारवाल षा। १३।। तेणे करी तेपरमार प्रवेगलो रहा तेताच करमगताते पोचताह्या हा वे पाचमुं मुष्ठन्यारे छे रतकरतार पाछे।।१६०। छास्माते स्वयं असत्य प्रमत्य प्रमत्य षासम्बद्धाया कि त्याया विरुभयत कुलानिक गरीप्रामिहेतास्रोजमानाश्रयस्य प्रयास्य ।।१५ तरेवदात्यवते मात्रवा तेन्त्राज्यधावा त्यां जाय ह्यातेपांचमावेदतातस्ततवन्त्रस्तांगतथयो। ११ मारेचतुरवेदनु झान संघरहां ते हेन न वा संघण्य त्रवरायाने तरव्यु जे प्रणवन्मक्षरातोन्मोहस्मोह उभये मेदपा-चमानेदमा ग्रह्मा द्वा ग्रह्मा स्था । इस निम्ने जी वप्रचिमां रहे गयारे समा। न्यहं छुद्धान पछु १६वा विष्वताव्या ते वस्य स्थातां रच्या ते वस्य स्थर ती तो लेड 10 गतेसम् थान्यानेदारे थाजिज्ञानाथाय छ।।१तानेन्स ष्रमकेहेछे ने तेरला वास्ते त उन्न कर ता वा गति पा पेमोवेदलायथयक राजे जगतमां नारही। हिलाला मिस्तिववाक्षु पणते जयुकारे पालंत संघारका ज भरवाता कांममात्वा ग्यातक्मभ्या से कराते न्या र 西河 विषय में येद नो सक्ष ते प्रणास्य ता गाया। या। रिवा पास्य ता धनेकादाकश्रवणकरेलं जाणा ११॥ तेवाताताजा

सन्त्रम स

करता ता धांममेरहेला धका परम वा से सम्मंस थंम उत्तपंत करेला जां ए। पछते वन नास्य दम वेदन नारातेमाल्यम् निहेतीवर्ग्वतो परपंचन्नो धन्ने युम्मत्व्रण्य छ्रो।युगतेच तुरवेदका रुगावा जिल्ली ते अवने के रमधरम व्यव वालायक का ता बतावेली ज्यते यं यमोतो ज्यादी यर मारधारथ गतः जणावतार। हावते पंचमोते भवभेदना जाले तेवास्ते। सावजायेवाधातुं यं चमुंसार छेदं नकर ताह्वारिस्रीतेपण्कतविभक्तार धवासारहस्त्र मही नजो संघारनमादीनमात्रा व प्रेकस्तो तेषं चुमा नो भर्षरमतक्षजी।रध्। संसारमा जनवस्य वजां होते सरवेन्मांधला गारहे ज्ञां ती जाया चा ज्या ने जाय जोत ज्ञांमानारहे। परपंचस्यारमां पडीते तत्वरुपन्त्रभ मात्रधरशोध्रीन्महंप णामेतीन्मवाताजाव या रांग त्यधानाया।यहभीगवेभोगभोगानेदेउनेवारबेस धवातारहे। इटाजिजावदेइधार एकरेते पंचमारे दतक्षाताचेपरमपद्जवामे तेस्र वतोमोक्ष करंमधेजायीरजात्यारप्रधात्रप्रधात्रप्रान्यप्रमायारप्र कारेथर्ते खेलाउते वास्त्रेश्रास्त्र नाषार नायरेपी करताताधारेलाषुमां लेकामचालासके॥३०॥ न्मतेषरं पराचात्यां वाता वदार यता न्याति काणभोगवे॥ न्यतस्वतः नेहेकरतारेकसोतेन्य तकत्यवाताजातास्थान्म्यवाज्यात्रामत् वेशिकरेकोछतेकारणसाम्बन्धानामप्रम मोन्मतासुक्षमा न्मनत वेरारनेवासे पुरवेरिय अतोते (रेबरेग्रहा। ३२॥सता ३१ म अस्य अस्य जातसार मार्ग्य स्था सता ३१ म का वासा करी धातस्मारमारदेतकञ्जीते पण्यो तामा स्यार्थी

मसप्रधंप्रजसरवसेर्ख्यं कराव्या। ३३॥ न्यान्जन व्यवस्था परिमाराच्या। क्रमते सामान्यक्रमंस वा वस्त्रेसोपीरीपालिमतेकेरलाककालजाबल्यत वपर्मेन्प्रघोर पडारहागाउँ ज्ञातेहे ता पुर चेकेरला क क्रावश्रद्धाः सम्बद्धाः विश्वतिक्रेरताक्षेत्रे लुके छोमानं सारछे इतेषु ऋणयनथा। घ्रभाये तोनुष मकायतेमारे सा बजाये छे दं तकरे लं सांभ सा ये श्रुवे॥ताहारे सांभलो युध्यमका रण तो एजपणसं करेमां खुत तेर तावास्ता । इसासंकरते वासमुताय गुवाते पछे सार छेदं तक राज्या। जच मेश्राप्ता पर परा-चलवासारु वी वसु एए वी कलाकरी जे।।३ शाबु प्रवितक्षक्षं केने तमा पांचमा मुख्ये उचार करा छ तेषोतयु षरताजेयु सारुतयायायायास्त्राभाइपान्मतेतेले षरातेषुना तमारशताकला नाय छा।मारोपुना तोषु भासर जाने वर्ग सता र प्रवाने यां च प्रमुख न्या जपश बाबसातहाष्ट्राश्यकहर्तुतारे खुंसायं चमेम बचा षतावंधपरागया।। पर्यवानुनामात्य देश प्रजापती गामगमनु असंकरामे।। ए॰ साचमेन्सो ध्रयमावाम मारछेदतकराखां।तारेश्र्यो ताजंतएमकेहे छेजंतका विषान्त्राजसुधा। ध्रासु १ समेद तो लोय प्रयोत है उ नेष्यपरां सात एकतारं जतप्रस्ते निमते स्ततका विन्यास्य करातार्ज्यात्र जातात्र विष्ठित्त खितकारीके प्रमोक्षप्रतेतां तकाह्यं तेवखत्यस भवेदतो बोधका मनाकरताह्वा। न्यन्मता बुस्का । भवेषवी। ध्यान्मतेता रेजनते प्रशास्त्र सम्ब विभाराक्ष्यतेन्त्रकरताळ्यात्रकात्रे विभागमणकसर्व हैं। भूति स्वर्ग करता खुड़ा मां जिस वर्ग मा स्वर्ग मा स भे अत्रके हें छे।।जे हें यो ताज कर तासर यही गतीती

न्मासे छे ते हे अधि थाएग वे खंत वादा वह तो न्या का स्व ण्ययंना नेतामतंनव जां णातेयां च माना लक्षा ग्रमात्रचतुरवेदतुसाधात्रां श्री ब्रह्मन्त्रमकरताः गात्रा का जिड़ेन्स्रोय त्या चतुरवेद ढंन स्रतापादन रताक्रिकरतायर ब्रणवकरीतेकर ताड्का । कतो स्रोतका क्षेत्रका ता क्षेत्रका स्वापना बो।बागुरांतकाराकतेम्रांताधर्तिकाले यो ताना नाप गुंस रे म यु ते यु वस कर ता र वा । ध जा ते स्व मे गी ध तातेषण खहम वेदनुं ना सरजंतपण्डं प्रयुद्धे तारा चेचतुरे वेदतुं सांत छुं झाते पदरहुउ उट्याते ले करी ञ्जानेकस्य स्वर्गाय छे ब्रुह्मा ये प्रमेश्वरत्य धंनाकरान्मतासेवासेकन्मातुरताये । प्रधानाहा तेहेतासाहाय तानेसार प्रस्वतारं जंतने पात्पाति तेमण्डंसर्यधारणकरताह्या तेब्र्ंस्नदेवतुंवा वर्षधराते। ५९। खनका दाक्ता यु इनतो उत्तर ए वचनमांन्माण्यो॥तेएकन्मद्देतमेवावेषुद्मकेर यमकहाते सतकादी कता बोल बुंज खंधकरादी प्राप छेस्र तकादीक ते हं सती कां गिस्तां अत्वा ते व दैतन्त्रहं खंस्र व्यायक ते त्र धुउ यक अस्त्रा । अते ते जन्मभ्यास्।।धुर्भागात्करवाताावां तेण्येकरी सुधम बेर नो लक्ष बाउमारे परामा कार माने साम बर्व क्षयण्योताताकांममा वलगारङ्गा ५६॥ दुरावेश परंम वी से सम्मंसवी गान्मांत्य वी से सो मां न्मं सतोन्मत्यते छेनो जेरेने सर वका लाता मन वसो ज्ञानसाम से मारे साम से मारे की मारे की प वास्तुमाहेसस्त्र नकादाकातान्त्राधले इते सार्व तानकेवलकरताच्यवातास्वयद्यास्त्रती अगरीषु६॥न्मने जो ता खुलन्म करता तक्ष वुंध्य

स्व जी

धारण जामया सव से छाट राखा रहा ते खण वनो सम भ्यायत्यारे जे यह रहाने॥ ध्राएक मे कन्म हे तमांता वरा।ते जी ता नो पो त्ये न्यत्य से न्या ने न्या प नकरतार तेहें नो त क्ष तो नमा वेक राते ज्ञां ना भवा प्रभासराष जानी युव्रतातांत थरी स्वतातंत प्रतार्थ प्रवाते सा सन्मातर जुताता रह्या थली एषुका रे एहे वा नरामोराने बास रजंत वयुं। तिन्त्रा रक्षान्य भ्यास पांपराते। तो न्यांन्य जी व तो छ कस्यां मां त ते ने करं मर मरणरहो।६०॥मादेवकाइनेन्सम र एकारहर्ग्नानेळ्ळान तिएकसत्य तामां नाने सर्वेचातवंतकरे छ। पणाव म्रतोन्म करता छे।।६१।।तेहेता प्रकानमा प्रणाजीवन्मंस तोउतपंत्र था या जेहे जुरस्ता तंत्रहाणान पुचक क्षेज्ञ उत्स सरषु छे।। तेहेना वा घे संतता साना हो याद्या एहे उसन तेरेतालां सामाय एका या। एरेड बेद वेता सांत्रीक हें छापण छेले यारेन थनजां स्वान जेन्सा पण्तोस्वरव हेकरताता हिशान्त्रसमात्रमात उपजावेसा छीया। एकारेजावयामा न्यवायस उभये तत्व पदार्थ खारमां पो तानावा प्रत्यामत्मत्व अताद्शीषद्भा पजातेगुरुग्यंमलक्षात्रज्ञाकरेतोहोय पाछाउत यवनिते जो तात्र पत्राचिहेवाजी वन्त्र स्वास्ता सा सुर क पर्गायमाद्रभाषाचेतेतत्वस्वार्मावस्वार् (माने अस्तान्त्रस्य पात्ये कहाने सान कर्यातिक उ लिंद्र स्टां तादिया जंमको ईसहकार एकतगरने व पन्मरवयर वातासमरधा वातो है। तिहसदायसर वकातन्यायमानानावाधायमारो युता६शाकारदाव भेजमन्यायम् उपास्त्र भरवुम्हाकायेतेनगरते विसे किनरपतीपातागारे सन्ममलस्थाराजकरते। लिया होता देव से में बास हका यता धेन्य उपर जिला

रीणुना मेन्द्रा चेतो छेउक राते एक देस्तर खहर बग्न पासे था वर्षे विष्ट्रीय एस हका र तोका यदावसे यायमा वरते। एतं राजामारा व मापा वे। ज्यमे ते संततीषुत्रपरावारहता। जीतेसरवेन्यायेचाते। मकरतांक रतां एक दाव स्वस्त्रहें कार मृत्युका वय म्यो। मारेरा नाए स्वह् का रना प्रत्र ते वो त्या वं अने क जे है। शामारो वायपर दारा च्यामा चाराह तो किय में जे लुंधन्य तेहे हो मेल वेखं त मी वापरो छो। श्रीमारे उच्यमां थी एक नमरव धंन्यनममोते नमा पो।एरले कानुषक्रीतमोभोगवो। नमने नो नान्यायो तो वधु लुटालावासुंगिश्वाएहें बोराजाएलागुजा देन युत्रमेक् तारु।रेयुन्त्रतोसांभलीनेल्थ्या विग्रीयुराम् सवासाम्यो।जिन्भयारकरातेकहार्वे श्रीयमंकह ने पोताना मातुश्राने पुछ्वाला यो त्यारे ते के हें छे रमारोबायतोयभंउत्रहाजडोन्म यतयाँ तेदा बस्ते हत्त्री। अधी एहेन् राजाने के हे जो। यह ते युत्रने राजाय बो ला वभने युद्ध, यारे ते न्यमागा युत्र राजा युते ते हेउ इन्तेवोते छे। ७६। यहे वो हमारा पनता हुता ते ए। परद्रार की मकरीहरो। एप का रेरा मायव च तस्तो मसी तेर धाने ते। अधिह कमकराने स्वरवसह कारना समय लुरीमे गावी। राजावेक हां जे एम नो पात्या सहकारव उत्तर्मो। ज्ली नारे ए छोके रावा ना ना चेटना छे हा वे ए तोसीदावोछे॥यमनेतथासहकारतीन्त्रमस्त्रोतस्वर्षे जेरलंशकातेसरवेलदीलावो॥श्तीसविधन्यमालक प्रणाजछे॥एतोदावोकरतारकोईरसोन्ह्यानारारेतेम वनाधणास्त्रह्या उत्तरकोईरसोन्ह्यानारारेतेम लकेष्णमहकारमण्या है जारमा स्थापन के स्थ बुराबाव्या। यमन्मवाचारी बुन्नस्वर वेगमा बीबे तेजप्रकारेखं समाना-मकरतामावराषाते। द्रि

सः ज्ञा ७ वुन्मयण्नमंस ब्रुंस ना छ। ये॥ त्रम ने छे ते वा रेनधा ध्या १ वृष्ण के हे छे।। पण्ना छ वा चार तां तो नमना दी।। दश प्रकातानिन न्यापण्याच्या । एहे उसद्य र जोन वतेषुचेताषुताउतरजकोईन्माले वही। शासामारेको विवा-चारक यो जन था नमंतरते वा वे जे नमरे नमा पर कांण्याचा । ज्यते न्या पडाउप जा य तारो ता ज कर त क्रांरारे हे छो। तथा ने ना ने ने ने ने ने मारा ए ना है तस्ती प्रातबोधनमं तरमां प्रतातीकरीने नमकर तान्यात्मक प्रयोत्येज छाये।।एहेयाभायनारायानार्भातद्यत्य शिहाछे।।पणन्मापणोन्मात्मायशिक्षतमन करतात थाएतातीज करतातोल्यंस छ। टह्या एप्रकारेल्य ज्ञांत वडोपंदार धने ची सोन्म दका रहाने दश्चर नमा द्वामा रामो ग्रममेतेते परमयन्त्र नेस्वर एज इने जा एका तथा ए त्यामार्ययययम् सम्मान्य मार्था ब्रुस्तिक्षम् द्वात प्रवेतेन्त्रमादीस्तारगुणमारगुणनोधस्योगादता। अरवील पर मगुरुलक्ष्य सकरतागती मोने माना ना एवं। संप्रपुरणसर्वते गतीमां लुटीलीधुं एमजा एउ त्मातेपरमगुरुंचकाबुतीयाजागतामां जांयाजो। ८६ गवेताजकरता तोस्वराजकेवलकराएं सन्मादि भवातास छे। जित्रोतये स्वतस्तुं ध्यस्तं कत्ये करी क्रितेत ब्रुंसां उरच्यारा ते मतागत उद्शच्यक प्रयार वस्त्रात्रवातन्त्रतत्त्रतत्त्राद्याद्याद्भशासक्रतात भावनाजेहेनानासेन्स्रयंडरहाच्यातेहेनभातानाम को नियंगतामां ये रत्या जा यहे एउन्हेंगारिशासकर भुरोरघन्मसतेहेत्रगातीमां वरत्यां जायछे।एय कारे १ करेसा परमपद पंचम वेद समतनुसत्य छे भागिये जे दला नम्बन्द ता पदना नमधीका राति तो भरवेसकातागती ता परामां क्रमानीगयातिकांम

सःग

जांगाचे सरवरेन्स कर तापद प्रकास व्या पद्योध ने तो सन्त ता प्रकास वक एक देखा ना विश्व स्रयण्डपास्त्रका जेनां मरुपगुण्तत्वन्मं सजेमा छो। उस्रानिमना चमन्कार प्रगट पाईने सम्हास जारेव रेखे॥ तारते जणाया तिवा नायतक्ष संदेखाय जेन्मव मारले इते कामकर बुरु तुते करोते। उद्देशियो नामाध मवेखनाक्षत्राकातव्यवगयाते याहादेखातात्र तो हो य पण्जी व ते हे तां म तु र र एक रे छे। र अपि हा वेकाहांन्स्रावातेषुगरसाहायताक्रयवाताहतां मबेछोकरांरमतरमतां हतां तिरवेतता रवेततां वदवा ताम्यां। एट। एरतामां एक छोक यानीमाता थमे अर र सेर्ने नमा नाना जाते ताउ ए। करी पोताना च्यकरानेको अव्यने घेरले देगदी हिल्ली केम ने हा धमांप रउत्मधेलुं तां हा नारबीदाधुं । पर्छन्ता जे दाहा डेपेल छोकरा। द्ररोजरमे तेवा २मता रमत्यम फरी वरव बोग्यापिर शीताहारे प्रेलो छोक रो कहे जे हे ऊर उठारा मनेछो अवो। तेउन्मा जन्मा वाने छा अव। यूण हा वेते कर्डुमातावीतान्दुएकखंजर्जमावातेकेमछो वसे॥ १०९॥ तेषुकारेन मवतार प्रार प्रयास्यारेसा यताकरीने के ताभिक्त साचीदी विते हेतु रक्षण की ताह्वा। ने सदेह १ हतातां हो सुधी संकट ती वार एव र्खें।१०था हावेतेगया पद्योतेमनी सुरतान त्वऊरा जेवायरायरा नियेतंत्र कातात्र राष्ट्र तमा ताजभित्र करेशेरिज्य। हाने ते केई प्रकारे साहा यथे ते ता नार्थे करसे। ज्यते गुणादीकरेनई स्वर जेशे जिता प्रशेष राटमां १० छ। यो तयो तामा था समान्त्र प्रकृतिया वर्षा जावने जेकालेम ले॥१०४॥ते जाहा सुधा जोहे नार्षे

मां अधायस्य ता वा ने ने ना वनेदरमा वे॥ एपुका भारा मात्र राष्ट्र स्वास्त्र तान्त्र पार जरहम हो॥१०८॥ विया रहण क्या या या यो ने को शा युंन हो। न्या ने स भागवतो रूपक्रमरूप रहाता एकदेसान्त्र मायसरूप जुनोने हे ते गुण्ड रेय र स्तुत कादा कत्र य व ता र न्या द्य विकोर्जाण तुंव था। १० ता नमनेकोर् ने नमारामता वसमरणरहानही। सानका दी कर्ने जो फां मड़ो तते मवतार्धरानेकानुहोता १०६ ॥ पछ्या जाकोईनं नामनपरोत्रापण्तेमने स्वस्यमरण्नारह्यां त्मनेर्द्रश्य णासुनकादीक वीना पंचम वेद संसरवण बीज ग्ह विवरेखंनही। १९६०। त्यनेतेतोसकतगतीत्य 11 गरिवेदसमेतना पदनाभुतागयगात्यारे जेका वेथा **i**Js गातउत्तपंत्रथयुं॥१९९९॥ ताहा धानपदार धतत्वस्वार M प्रमामां जीवपुरेला ते हेवा ते ते हेवा ज घद घद करा व नायछ।।९१२॥ इताक्रास्त्रकतान्त्रा हेत्रतस्यकोध पंचा Ja रण्युश्मनाग्रमगतीयास्येस्यवास्य जात्रम्य 17 मनतायोपुक्रण ॥३॥ यां मपुरण ॥ द्यारंभ ते॥ .एह ज़ उ वित्रात्री के त्यव के वित्राते के सम्बन्ध 416 "ताजजत वातान्य्रतंत जावकमीमुक्तमांतकया ある भवेषाशातेश्वस्त्र समवेदगती तर कवाद्र हातस गुव विषामासे न्य्रपाव तथे रहा छ।।एषुकारे तभ्जध 131 मेवासे सर्वते न्याराक्ष करतारे।। शास्त्र वेए के का ले भूम ने सुरम ने र प्रगटक र वा तथा ऋतं क्षेव भित्रतास्त्र सम्बद्धगटकर्ययमञ्ज्ञांसाह विकास सम्बद्धग्राम् सम्बद्धग्राम् सम्बद्धाः विकास सम्बद्धाः सम्बद् त्रव विमारवासार पातातास्त्र मान्य प्राचयन्त्र कार्य स्थाने स्थान माने अना वताहता तमन स्व त्य र माने ना माने हो से ता से भू अविकासत्य स्वात जाता । स्वात करे

तेष्रकारेकर ताकेवसम्यवसेप्रकाचिनोइतेचा चार् रताह्वा। भी ज्यापतापा से थो भक्ता तो नमं सकी मवगमाये एवो मो कला वा मा है, सारमा सामाने वासेसकासतेसाचो द्यस्य मारातरपनानाम लमपुरे । नमनेमार्गा गातीनमनुभव पण्यानो व वसेनर्गा आने ने न्या नस्था नम्य तारमोक त्या य यधायपंचमवेदगतावानानानेना-चतुरवेदमुरः दालोपीतेन्त्रधाकसुबोल्या।तामारतारभाउपणा वडेकरोतेसकतानीसांतपरमारथद्रसावी एव क्रमंत्रते मोक्खुंग्हेबोवी चारकरीते। डीमां हा न्या तहताते मते परवां वता ह्या।ते ब्रांमां उने वारं वे आ वाने सुक्ष्मवेद गतादान्य प्रगटक र ता ह्वा। जे गताने वाय बहु तका वे थे गाथी हुती। १० भी ने गता जनादा ने ते परमग्रहश्रामुबेजाादोहाँ रतिसारु सर्व तो ऋपावा कराने बोल्या।१९॥ते प्रमञ्जाताना पारजो तां मा रामुबधी बर एवना करासको व्यक्तिहो जे एवे जार रवर चमकरा १२॥ नेसरवज्ञ मास्राम्न मानवावरव णे एवोतेनाकतमां कु एछ। जंमरवदोतनी उपमा संस्थाभां नुने । १३॥ न्यने गोलका करा ता राज्य ताम नेनासंभवे निएक एक तावरा वसके हे तां छ लोहे सबेसेने पराक्षारहात ते हेनागता रही के हे बायाहा तेषुकारेते देतासमतां नेकरीतेतेमना जवचंत्र नुमन-प्रायजोर्भे नेश्रामुबेश्रवण्य चेलातेमने क्रायात्रमतुरागनां॥१५॥तहेमानो-मास्तेसारांक्षर् दामध्यां तक हुए। ते सरव गांस गांत निया रत्य सु प्रस्ताराजने का वणकर जो शिव । जे हे सुरम्जी । जो गतामाहान्मद्युताकदेसाव्युतासाक्षातपुती येखेने परमता ग्रममोश्य नाता मांद्रोय ते चात्रपूर्व

400 es

एक राते प्रवण कर वा वर महता से वे सजो॥ १०॥। वयोगाताज कत्यां ए का जनेसार जरहो यतहे यांग्रान्त्रम् वलेतां का वस्रा। न्यनेते युतातालेसे यारेत पद ते जां ए। स्वाधित्र अयुए। क्यि मां त्रमांत जं ततेपण्याताताताक्यांण्यास्यवध्यते॥एहेकोष् त्रश्रवण्कयोत्रोन्स्य पार्महामाचे। श्ली जेम कोई जावतेसरपवीष्ठं रंखकरे छे।।ते हे तुंवा खमन बडे कराते पेलान्मादमाते। २०११त्रवणकरा वतो तथाते त्रायस्य विष्यात्रे स्वरमवेदनानमध्यस्य णमेपरेतो तेतेन्मरप्यम्मजामां तान्यावा एश्राकदाया तेहीय तेयद जीवने प्रमपद्राती प्राप्तरायं मप्तात जांग वा मां न्या वसे। तिहतो तो ये जदे हुते वा पेताद्रस परमेपतानाभरशानाभरपञ्चलंभवधरननहनुभ जनकरेखकातातेन्य्रागिन्यायोची।एषुकारेजेत जाएं ते जां ए ते उभ ये एक जय ला। २३। त्यां ते प्रयं गाया उतरी जर्ने छ जा उते की रचे ने प्रांस परमधां म नेपांमे एहे वो नमया रमहा माध्रव एक यो तो जो ए। रमोसकलजी वन्त्रांस संतस्वजता। २ धीषा मेतश्रव "बर बातो छेमन्मता सेपुनतास हात राखनो हाव ित्तर कवा दन्म तेन्मात्यन्म तेक मता मततीर वीर्षणत्राचितो करताताकरततो मेददेख (बोद्याने हेना नमपारमती उनक्र व्यय पर या पर भगुरुसकरतातीन्ज्याद्वामां साधिते ईनेमाञ्चाछा १६ भ्यत्र वेसाउमां न वात्राध्यात्र निकातेष्ठ वं मके वत भूतानारिशानमस्कारकरताह्वातेषातातीती भेना नारेशानमस्कारकरताहुवात पर्मानी स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा 1 भगानंन सोहं कराक्षे दाच्या त्येते तमाते प्रांप्रगर

श्रु १०

ग्रह्थया प्रतीतेष्य प्रवासे सन्मास्त्राद्व द्वातेन्मता सुक्षम स्वरुपाकार नमनो पंसनां एका नि इस्त नमने ने गरते वाचे परी वसीते सकता ती ता कंट सरवह रहे छ। ने प्रमहंसने न्याह्माधनां जने वेला चेड्सा रुवे॥ इश्रीतारमलपोत्यसुन्यमार्गामनकरता ह्वा। ता जनम्य ता नाधां मस्त्री तद्य दस धां मन्त्रीलं गानेन्यामहामं उदंदिन वा वन्याव नाहुवा विश्वापुष मजेवकां लेकारं जेत पुरस्वता जाका रता सारा किन्द्रा रव उत्तानु वेरागधार ण्करीसुंग्य माहार मे ने तपकरे छ। असे जे हे ते त पकर तां घणा का काल कत्य वी ताग या गिवेतेनारंजनअपतांजिधांमसकलकशां तेते एकथाएकसधाकगतीवंत छ। ३३। ते हेता वाचेत न्मंसवसे छे। तेपरममेद्द्रांतगती जा ए। एवा जसर वर्षा पोतातुंती जरूप न्याने नी जपना नी जेन्यं सनन क्षये ग्यंमगता छे।स्शीमारो ने धांमने बने छ ता जनाय युस्ययाश्वामनाकयी िम्मतेतारं जतत्वीकते वी न्मरस्रमारगेन्मचात्रकन्मा जनते जाराजमात्रे मारहा। १५॥ तेषरमञ्मंसतेषा चयुकार नादेह र लेथाधारणुकरीते नो सक्त कम छाद्बोधमे दुंस ता वोधनान्त्रंगने वास्त्रकहुतुं छे। ३६। तपुकारते धारणकरात्रेषुगररूपनमरुपतत्वरंग्मायुणहे ईनेषरमङ्सदेङ्धाराधनाह्या ३ ब्रीहाचेनार नत्र वसतेकातेपरमहंसतेकालोकातकरतांसमहंत्र क्रयकराक्षेत्रमतं करोतेकां तथेकरेछे। इट्या जिल्ली प्रमदेशव्यमानसाक्षातस्य र वे ते गतारुप मुर्ह तमोकांहांधानमागमंतन्मा स्थानते वारवेक स्थि व्याधामतीक धाममाव्याकी वावात्रेज मार्ज रताष्ठ्रसं र्वज्ञातात्र स्वान्य सार्थित स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य

व्यासार प्रारं प्रया छो।।ई वात्र मते कां रीखंम प्रातंत्र प्रवतात्र विभागित सारो न्यासे न्य पार हरेगा। भूतातित्रमात्रमात्रमात्रमेत्रमेत्रमात्रमां नाण्य मिलिशावेतामते करीन्याज माहाराउपर देन व्यक्त वषुगरधर्ते क्रयाकरी ते द्रयतं तदीश्वा न्यहो के दल वकासहतमाराय्यसार्थ्या न्यामाहा स्तुं त्यमे य र मा ग्रामायतपकरुष्यां तेतमारातपत्रं फलन्मा जेहे मतंत्रतमारुद्रस्वेन प्राप्तत थयुं एउमतेभासे छो। धरु षुकारे तारं जन युरस्वता चा तंती श्रवण्य करी ने पर मसंस्रते मता युते वदे छ। ल्यु यह युरसल्या घु भेदय नतस्त्रसातमात्रां सार्वा हा हा ज्यतं करातमात गितुसमरण्नमायुद्धा। जेन्द्रमायमाकरता तो एक सातेसवीरीएक गामते वा रवेन्य चलव संद्यार्थ भतेषमापणते तान्त्रयस्य साजाताल छुदारछ गतावा गमरजेलाछायो। तेन्स्रवत छ्रालाउतत्वन्स्र सांता भरतातुं चातवं तार्थ धानमा प्रतास जांगा रुख रक्ष गतवरोकरीतेन्महोरान्त्राक्तरा एष्ट्रकारेषुरस 3 3 गरंजनते सक्षमताद्यसम्बाधिकात्यारे ते खुर खतो a १वंमजन्मतावाचा सार्या यो तयो तात्री में लेएकव मतिमार वेरामधारण करीते भजांत करवा बेग ने विष्णायसाउपययसाउँ से सिणाद्यसावी ष्पिकराष्ट्रतासमाध्यां तपां मात्रे वेकरता ताम जनत षिएकागुताधरीधिजीलमहो नेपुरसतारं नता जिस्मेदना जांगाताता छ जा प छ ते ता उ पर फरीते ते मानामात्रातातातात्रा छज्ञा य छत्रनाज्य अस्ति स्वीयक्ष्य स्वायक्ष्य रखं उ भाषाम्यात्यात्याकराना तुपान्य स्ट्राम्या प्रमु भाषाम्य स्ट्राम्या यात्रा याद्राम्य स्ट्राम्य स् Ze भीत्वरम्य स्थाना स्थान 19 भित्र विश्व के से प्रधाना है। या का से क्रम पार आता है। <del>रा-द्रम</del> ११ बोधलक्षनमापताहता। तेता सारां सते तेता जन तावाय नमते नमापतुं स्वरुपनमापा भुरोषुगरसद राकार प्रतातास्रय वनेर्यसानादाधा भामहो नेहे साधांतएकन जारीसकरताके जल ॥ भर्॥ जमहेत जाणुवा सिमित्रोति हे उद्घात । जे मच्याल मा करा माय्णवह प्रकारतांक यंधि॥ पणते सर्वे ग्रंथम न्यभातते वारवे एक समादीरांम न ज ज्या था। ५४ जमकोर्षेषुतीबुतापातायतीवीता व्याज्य ननधरे। तेष्रकारेषरमगुरुचेषणजे जे लोकमें ज मजावो नोभा वदाठी। ५५॥ तेवो ते जावयुते पर प्रद्य य युग्ववोत्ताते तक्षमाण्यो ते एकसात केवत्य बोधहेतुनोज जा पाजी ग प्रकारे सकेल लोक ने वा । अह। असते मुत्यकरादी सार वदी यसे ज्याना ता संभ क वेकां ऐष्रगरी तेन्द्रगर्थ मता जकरता ना भन तातवाईदरसावीते॥४०॥न्मतंतन्त्रपंसातेवाद्रांगत कर्या । ज्यते छे हेत्ये भ्या जंबुदीय तेवा रवे वड् का आर न्मा छ न्मा का ने । थुत्र। नर नार एय ना न्मा छ न्म पार न्मं सां ते नम्ते कषुकारे तक्षा वोधना जाकर तातुं जंनवनावानेवारांगत्यकरताह्वा । ५०गातेसुक्षव एकदेसा साधांतसकरता युकासाकयुकासण स्रधायरंतुं जेके वतन्मचल जेहे ना सुध्यसंक्र ने अधिक शाम सम्बन्ध समित्र सम्बन्ध समित्र सम्बन्ध समित्र रवलरचनाकरी॥हावतेकरेष्ठकारेष्ठ्यमकेश तत्वउपनावी||६१।। ज्यतेकेटलायुकारमान्यस् मन्त्रत्वेत्रत्वेत्रात्र्यात्र्यात्र्येत्रात्र्ये व्यवस्थात्र्ये यांत्र विज्ञान के मान्य विश्व के श्री से से के लेड तथी खां म लजो।।हर।। उमधे सक्तता व्यक्त लक्ष्य को धर्म 

मियण्गा चतुर्था पुत्रकण् ॥स्रमपुरण्॥ पुरस्ते ॥ भ भारति से जारी जी ता जिस्सा या स्थाप सु भवेवार्विकार्दे तन्त्ररचंडन्त्र चलन्त्र रंस र पोत्पे ए का की देत उप अण्य भा व व शता। शाबा राज मांत इत भागंतकरातेहुना। तेन्हे वत्तकरतारतेषुधंमउप त्रवा मिकाई पुरस्तता रामां थी नम्यांत क्रमणुतथाय॥२॥गपुत्कारेन्माफेरअपजणुउपजी भेरता पेर्ता करता राज्य का का का का का का व्या उप ज एउप जाने के टला का का तथ्य छ। कराने। आने हन वियास राते उप ज एयं संकत्य समित त्यां नकरी भाषातेन्स मां ताता रूप एका का का नम है तर पंत्रम गंताधाल्यसं यका ययंता हुता जिसका देनरपा 30 नातां हथाया र मुकात न चात्र पण्नमा या मकरे छ विक्रमयोताता मेल जा यत करे छ। ते फरीयोतात 3 लिजाग्रतथायछ।।५॥तंसकरतायण्यम्यांत 7 भउपज्ञण्यजानेतरू यो जाग्रतथा या अपज्ञण H व्यंकत्यमा के हेवाया है। खंकत्य मुरुपता हु जुड़ 12 वेषसाहावेउपज एयउ यजा ते उपज एते पात्ये जां रू भ विव णकेलमामनेलमचानवा। धयुंये मजां एरां। अनेप गम्बरुपद्यानां एयस पुरण्यशीन्मने तेउपज 可 गित्रमाणात्मेन्ने द्वाति वाज्यव्यता जो ग्यानान्त्र M विषाज देखी नेत थाउप जागिन जा एति। निरुप्रं नरद 加 यक्रमानी जां ए जा एउमचेषुकारे साजा एउसी रत म्बारबेरेतुंधारणकरोगारगाने बेहुयुकारनोहेतुरू 23 भारतेत्र वा उत्या स्था ना स्था मारा स्था में स्था मे स्था में स्था भाषाक्रवेद्धताया जा एवा एवं प्रतिविधाय ने जो इते भारतेव्य यां पिठी तिवधाय ने जो इते भाषात्र वास्त्र वास्त् विवासिक्य माने स्वास्त्र ता ता वा स्वास्त्र विवासिक्य स्वासिक्य स् JA

नर्षेकरानेजो युं॥११॥नेन्य्रकलकाचारमञा णपणुरं जांणा और वितेता वित्रविदेख वातीत थाज ण्वानीमावनारुपुन्मारतजां ण्वी प्रिथाण्टलेषु कार एक उपन एउप जाया छे स्र फुर ए थ्या स्नारे चातात्रास्र जांग्य श्रीक्र शते विश्वारक्ष रताहुवा जेन्मायण्यकाकानममधाकांमवस्मायहमाछोदे कस्रकरवेल रमणुककराहोय तो सारु। १९६० ग्रं र्रियारियारे एटलामली नेभाव उपजातिनी जवा तारेखंधसंकल्पने जाणाने उत्तपंतकरोजाणवे १५॥मध्येत्रेस्रंकत्यते जांगाति योते नम तन वन सेत्र नमभामां तथारणकराते। एकहन्महेत्व जेधा रास्त्र निकरासुंगिर्धात्वीसंकत्परंगुद्धातं कार्नेष योज्यारी त्यारे यो ताना सजाए दुष्टी यो ताना दुन्य ततुं उपराष्ट्रणीजो वाते भावताकारी तियोतातीया मयुकासन्मादी वगते क्ये व जाहोस्त वीनकोती व पकथेतातां हांसध्य दावन १९० । त्यारे नां गोजेन्याप नोषुकास पण्छणोकछे।येखदेयाने भावनाथा तज्ञ ब्राये ब्रेस ब्रुता ताजा करता ताजा एवं ॥ तस्त्रजां ए। इस्टारूप मावना युकास खुल तेवार समसन्तारपेन्या पकथर्शितरेते ते युकासकुर व्रताक होये छाये॥२ जी ते जम स्वरोये प्रकासाक। करेसमेरही तीते ना भारत युकास ते वा रखे सीते क्षत्र व्यानाय के प्रशामियुकारे करतातोष्ठकासते ज्ञासते ज्ञास्य जुरुद् परमतानुका रता एउ सरता युतायादन करे छे। ते एक देन्स करे नाथकातमने का ये ज्यायका माहाद्याका तावी न्थे। १रमित्रे इं जेमनुतिम प्रकासक्य जाएं हावेतरेन जेसमेनमलाकाकाकाण दूरशवडेकरी

1.TA

सःज्य १३

नथाधन जेतला का तेना सन्ते सता सतला एक एक यथांते क्रमनुकामक हाये छाये। प्रथम प्रकात गतायन वास्तारकहो। ३५॥ एथकान्त्र एय गुण्य जो स्वत्यने तम य या। हात्रेर जो गुण्यस्य मन्त्राकं स्वाय दीएक श्रवण वाजासुगंध्री जानातारक्षण विद्यां वाजनता विद् उचारपांचमी सीतउदमध्री सातमी ग्राज न्या वर्ष वासय विमामसवास्त्र जंगीदसमागमंग एदम जोग्रण्यीनमाकंक्षायोधरीशिशीहावेवननोसत्वरण इसतत्व उप जा यां चन्म वस्ता ने पंच नमंत सन्मण एदसजां ग्वां पुषंमञ्जेतसक्रणपंच रिकामन बो बुधान्त्राजान्त्रहं काराचि बुचानापंच सनचाताह एषांच्यत्रां तसकां स्थान वे यां चन्त्र व्यत्ना एक जाग्र बंग्जीस्वनात्राज्ञासं सोहा।चोथन्त्रराज्याचांचप्रा नमुना। एषां चक्रमवस्ता।। द्वीनेषां चक्रमंतस्कर् सत्य प्रणया परसतत्य या हा चेत मा गुण धार काल तत्वथयां। धनी एक सभा वका ती बिजोकां म कालान्त्रानोक्ताक्तंत्रीचोधोक्ताचराये।पंचमी वक्राविते वा परात्रां साममेन्द्रमां ना क्या व मारा नवमोद्देसीदसमोवुधनन्त्रमंतकाली इशी एदसतम यणुषारेष्ठकारेत्रणयण्यहात प्रक्रताथकातेत्र सतत्वधयां क्रिमने प्रक्रता चोजा समा ए कु एक नद्तालकारणाधाचीन्त्रासतत्वधयो। हानेधननी त्वकारण्यातेत्रास्तत्वध्यां तेक द्वायां विष् जेथा यण्डण्याण्याण्याण्या कार हा लाडिसीया खकासंच्यां। नाजानम् चतं च्या हावेएत्र एषि एक एक वादसदसतत्व अवगोधिधीने व्रथमन कारघण्यवच्यातने यंचामात्रा एदस्य वाते यं यमु तमे युथवा ज तम्म ज्ञावा युने भ्रमाका सार्थ

अयुगरिते गाया यथा। २३॥ जिसस् यिता युकासमागु विष्यतिन्यानाति । यद्या यद्या ते जयुकारे युकार भूतिकीय करता ती स्वसा। रेशी ता व्यापकथर्ति मानावावं थयोते हेत्तां मयुकास खंस बतान विश्व ता धका ताता माहात त्य उत्यंत करां । अयुधंमन्मवाकात्ममाहातत्वान्मतेवानुं १कासमाहा तता। त्मने तता जां के अस्तमाहा त्वा लितत्वपुकासन्ध्रमञ्जताधनाध्याभ्यति न क्र षांतारपरे संजमभोगयुती उत्तपंत करोते युण विसंगाते संजमराष्युयुत्ती धवासास्रास्थ्यतेसं भावताथकी तात यहासा त्वउप जाव्यां तिएकश्र ध्या नेथा गर्भसत्वा वा गुज्रात चश्चसत्वा ग्रमतेना गु व्य गत्रमस्या २८। एन एवजा एवं। तारपा छ्व ायर गामचीकर तारे जे र लात त्व व उपे कीई प्रगरर व उच्या मबते तेता स्वारु तो व्यानी स्वांसुग १३ प जा व्यथि पुर माप्राण्याईछाथर्ते ईछाञ्जताजां ग्रायी। हायेरेछा ाथर माधका बोहोते रतत्व उत पंतक्यं ति बे युकारे नाम मायां तेषुकारे भारतभातकहो। देशा प्रधान देशा वरवे निषयभेभारेज तत्वतार मां लंक सी। तारंज तथी व्रति विश्वानितित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्व वक विकारण उत्तयंत्र कंगाउषा प्रधानम्मा तरत्व तत्रे विषय विषय का जाराजा र रातत्वयया एवं नारे माहाकार रातत्वयया एवं विष्यात्र तथातत्व कारण खयां। इया हा वे ए बताव विषाना तत्वकार गां ने ध्यां ति एक स्मातं णिया जाता तत्वकार एवं विद्या। ति एवं प्रमानिक एवं प्रमानिक प्रम प्रमानिक प विश्वारण्या प्रक्रातातत्वकारण्यस्य विश्वारम्य विश्वारम् त्र विषयेन्त्र स्वाज्य माहा तत्वधकायाः कर्मारणथ्ये।।हावयुक्त तनतेधंनजेए-मातंद स्वान्यकारथाथ्यां।हावेण्यक्तती

एवं यथयां।। हाये पं च मात्राते सद्दस्प्सरुपरसने विषय स्वतं त्या न्य हेका र छर्ग था था यो। हा वेद्या जो वकासच ए। धाद सत त्वते। ध्वापंच वं गवस्ता वेषं ग्रमसक्रणययां । ज्ञान संभसक्रणयां चाए करवांतावा ज्ञसंहजाना ज्ञसाता चो खसंतोस पा वष्ठसमता एपां च प्यां धित्रहावे यं च वा वस्तात कषाताविन जी ठदारात्रात्रात्राताताचो धावसंभवं वमासांमांन्य॥ एपंचधेयेक एट्सनत्वयेम्बक सवणधाधयां। धता हा वेना जो त्रम्य यंत्र मणजेते भारसंतत्वभावनायो धर्शाएक आहंत भावना याजासंम। जाजाया सरजंगाईणीयोषानाद्रा। पंचमानमं धतंम ए सन्म चेतारगतमा उचातान ष्रभानवमासुन्य। दस्यमान्य स्वामुत ए नमचंत पण्धारस्ततत्व अयो स्वीए इकारे धंन जे तत्ववा रण्यातेन्त्रासतत्वययां॥ न्यतेमाहातत्वकारप्। धाधन जे प्ययंत्रमताने चोन्ना सतत्वए प्या। ५९ एकारेई छए छुता था बाह्मतेर तंत्र सन्त्रं जतन्त्र कतेती ज्यानेद नेमाहा तत्वए चतुरमतीने धयो। (११कारे र छा ब्रुतात छ। ब्रुका सब्स ब्रुता । जनस नममागवुता।।एनए प्रकात त्वना रमां णुक योता केलां। ५३॥ हा जे तत्व एटलां उप चाच्यां ते हे ता प्राम पानदेखाईतारेकर तारेनका या खुता उत्यंतकरा गीलधीसरवतत्वउपरन्कत्यारूपमावनाकर्। मारे काया या या तत्व अयो पण तत्व में मा पथ अने रियापाय एवा तत्व वया मिर्ग विश्व स्था में स्था में जिल्ला स्था में जिल्ला स्था में स्था में जिल्ला स्था में स्था मे विधाएकरंमतत्वउपजा वेतांपा चासकाव्यत्व विषयाने पडे।। पहा प छे ए का र शस्त्र सम्मन्त्र वर्ष वत्त्र अने सर्वतत्वक्रमने तर्र अचराचर

रचनाकरता। पोत्येण्टलामा प्रमां युधन कारी मुका। एकतोए बकारेन्कायाते समीवंत ब्रतीतीनका या गांग हावेचेरारदेचच्याचर-न्मतंत्रप्रकारतान्मतंक्रारत् साम्राभिहतीकरामुक्तीशुलीतेत्वताकचारकरवा रुषुधंमताज्ञकर तारेचोरासी तक्ष्यपुकार ताचेरार स मतपोता ना नमंतरमे ने युकारे र जना कर वा ने युक रधारणात्र जातावर से जाता विध्यक स्थायक स्थायक तेन्त्रतंकारमाप्यन्त्रधाकातंत्र्यताचुद्वरचचारपु मांग्रातत्वउत पंतवर वामे था संभ वेते वाभागते ई ने इश्रीकराया जुतीपासे थी वे चर्प वनव चना करी व नेथावर जमज्ञामदेववैराटसहीतसर वतान्मतंव रताधार एगमे पोरवता हवा। हर्। पद्यासजीवंनवृत बरोजेर्नोजेरेकोजेवोछांटदेहते येमा प्रस्तु थीपमा ने मोरानांनाका उत्थाते कुं जरसुधा ते या रकरी ने रचन करी।हरू।।षणुतत्वषोरव्यासुमां रोखुगरभानमा तुंन्मलंकारते बारवे युतमां तन्का यात थवाला गी। ते चराचरवेरारदेव नेवारवेनयंति त्वव डेजन्मीय न धरी।त्यारे नाजकर तार खुव्य स साजा एय ऐ जो यु ६थ्राजेसवेधारकविष्णक्रावाकमधाननवथ्यापरी अमंतरमांवा चारीनेवा वेककरे हो। जे युभारे खेलवे ग्रुदेखातुं तथा। द्धावानान्त्रमांगत्ताकारे लोहाका नाकलीसके। मारेन्छा पनास जातान्य सउत्पत्न सनेरे हवारने वारवेषेर ककरावाने रेकेस चेतं तथ नायमध्य निरमपरास्त्रहात्र नायमास्त्र स्थारणाची ताहास्त्रधानचात्री एउन्छत्रमन्त्रां गानेचा तानीनी तरस्रजां श्रधकी। हती क्रास्य उत्यं नकर या नामू में मावनाकर्गितम्मसञ्जतीजाण्यास्य रमीति। हावेति संव्रत्तिथको॥६त्राक्तिस्य स्वजाराक्तिस्य स्व

सःम १ध

तामधुरारधातावाली नमनं तउपजावाते येला चराचर वेगरदेवसमेत ज्यालंका रघाट करामुको ला तेहे मे प्रे विक्रताह्वा। १०। ज्यारे न्यं सद्यार नेवा ये वारा नमां तथयात्यारे जे दला जेतनु ने वारवे वा से सनु त्यन त्य पो त्यांतांते च्यांसतेभासभावताये चेतंत्र थईते। १९।भाग लंकरसरवज्रतमां वासा उथां॥ एपुकारे स्वरवृताक रतारे पोताता खुधसंक ल्य व उपे उप जावा ने ११ श्वानां ता बाधरचनाकरी छे। हावेरववुनासमेनचारासानत प्रतसंकत्ये ता नकर तारेक यंगी १३० तेथका जक्या वे गरस्कातन्त्रनं तवेशरस्व उां कराते चरा चरदेवसमे वसरवेतां वर जगन्मं क्रयी पर नालाका पोतातास कत्यतो। १६॥ वेगयो चतान्य धा चा ते एउन्कत करा ने पोसी।सरवज्ञद्रद्धीवउन्मतंतन्त्रस्यतं न्मतंत्रधारातुंप मण्योखण्कयंज्ञायछ। १५॥हावेतस्वकतकरत तोषुकार ख़िक्स वेद मां यर मणुरु एषुताता वुण्वक रेष्ठे। तितोषार चारवेदतेव ३ रवेषु णवतव ३॥ १६॥ मा रापरंमक्रांसकारतारमाकवानगताद्र रसानाद्रांष णातेनुश्रवणकरेतारेतेगता चराचरदेवाण्यावेरा रविमेत्र जमा खुं सार नुकरत कर ता नुमा त्यं माप आ मां भावे ॥ इता श्रास्त सम्ब्रह्म ता स्वर्ध त ता क्ष्य वो ध पंची केणस्थमनी गांमसनसंकत्यतत्वसरजंतकतनीरोप णनामपंचमोषुळाणसंमषुरण्गाथ्या पुरमनेगः हावे माधाकं का जाता जा मायं चयुकार तामां ता स्मा भागमानवा न्यलंका रतनुने नारवेतत्वभाग पोष भारतीशापंचाक्रणक हासे छा ये।।ते पाताते स्वप्रती भावनासास्त्र कामाग्रमान्याद्याद्याद्याद्यासामास्त्रे नेस्या B भूगानातंतं क्रमलंकारते वास्तवसा छायो। यादां हां され भाष्यमान जा सामाना पार प्रवंभन्य

Z

पणे तो न्यापणा ततुनां पंचा का ए जां ए वा तो जयप नेहेने जो ण्वा तीर्घाहोय तो लगारत्य वंत नमंस्तर वे मलोगाना असमार गतीर वांगान्म नुभ वही। प्रथमधुलदे हथा ता जरुपन्मं सम्बुधी जडचेतं न नात इ वामाची। हा वे तेष्रधं मयुरसमा ज्ञाना पांडभागवा ४॥ आ या बुताये क यंतिकाले तेता पुत्र ताउचा अत बालागी तत्वपोरव्या युमां ली नारे कतारे पा ताता सतारमात्रीध्यारते वीरवे प्रेरपाते वरवतत्व गस्त्रव चेतंनथर्ते ब्रुतवालाग्या तिन्मस्ततार्थारे के र्युकारे चेतंत्रथ यांते तो नमनु क्रमकहा बो। अने कालेन्यंसन्यान्तेनेपंडमेन्द्रंसर्उनेसेहेन्यकमत वनवे-प्रावन वन्या मानप्या नितन्या प्रसामाप्रा कतारेग्यापी तिसां भवी। दीन्सं ससाधेउपजण्यते। सतवासजांण्य एहं न्यत्यतथा सरतत्त्र रतन्यकत रत्य । ण्रतासमे तन्मत्य बामता द्रीयय तान्मा पति उतेवां वेवसाञ्चो।शीतेन्यं सती सजां या भास ए संचातकप्रधं मयुण्वउषर प्रश्नी ते लेक्र्या ते प्रण मण्मारात्वने चैतंनकयंगी १ गीप छे सं जमभोगष् नां त्रण्यक्षमत्व चेतंत्रका यो ज्यंत्र र्घायुताचे। चेतं तक यं तिक हथं। पुर्ध मई छा जुता येता रंजित जातारूपन्मभागंततेचेतंतकयो। तेतारं जतेषा कतने चेतावी नमञ्जाकतने तत्वकारण बेजे।ए न्मानंदतत्वने एकमाहातत्वनेचेतंनकयंगीश्या न्मानदेषुक्रताने चेतंन क्रशाल्मने माहातत्वेष्य तत्वनेचेताळ्यं॥यछेष्रऋताचेश्वरणगुणनेचेत्रते यंशिर३॥रजोगुरोरसञ्माकंक्षायो चेतावशतमी दसकात चेताव्या मत्वगु शेन्मतसक्र गायं य 2003 अवस्तायोषं च १दस्व॥१६॥ने चेतावाराना न 35 नांतत्वत्रास्त चेतंत्र थया। पद्मधंन जेतत्वे चाते। 45

स्म

वा

UJ.

Ų,

\*

न्वणित्रचेतंतकीया। १४॥ घणेपोतपोतातातत्व विमाजा। जारंकार घणेपंच सुनने यंच सा जायेदस व्यतंत्रकयां। १६। नम-यंत्रघ एवस भा वता-येतंत्रक आध्यणतां ता सतत्व चेतं तथ्यां एप्रकारे नम्भं स म्रम्यतंततत्वभागस्यव॥१अरिवीतेरत्याख्य प्राजाधिकांसपोतातासं-चातकद्रष्टाण्चेतंत क्राताह्वा। जो मकोई एक तरपत्र ती लगा हो। व से स १वकां मदार सस्करा १८० हुकोम धता बार में पोतपी गतांकां मकरवासाक चेतंत्र यह बेसे छ। ते युकारे ।कष्मसमासनासाजां ए। सन्यानमा अस्ति सन्यानमा क्रमवडोस्र यवतन्त्र त्यभागत्वीस्र क्रायारही गष-चेतंनपण्डेन समञ्जाति-चेतं ततासरवतत्व मधेना एविमारगा जास मप्रायण नगगुत थर्ने हुरसाया शिम्रामात चेत्रतता धारण्क राये छ। २९॥कसी 8 श्रयाकयांकाताता एवं कारे चेत्रततातुंकपयेत गण्या एमचेत्रत्य दति यां चदे हतत्वती युद्धता स 7 मणिषकाभागमान तत्वमा साम्य गान प्रमाणिष 30 गाता गा। १२२ ॥ इस ये सन्तरता नमहत्त्व स्व को अयं चा जा 100 जिमारीमां त्यवदे इन्संसपु वेस तत्व चेतंत्रकत तीराष Z निमयदम् युक्रणसंमपुरण॥६॥ युग्रंभते॥ गुग्रं ah भीया सकता तत्वता प्रवामां सं। ज्या सना सना सा णवुमाण्ते कहाचे छाचे॥१॥प्रथंमर जोगु एत्रीन्माव भिनारसंघुकारनी ऋगयाक दृश्यो। ते खलदे हते वा स भवनेष्यक्रमाकं क्षायोगी।। देशयोष देनेगावीय 30 विम्यान्य विस्तान्य तायान्य तायान्य विस्तान्य विष्टित्य 120 भूगेनाकाध्यमुकार ता नादसन्ध्रित्रवणकरे।।तेस भरकेने 30 भावाध्ययुकारता नादसळ्ळ जर्गात्रेम सामते ध भारत्रोके इष्टहोयय गाजम उचारकरेतेमसामते ध रावेस्राधन्मा कंक्षातातातासाकां देशधा जिता व से सर् सरार सोभा तुरे खाय ते देव मां यव कमा देव सर्व ४॥तेतासाकायेस्त्रांधउत्यममध्यमगुरुणकरवा मांक्रावेछे। हावेत १र क्षण्या कं क्षाता तो व्यक्ष प्रथ तेत्रे कराच्याच्या वे यार जा एतं रे एतं न्या होदे खा चेशित्रवेक्ष्यं निर्मान्यां के क्षात्र ने ने में के विद्याति मुचेक सते न्मत मध्यण यांत्र यांत्रक राय खें। बाव उचार नाक क्षानातो नाम्पाई दापर तर सना येरस्य दणाने सब्द नो उचार पण बहुं प्रकारे वारं वारं वारं वे हावसात उदमन्माकं क्षाती त्यन्या इंदिश्यर्गिने तनुते म तरवासवेश रहा छे ते तुलाम सीत उदम जे का ले पुस्ते जणांया। आहां वेयाहा जम्माकं सा तीतो हस्त हेंद्रीयरी एषेक अने काया पदार यते वा ज्यापवा तुं हा येथा यहे १वोग्नवेवासायेन्त्रमाकां साताउपस्त इंदिश्यर तिरेतेव रातेमुन्नधातुमाधुनादान्त्रायाधायछे ११५।वेमर वास्त्र सने तन्माकं क्षा तीरादा देविया वितास सतोत्यागकशतेसुबदायकरेछे। कावेगवंतन्त्रप्राव क्षातीतो पायवयाते तत्रकाया। इत ए यत्रागती सपरदेस जजवायचे । रिशाएषुकारे दसक्या कंदा ताईदायोयेकरातेतेहेतावारवेकायायायतेकहा वेन्महं कार घण्यां दस्ततत्व प्रयां तेतुं रूप्।।१३।।त यासहीतवतावाचे। एकप्रथ्वातत्वतो जडवजेतते। तवारवेनाण्डाहाचेतेनतो भागस्वरा रतेवारवेन्त्र जनसार्धी ज्याचे ते इने उदमय एए हो हा ने जनते ते नारवेरुधारनां एउ। वायुत्ते तो नाउउपद्रते धारमार्थ लेशिया ज्यामते वाकास देहते वारवे सम्वदंदा जो न रोमरोममेरहों छे। तेरेना पेटामां सब्द्वा पक्री ध्रताका रवरते छ। १६। तिन्त्राका सनुरुष पंची FII

स-ऋ १६

वित्रं जाण्य का रेपच्य व नाममंसदरबा सा त्रित्रवास्य स्थाय देशा १ व । हा वेयं च मात्रा व विश्वक्रियो। सब्साना तो धुनाक्षेया। श्रवण्ञेका व्यामदायेतसब्द एएन मनो वास कां नने वास वर्गिरातिष्ठा । मारे सब्दने युर्ण्करे छे। रूपमात्रा वतनते वारवे तारस्व वा पण्डे ने तत्वपदार थरेरवे ब्राणियमान्याते ता कत्वा स्वारिती वह वाध्यसुगंधते वाये ।। रसमा जाते रसमा ये रसम्बाद जणाये छ मप्रमाना तेतु चाते वा खेसात उदम जणा यहोता। शाएपकारं पंचमानातपंचज्ञातरं देशते वाचे रहेत क्रातरबारुसंधामे जो एवं चामु तते पं चमात्रा महंकारघणतीतहेतीन्कायाद्रयाउत्रारशाहाचेतत्व गुणक्षपंच व्यवस्थाने पंच त्रमंतस्व ऋणना उत्तप्ता तेतावाभागता क्राया भान्यकहा ये छा या प्रशासन्त्रा क्षयासंकत्यवाकत्यमामावाधपदार्थामाकवा गयान्मते बुजामंत्रता संकत्य ना ता से करा ते घार ग्राणाथशायायतयमाण्यमाण्यमागतयुत्रतारदा H वरष्रगर पत्री जायहाय क्रायं क्रायह का रते पदार धाता छ 系 थि आतुं तो तव जं तक राजु वे छो। यथा वा तते जे च ग्वंतकराते जसाहाय सदारहे छ। तारतमा एमक ह्य याजाचातवतवता घार यांकत्य घारतथाताल स्वानुं।२५॥ये वरंम की या थ से नाइंग्रेसां भत्नो। 和 गतेचेत्र रामस्त्र माने सत्या छते चातवं जो भासका 10 विक्रणा २६॥ जाहारे यह तारे संकत्य न्या छे काया व्यवस्ति व्यायभातिमारा तेताचेतंतवसे मात が不 भूभण नेमा छ। या स्वर वतत्व चे तंत्र धायछ पणते भूभण नेमा छ।। स्वर वतत्व चे तंत्र धायछ पणते भूमजेने समेजेतत्वउपरद्रष्टाकरेतेतेतत्वम 14 मानुष्य प्रतास्त्रामा स्वास्त्र स्वा

7

माखेनमरूपव्रते नित्र प्रकारे मता दाका प्रथम जात् नकरते। १८गातेन नप्रतिस्त कण्यवस्तां नायां ज्याने मकरमा रहे । स्वास्त्र प्रतिस्व स्वास्त्र स स-ग्र eg र-म्रातसक्षण्डं मुलक्षे॥तहेता कायातचातपणन वृत्ते द्वीपुशी जे समे च व र नमं तस्य काण त अकत या था जायनमत्रव्यासमेतपायत्वेसच्चात्रसमेतचाः प्रसंखरे छे।। तेवर वतकोई प्रचे छे जे ॥ इसिन रोष्ठी मारे मे ते उत्तरहमा ये जे मची म वे स्वीरहारे छ एउ पाताते नमचंतपण्डतजरममा जीते के हे छ। नित-चंत नमंत्रसक्तणती पुंचताजां ग्वा। एपु नारेन्मंत्रस ऋण्यं चक्रमकायावग्राहावेपं चन्मवस्तात्रा वाकत्वयेथ्यये॥प्रथंमजाग्रतन्मव्यतातेच्याच्य ३थी संरवर्ष्य पदार घदेरवाय छे ते। ज्यात अवायण कसापदार्थन्यगरकां प्रतीय अस्त महत्व यहे हो तेहे तुंकरीस्त्रमरण्नमानीजायोषु भातिहेतेजागुतन्त्रव स्ताकहाये। हा वेसु पतन्त्र वस्ता ते एक तो व्रथा। मण्यते। ज्यते तन्द्रामे ज्यते का चरने ज चा जा ची त्रअप जावे । १६॥ तेदे वन्येतेते चेहं प्रकारे सुपतुंजा ण्वुं।हावेससोयताजेनमत्यपदार्थसप्रजानेवात जरेपडेतेचारं वारतयेषायुग्निमेन प्रतान जरेपडेज पुरणाचार समुमा माथवारे एख वरते। ज्यम माग्री वया पद्मियोत्ये के हेने मने स्वयन नमा खुतुं पए पु अक्रांमतारहीषुतीणपुकारेषुतमां तथायते समीष

ण्वतेवारवमाहाकार राष्ट्रतारुपदेहवरते छे।ति प्र

तेष्रणयतेष्वेष्ठलो ई कारलेना खारकरतार

FI.

वातुयिनप्रवस्ता तीन्यानां ण्वा। ध्राक्षां वेषं च । अत्रष्ठं ता निवस्ता ते पर मका र एरे इ ते वा खे बर विस्त्रमेत प्रवृतिनकार छो। जियर मकार एवं हप वता अस्य तुर दे हस्युता समा हो माहा का र एस धाने प्राण्करात्राख्या जेजोतारुपतारंजतन्त्रभामा वनाएषी। ध्यातिनप्रमामामाना ताचारदे हमा स्पात ग्रेंबेला रावेते सम्मानाना वेषु कार नो पुबुता पा यतेन्मारं कारसारं कारते बेह्प्रणायं मते वीरवे। इ वित्रेषुण्यता जोगा युडोयुत्वने केन्नभागांत पार्रेष ामुलता नमवधाकाल नमाय तासुधारहो। छ। ४५ वाजुजेबुताने ऋभामांन ए तो पुण्यनुं कारण धरहा रे।तिकांमजाणाया।ताहारेषु ए।वताकाया सेतामुब मात्राधायद्ये।। धर्माते अमारी मध्य नमंत्रस्था जुताते मामातवस्थायच्याय प्रकारक्रसार्गप्रण्य षतेषुताते न्यभामांत्र प्रमतो उत्तरासुत्वरीस्प्रम को छ भावह ने ऋगया था यय ए य ए य ता ना र ए यू ता निमभान एवेहेन ए।। यद्या तो न्यभामां तने छो। गिषासंज्ञहरहेलाचे।।धदातिब्रतासंज्ञहरमभा मतजो छे ते प्रणायतया येव स्वी चीता धोली बाहुर ध्येष्ठ नासा काद्वारते घरतो प्रण वस्तो हेका रखेत वियो रकरतो ताकले । ध्याते उत्तम् ताम्म वस्ताम र नारावगाराव रुप्रवारेन्य वस्तापंचकताम्य भीया था यते कही। ४० ॥ हा वे एयां च न्यवस्ता पंचद अमरेहनेवारको सामा सामारा सामार एने वारको यहार अत्वामाहा का रणित वा रचे उत्तम ता परमकार मिन्रा का रणतवारव उत्तर जाना का का सम्बद्धा वित्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्राध्ययेतां तेइतीकी

वाकहा। हा वेस्वका सघणाया वंस्वन वस्तात वं यां सम्बन्धि एए दस्तत्वध्यां सुत्रातिहेता न्याव यन्म वस्ताता संधा मेथाय छ ते सांभतो। ते हेमा वमसंभसकण्याकहां सधारावस्यातः मसकण तेवारं वार स्वां तीउपने ते नां ण्डा संम नाभाषतानेउपने तेसंमतासंभयन गुजांणः प्रभीसहजयण्डं उपजेते सहजसं मसन्क ण न्नां ण्ड सालप्राउपजीतेसालयंभ सन्त्रण्जाण्यां स्वती सउपजेतेसंतोससंतस्य गण्या पद् । एपुकारेपंच नाक्रीयान्त्रवस्तातेवाखेवयतेते तो एउ।हावेष चवावस्तातान्त्रायाकद्वायाभ्याक्रावेष्ठ तावावस्ताते सारवदानमयस्ताते वारवे पांचेई व र्वरतेने निष्मवस्तात्र निरतीव्यधारां सुधार हावेउदार तेउदासकी स्प्रह प एएं पंचे जावस्तानेवा ध वेवरते॥ते एक एक म्मवस्माता स्पाता चेसे तेवर प वउदासानमाचे ते। ४० गहा वेगला व व धाता तथ य युतायुतीमम बस्तातीय युत्रतीय ते य य मे संधाते थ वास्रेगलीतपण्डंनमावेते॥ह्गाकुंभतेद्खातेसमा ताने एक में के भवस्ता ने वासे वांध को स्व करी व तारवेतेएका जी नाम्मवस्ता उपजेते मा त्यं मताष् तें अप्रेमप्रेषायाद्याद्वाहाने समान ते स्वामान्यप् वंचक्रवस्तातुंरुप्वरततां। पुतातान्यवस्तारे व्यायमभावतुं उपजेते॥६२॥ रायं च व व स्ताते पंच ने संमयना जाना जाना वस्ता वसरे ते संधारी यतेकहा॥६३॥हावेतमागुणनार्सकालनान्त्रय महाये। जुधं मंस्यभावका यते ने ने हे नो ने हे नो ने हे नो ने यु 8 मायत लेषु युता समेतहोय॥६६॥तेउ जजावभाव भावसमेतं वरत्यां जायहो । जाजा राजां जाने तार्थ 8 3 9

सम्ब

अत्यक्तणंद्रदीतत्व जाछेषोतपोताना सांमुतयुम भूगे हे ब्रिस्पाति समान्तं ता व उरो जा ए वो।। त्र अ जो कां मत क्रम वर्षायास्त्र तता कां मता भारत्य आत्यवर विष्धाचाथा क्रमाच्याये कातते को इयेपाता नुंत त्रवह प्रकेउ छते ना हारहे छ ते ते ता जां श पांच माष् १ककात्रसकल अप्रवस्तासमित हेकां लो बंधाह वातावरते संकल्पन्या द्वाने भागापण नारवेते जां गवाषि ग्रेव प्रातका सति जेवा तास्तव रवत्य नोते ते क्रिकाराद्याघ णानु उत्ते जेतमस्य वाथा वधायतत्व ल्योसाद्येसाजयुतामां परास्केत तहा तहते कोई भारतीय ने चारत धारहे तो। ६० गतिनम् चात क गाधारे वगर जां एणा व की ये। वश्वस्थ कंस्य बुंकाय अधायतेयाव्यवत्यनेयात्रसं कार्यस्य सुतारे हेतात भाष्ठी। एवपुरत कालता पहलांको इप्णायव वर णतात्र पाते नां याच्या हा वेस्वात मा नम् तान कालते पोताता जुणंधरमं याता जनमानमां त मांतता पणाम भीषचेपण्यमागात्यसुथसे तनजांगाभ्यतेत्रता गातामले ते जां ए। बो। १२ । हा बेरागस्व कालते स्र भवारयतेवा यसमभा वेयु।ताउप जेछतेनाशाका भागमे। हावेतवमोद्देसकाततेनमतेकजीवतथा शारा वर देसा उप जे छे ते॥ १३॥ हा वेदसा मो बुधा रुप भाष ते जै जै ना तत्व तुं मा पहाँ य ते र खुं युधा पा म भित्रमाचेते॥ १६॥ जांगा यो ग्रुकारेर सकात्वतम भूष्यसम्बद्धाः तहे ता नहाया कही।हा वे न्य चंत भूष्यस्मान्य वा वे भाषा श्रीधाः ते ता नहाया कहीय विवासिकायमा विज्ञान स्वासिकायमा स्वासिकायम 1 a a a भेषान्त्र मन्म्र द्वामा वनात एका एका प्रमान के स्वास्त्र जा ने स्वास्त्र जा ने स्वास्त्र स्वास् भाग्ने ने मुगान रे जी ते जी ते जी ते का ने स्था के ला ने

सम्र

मदकरानां रवे है। कदापायु ब्रुता चाले नोते प्रण्धा कारखबरुषभगतमां तजीवकयं जिया प्रणाखाः न्मावेतारे उरवनुभांत तहाते सुरवते वेता दुरव परे बुसुसी जायते। १८। हाने चोधाताराभावता नांना पु रेकाजकरेतेतो सदमयो चेतारेकस्नासुरुपडेतह तेजां एवा ।। श्रीपांच मीनमंघ तंमभावता तेति सुम्म नारेकसोश्रम कर्याकी ना ना रामें बरले छे। न्याने जा तमेषणुन्ममधो ब उब उार वाचार करे ते जाणवा छ गभा व तालम चेत ते च राचर चुं ह्वादी मां त्यवस्थि कोई येपोतातान्मंतता खब वर्षनी तुनधाने नां श्व दशाहावेस्रातमाउऱ्यारभावताते कस्रकार्यतोत्रा रंभकरेने य च मे वा छा तन्मा वा पंडे तारे उदासापुर थाय ते जां एवं । त्या र मी न्यमा व भावता को र को इतासाचे सते हुं छ। य छ। ते पछ। को इदी व से। कएकमाष्ट्राम्याम्यामकदुरक्षा जायतेजां एवा । हिश्रानवात्र मुन्यभावताते वार्ष रबोलीबोलानेव-चमे मुन्परहाजायने जांपावाल दसक्री नमसामुधमावता नमते कपदा रथा तेकांव कांमकानमहरवार्तरहेथे ते ना एवनी एप्रम रेन्मचंत्रघणंत्रादसभावतातान्त्रायायतेतेना हावेगुत्रणगुणन्यतेत्रणच्याय्यत्वतामुख्यां याथायते करुनये॥ द्यायथं मरजोगु राज्यारे उपजे तारे देविक्रमा द्यायदार धांते वा स्रोमो र उपने हो। प्र दारधं से वा का तवा ते जां ण वो। ८०। हा वे तमो गुणे को धरुप स्वरव परारथ धे जा यते जां श्वामी हा वेसे त्वयुणते स्वां तकन मण्ता देहतत्वन नामो स्वां तेते व जाण्यो ॥ ८८॥ एत्रणयुणन जाना कारा कहा वेत्र

1888 नाम माना नाम ने वाचे था यते सुक्ष कहा थे वार्याप्रयमनमयंत्रवणतेनमञ्ज्ञानायं चवाध्या श्रीवायात्र तेत्र वस्ता उपजाने ते ते वे वारं वारपां मे ने प्रतिपण्याचाटि।।तेमेकेई बेलेउपजानेकेई बेबेलं। भाषाते प्रवृत्ता माल्यं मना परेतेन्त्रमन्यंत खण्व खो मार्शिश वस्वकास घणुसरवतन्त्रनेवाषेसंधामा लेहे। ते एक रा ने स्वराय ना सांधा एक एक ने संधे अप हा प्रात्रासतात प्रातिस्वकासव एवडो जां एडा िशा ना 117 ग्रेमर्कारघणते पंचम तभने स्पभनं न्य पो ता ने रवे हिंचा नाजनको ताप वसाने कोईकोई को जेवा तथा थत शन शाष्रकारेगुणघण् रवरतत्वनाक्रीयाकहा।हावेचत वा ।तिकार एकि निकायामान्य भाग्यदेखाये छे।।दिधायुष AI भ्यातंद्रतत्वकारणजेनां ना वाधावेभावयासाया III तर अध्ययवायते मुक्तमां न करता दे उन्तां तस्त्र कण संयु विसिन्नातर्उपजेतेजां ए। उ।िय्। छीजुमा हात त्व पर भाग्नेदे रूपत्य सन्कण्ने वा समाराता पण्डं र खं छे रंवा निएगात्रभन्नं प्रक्रता तत्वका र ए ने इंदिन ने सं तत्वका ए व दि । अते गुणचण्ययय यतत्व स कति यं चलक् ांग करमते वाचेते जां ए। चो अधंत जेतत्वकार एज म् भागद ने सुख्य प्राप्ता ना उपने ते वा सायादा क न्यान मूत्र भारपाडारे छे जेते धंत जेतत्वकार ण जांगा आर्थिता । जी विकारेच्युरतत्वकारणमाना नाम वाकर् ग्रायेन्स्रम SILA SILA वित्र में राज्य मार्ग मा भागान्य कड़ायालिया च छत्द ए छ । पण्यं च मादे ह ने 承 भित्रभात्य परां बेह नं छे॥ १६६॥ ते समधा करां न्यभाग भित्रभात्य परां बेह नं छे॥ १६६॥ ते समधा करां न्यभाग मानात्वपरां बहुनुछ।। १००॥तन्म वा पाउ

स्त-ग्रह २०

भागन्त्र व्याक्रतमा १९०१॥ एद सभागनो तो पुरस्र ध या । तेमेन्सस्य भागमेषी सहभागधा तु ने जा से सातभा मेल व्यात ऐका रावे खुर संदेह धयो। १००० । जनते एका गयांगतानारी में सब्माने एक राजे ते ते ताडी पुरस्त रूप री। हा ने क्रम न्या का तमा से मारा में था। १० थे। रेग ता मारा मेएकमुक्ताने ऐकि सनेतेत्रा अतारी रूप धर्म हो। पर एक जेरहरो तेमां धानम्य प्रमाय धामा गड प्रस्त ते ने स्रो रवेष्ठको ५०४॥ तेणेक सति अस्त्री तो भी गकर बाभाव नातथाजोवाकरेछे॥एषुकारेदस्वभागमेलवीतेषुरा ततुंकाये।१०५। कावेन्म स्त्री तादे हती नतायाक ही येन ष्ट्रमागन्त्रव्याकतमा ममने बेभागनी रंजनमा एएस मागमेलवीते॥१०६॥तारीतत्रंतारमां एक दुंगितेन्मप भागमां थी सातभागसम्धातुमे मेल व्याते र्गेतोनार नंतनं पद्याष्ट्रमामने एक मागवां मना असे मेल व्यो ॥१०० त्रणेकरातेतोतेतारीतारीरुपपर्राही हा वे बेभागती रंज तमं पा एकभागपीगलाता उत्तमं में लच्चो। १० जाते णे तेना अपुरस्तरूप पर्नम ते एक भागरह यो तेमां पी क्रमरधक्रमरधभागतेत्रतेभगद्रीते विषयम् अनेगार्थ तेशोकरातेन्यस्त्रातेमारुपुरस्तउपर जोवानातिषा गकरवा तो पाय छे ११४ में प्रकारे त्रमञ्जान्य तति तीर्व वताभागतीकाया नाराषुरस्वतेवाचेषायतेकहा रावे एयुका रेई छा युतानां बोहोतेरतत्वभागनी काय वध्यायमागयमां सांस्वायते। १९२॥ हावेषुकासव्हे ब्रुतिशयकातीत माहातत्वना यीभागनी न्यायी तंकहायेषाये॥एकल्म वाकासमाहा त्वन्मते विष नाममाहालाममेन्द्राक्षमस्तमाहात्व॥३३।निमा वाकासतं केषुरक्षावाका सत्रेत्राह्मारेचका विक्रास तेषुण्यक्तं मकण्यण्यकारमहत्वता युक्रता जी

वारिशाग्नी जीधी महत्वने वा खेवन भागएक एक विवाद्यातिना का सामानं दे वाउँ ये। प्रधं मपुर क्षित्रास्वास्त्राम्यास्य स्वतिरेचकत्रोभागकहा वारियारिय कतो आगयुरकते स्वग्रभागे रहमो छो। स्व 204 १६ भक्त व्यापक युरक मेरहपोछे॥ हावेतेरेचक नो 90 गालागतवीकासकरतोज्ञायतंसपुरकपाछ्रल 13 भारधारचाते॥१६॥ एप्रकारेप्ररकते वर्गे प्रवृत्त प्रचे विकत्री कें मकती पायते करि। हा वेरे चकते वार्ष ने ने मवीकास पुरक तो भाग सो हं का र मे ट्या पक पर् 119 मोवे॥११९॥हावेते एवं करीतेरे चकता प्रवृता धार 124 लेगारे वताकले छ। तमने तम्ब वतासना सामात्रमम् HEE गासेरहो।।११८।। ते एते प्रण्य वसो इंकार ते पाछो द्वस मप प्रवासीने पुरक्र भए। या ते छ। त्रमागत ना करती ज नारी गरेतो तथा। ११८ ।। ए प्रकार रच्यक वे वरा रखेपुर कर्ते सु १०७। अबेमागन्तीयाकरे। हार्वक्रमकत्वीरवेपारक 1 नी जाने भवाकास्रतोभाग तेन्छभकते योका रायवं छोतिपो **नेका** भारेष्रवेसकारेते हेते न्यतन्यवाकास तेळ्या 1300 गयतहेनो रेचक छा हेरकारनेना छवा तुंकरे॥१२ श्रेर GIA भण्यकारे प्रशावमाहा तत्व प्रयुत्ता तेवा स्व एक 32 ज "जाताभागतान्त्रायाथायते देखारा। १२२ हार्वस 33488 मिनोग वतानां ज ए यक्ष सत्व प्यां। ते हे ती नती या नया वित्रवाने वारवे न्यादेत था युण मुख्यं तो तानमा 918 षते वारवे का या वरते॥ १२३॥ ते कहा नमते प्रथम भेगाचिक्षम् त्वयुष्यम् सम्मन्त्रवास्य तेषा त्रमा भनेत्रे हेने रोकारायवे छे॥ १४ छ॥ त्रमते ख्राहात च सम नेमा प्रतिस्वास्त्र स्वास्त्र स्वास् जार विस्तान स्ट्रिस्ट तहुना व्यान स्ट्रिस्ट तो अस्तान स्ट्रिस्ट तो अस्तान स्ट्रिस्ट तो स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्र भूकारवरावेछ॥ १२४॥ न्यतकाल ज्यू विशाएष्र

8

4

स-ज्ञ २१ कारेष्ठणयतेयायेनण्यक्षयत्यष्ठतेतेतान्त्राव ही शिरद्ध हा ने काल चक्ष्यत्व तो भाग ना स्वेस्य स्वो रतेवासे पोरवेतो छै। तेन्मत काल तेवा वे कीया रकरावेचे॥१२७॥तहंताकावायुधायांमेतेकाले क कमाधनो जायने योरक नी सन्की पण के मनाध एबहंतीकायातीसक्षपर्भिश्यतीग्रहेतरे च कवीमे चालेते समे काल चक्ष सत्वनाभागवधारे छ तेषु वणित एकउं अकरीते तास्त्र प्रमाउँ छे। १२ सी हा वे एव वाजायुकारती यक्षसत्वती युक्ति थायतेकहारे शवेद्यासातते वासायेषदारपर्या स्थित काम वाकार परनेते मान्यमान्य नां ण अपि इशिन्यनं गते नां नाषु रमाकामकानने वासे तत्वने कांसउप जीने कांस्र थायते जो एउ॥कातते जे जे करम ताकां मउपजा कां मा । १३१। करमतो संघार करतु जा यते जा एउ रबात तत्वपुण् वसमित ऋजवासां द्यादा तारवे छते ष्रकारे-चक्षसत्वतीतकान्की वाक्री १३२॥एसव तत्वतीन्त्रीयाकहातेन्त्रं सत्तीभावतायेक्र रातेनुत ते-माद्यमध्यांतयमध्यायप्रविद्यवाउनदाध्यात्रम् सन्द्रायावीतान्क्रायाबुतास्त्र चतंत्रत्याय्।।न्त्रते याजुतानावेगनाष्ठ्रज्ञतान थाय। १३६॥ ग्रहताम तेन्त्रांसन्मावाने जेतत्वना जेहेवी ना याधार व्रतीमाराषुरसमां नवदे हथारा ने वास्ते पुत्रती १३५॥तेस्र रवन्कायायुतायेवाभागमेस्र वात्रीय मपराचलवाचेछे। ज्यने सजावं नवुना सवीव सकरमतेमा पयुमां ले ॥ १३६॥ व्रधायां मा अतेम म्यभावे छेवरकरावे छे पण्यान्त्रास्त्रता व्रताता अर्थे सजाणचेतनगतीरू यजे ने लेकाया युताराष्ट्रिय १३ अभिगरपचिते चक्षमत्वते चेतावाने तेहे अभि तथासरवतत्वन्यणमाहात्वनान्यास्थ

वभागतापुद्रताकरावेद्या १३ टाए पुकारे मुलन्यने वर्वतत्वताषु जुताता ना पुकारना था या ते भानमां वसंवसज्ञंतन्मधाकारान्मातुरहोयतेहेतेकहा॥ (३०)र्रताष्ट्रास्नकतानमहेत्यक्ष्मबोधयंचाक्रणस्वद ब्राज्यादी चोरासी तत्वभागसाधारण युव्रतीनीरोय प गप्रसम्बंद्रकण्यं मयुरण्यमास् ॥ आद्यारंभते॥ व पुकार कातार काया खुता नार मां एक शने चराचर गरेवन्मा रोख्यां उस्त मेत करता ह्या ते भावभांत असंख्रात्रभाती तो रवेत क्यो। है। है। वे ए हैं वा रवेतक लियाने ते ते तजा तां वदां तब्र स तां ता ये मके हैं छै। नेलातो सरवेतारगुं णते वा संभाता छ। लमनेवस्त एक सहित छ। ते जमहेत ना प्रसान मन्यारे जमाय ण ने भयतारे पछे कर्त वसुक रवुछो। ३॥ एवी अकर्तात्म भावतानम्त्रत्रम्यायवाते ताश्चयपण्के हें छो। जेन्म बिसोन्प्रस्मान्प्रापणन्य देत एक ज छायो। ते उपरां तने ऋष्या दे हते वा उवधाया धात्र सह जदसाये धाय णातेत्वद्रष्टांतस्त्रमत्रवातात्रतेकहेछतेकहायानंस भोर एकपुर सबिजार में कस्तुंकां मधाराते के को नेमलवासारजनगढ़ नेगा खानवासे जनां जलां करना मतमां संकत्यवा चारमां य उति। जिहते मत्व बुङ् त वितंषरपा छत्यर हाते पुरस्य पो तातातादमां नुमा ग भागिया वास्त्र ने वेलाकां मनो ने ना स्वर्धायां रघरमुसाने ज्ञागतगायां तहत्वसङ्जयु अतिथायएहे बुके हे छे।। भारद्र स्टांतन्त्रमकरताभाव DIA. विश्वेष्णुकारेसहेजकर्मजेटलांधेन्मावेतेसर्व A1. नेतर वर कार सार जन्म जाट (न न जने के जिल्ला निहें ते त म्ब्रम्स्य वाम्ब्रह्माना या अवस्था या अवस्था विद्या निहेने ते मेगामानानाना या कता हो या के नी ती ती वरते छे। ती १

स-ऋ

नेनोमेदन्म एएमान्यमालंमनथा। जेन्स्यंसनीभावना सरवतत्ववाभागपुत्र ता वह वा ध्वा या प्रशासिक पोताना संकत्येक शतिनात्वने व्याने वित्रं वां के उत्तर रत्यां जाय छे। एत लगा छ सन्तता ते वी ये पण्णिश तसंकत्यवंत्रेकरातेन्यतंत्रभातीय चतातत्वन सउपजावी नेकरी एयुकारेकार एकर ता रिश न्मनेतेतुंकार्यन्मस्य अययतापणुकरताकेहेवा तेषोत्रापोतातासांमुषपुमांशी एकतारचताव रात्रे करता के हेवा या १२ थी नम ते नमं रात्रे ता ती रमां १ करेवा मां वर्ते ते प्रशास्त्र विम्न ती जकर तास्त्र वीता न्यनेन्यसंतोसकाता नो न्यस्प्त हो। १छ। एयुकारे बेह्मजाती नेकरतवपद्में सामुष्ठन्त्रा छेषाजेषेत्र हार्वेजेघरभुखानेभूमा गलायो। तेते ज वस बेजस्बेहें माय कह्नोरिस् ।। पण्रम जनस्तातुकत्तन जोण्या ज्याख्यां जेतत्वता वरतारी ज्यास वडा पायशे तेव होष्रतक्ष जाहां मातं मतप्रतुषिह् । तां हां परोक्षस्त्र तान्मते तेहेता करेवा रखेल ते के म जां ऐ। ता जए ते वास्त्र अंतपणाव डिम्हांत वर्ति। इथाकां मकी मस्वादमेतत्वकष्णात्रेयंधर्गयातितेन्त्रत्वेष तवाताम्यापणाउतरऽष्टाचेकोईयेतरस्यवात्र्य १८। ज्यतेसरव चराचरभ्यांतारुपमाता वेवाएष जमनुभवराषाभोजान करनारातेणम् तानमवविषे जांगवा ११ वाजे जाव ते युमेश्वरते के व मलेलाजां श्वानिकही चेळा निहें ने देखां तबहु जी ने कार्रक वंतीनारा।।२०॥चतुर तेहे ने लाम एक प्रेने समुद्र संगात्मेचातानी जात्मेम मां वाचे कर्यु देते हैं कार्रते वारीनाचतुर प्राप्ति मां वाचे कर्यु देते हैं कार्तेत्रारामान्यतुरपणानेमजां सारशामारेते से व स्त्रायोताना याचेर का सामरेन्साना ते दावसी

वामाखेतरमेखेतानुं कामकरवागयेला।।२२॥ताहारे वाश्चिसंगातेसांमांनतावातातातामासेवानमासाव वुड्धावां उसका तवारको भराने वाजां पदार प्रयाप विशियाथ्या स्वाने यता ज्या ज्या तारे स्नान करावा विहेतान्स्राम्स्रमां एए स्वताह्वी॥ पण्तेनरतोकर वर्षितास्वादतेतजांणे॥२६भीतेष्रधंमसेवोस्वाव वाचे।।मिर्यातारेयातां छते वारे के देने ज्याकाय 7**3** मारिकोर् मडोछ कस्त्रातितुं बन नमंगा व जीएरवेब्र गणारमेतरमां उछ्र राखा यहा यह यह या ज्यापण याहा पत भाग्उतेपुरसन् वचनसाभताने कुलचं तानायेक हो। २ शाहरूवा मा स्माह मडा ता हु मडायो त या सा लों। सेवो तावाते ते खोरउध माहाय मेराने मुकाछ सीताहारतेत्ररकहने हराउ मते पेड्लुं काङ्गं होततोई लार्त्रयवाताहाबण्डळातकह्यु देशीचेषुकारताबु मतातानर नरता तेन्य हुछ सभावे सह जदसाश्रेष्ट माता तेते ता र वरा वा ने वन चरे पण छेक प्रतान्त्र गणार्थी जेतेकरताताकरततीचतुरर्ताकाम यतेतत्वती ऋगेल को एप तथा। जेकरतारे तत्वरच "अमोलस्वामुगीउपजाचाने करी।हैशालेसरजंत रिश्रमेत्रेत्रीयो क्ष्रणकतान्मत्रोका कताश्राया भाष्यम् तकस्यामां ताञ्जावा सामासं ने । इयासर भूजीवर्ष्यवस्थतत्वता उपास तामेपोताते तथा विषयाने मुलान गाया।या तेन्य्रहें छुं सम्बद्धां व मिना विभावनानीय युतावासिय स्वांत माम्यमा वभावतातीय युतावास्तरीय ते निमाने प्रयोगया। पण्यदार धतीकरताकांण ते नेक्स मिस्यानानामाना वाक्याना वाक्यान वाक्याना वाक्यान व 

9 33 विव

3 SIL न्यार

jq लंब

गरे 包示 र ज

वाम नेज

सत्र ल्याव

るなる निक

39 एक

司部

777

स्रवेत

स**ञ्ग** २३ रजन पण्डेपायु॥३५॥ हाये ते ता जकर ता ता ज जने वसकलभागतमाववागितकायेषुकारेषदार्थन यान्यंगान्यंगयोगचे। ३६५ हावेपर मगुरुवाचेक मताबुबैरागतोन्मद सुनदेस न्या भगा जे छो। ते तो मा देखाउवातानेषुताताउत्यंमणुकार्तानमागलाष् ण्यात्र माते वा चकहासुं। हा वे पुर वे तारं जत रासरवर्यवास्त्रतका दीकासमिततत्व प्रवृतीन तवा चारजां एताहू ता दिती त्रवते जे काले जे हेउजी तेवी गुगती करीते वी भाग की या करता हुता विजा। सुधावा सरजंन पण्डनुत्तां हां सुधा विश्वीय ण तेम करवाकतत्वभागतीक्रीयाक्यमांनावायवा व्यवत्यनेतत्व तक्तीया धर्तावते प्रोचदे हतावा ध्रातिषु ब्रुता पुरुषे ता जडी मारे तत्वते सक्यते। था यो ताताकरताय गुळा स्वरागाया तेस्तायुकारेत व्याईऋतया । छश्रा जेमां हेन्ये तं नन्मं स्व कर ता नोस्क हती। तेहताक त्यामां के सता न्यावी हा वेते कही ज्ञये जो धर्मा जाम कत ता खडा या ली सं या भरे ता छे। थान्स्रगत्यमा शसंचर् जातता वह युकारे ता करें। 5३। तेकत्यके रवे खेते खु-चादे छे एटते सुक्षत्र मधा कतायोपरवातीन्ताया-चारो । प्राजे एये करें यतेने कता तामात्यं मयते । ध्यानमने व्यानातेष् रवाराहोयते जां शे॥ते प्रकारतत्वभागतान्त्रवण इतियोखना रतीयोत्येन उज्जयनी। उस्मिन्यने न तेतो माद्राच्याते कु चाक्त रूपाता स्वता चेतंतर्छी जाणवा ॥ ४६॥ तेलवेकरीते सरवभागि पंचरहेत्रका थायते मालम तापुरे जिसे चेतंतथर्ते खन्नाथर्ति। ध्याहा बेक्टरताक्ष वासे सक्त्रमं से ते कर ता रे भाग का या समे ते क खाउँछि॥तेमोरान्मंस स्वरवधाचेहेलाउयजार्थ

व्यवान्त्राग्ति अवस्तर यना करी न्यते सम्म मण्या स क्रमतागतानानानासे तेनां शाध्यीत्रप्रने वानात्रप्रं स्तालहादार चाते मताप छाताकरे लाते जा चते परंम क्रिर्या अतो जजण्या तेज मारो तेनो न्यवभवज ण्यासारसाधारण सतया तत्वनीसध्यापरमगुकण त्रीयण्करे। हा वितिजसमेजेकां ममेजेउ युत्वते तजां ए। तेन्म धानतन्य तत्यता युव्यतिकरे॥ यय। तेलाधारणभा वेव रतेता रेखु खडु खकरमधयांजा णातेलेक रातेषरम पद्जां णापाम वानुं आ छत्यं स प्रमारामु सक्तल न्याया सजा एउ। एउ। तेजवास्तेव गामात्र म क्रायातातु स्वक्षयं ते ज्यते ता ज करता ते पण्जां ए। वन्त्रमारा धंतस्य वत्त्वभागस्र द्वातकर्व मार्डसरस्वरम् जामरमा ५६। परमगुक्तकरेष तपाताता जुता साज पात राजाते उत्यं मन्त्रमधीक विसंत्रमज्ञतस्यामत्वज्ञा ५५५। जेह्ना पुषु साव इति। नरपने ज्यापतुं ज्याप जमते के बलकर तार देन व्यर 71 प्रमूर्यतत्वयातातान्यायतो व्यायनां ए। वामां 128 भावे॥ सद्द्रातेष्य अगुरुष्ठत्र करुरणस्मागरमाहार निमान्य पांडवरा ने उताहरस का ना व्यान ने ने र ता तत्व M भागकर तारेन्यायण तेन्छा य्याछे। स्थातेयण कार TH भाजमायेलातारेजजणायास्य कलतत्वकरतारेक भातेष्वचनेषरमारष्ठमाने एरतासारुजनकष भाषाना । ईत्र भाषा सन्त्रता त्या है तसक्ष सोध पंची ऋण वी स भाषामानी सम्बद्धा सम्बद्धा स्थापन स्थापन सम्बद्धा । भाषामानी सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्य मान्याम् माह्यामयुर्णा ॥ ध्यामनसनके नत्यं वारीपर भारतामयुका। प्रमामतस्वतकाना नवम् । भारतामयुक्ता। प्रमामतस्वतकाना । नवम् 372 भामतेषरमगुरुभा करूणास्त्रागरमाहाराजनाश्चीमा स-ज्ञ २४

जनसंतसजनत्य तारायुति ज्यातु र युते। हा वे उत्तरम यातत्वभागतुं तीरीपणकरेश्वतं स्वांभलेगाविषुका आंभलतां मेतेज युकारे ताप्रवृती परमार प्रपृत् थाय । एवनकर वाते भावउपजेते मा खेलावधाः वर्तेश्ववणकर आश्री जेहे लेकर नेते ते सगर में जन्म द्या ता जने वल पता ता नाम स्वते में व को धलका व क्रम्तुमां न प्रमां स्ट्राय स्थाय । स्थाय विष् मरजो गुण्ती नमाक क्ष्या यो तीनकाया देशियो तेवा साधारण प्रवृतादेषा उछि॥तेहावेसकंष पतात तना प्राष्ट्रायाया धार्वाक्राया कहा ये तेसां भवजो रावेष्ठधं मकां ने सब्दबहु प्रकार ना स्वां मलाये ने ते जेषुकारे व्यहिनारमें सरवे जनक्या च एक रीये। पण्जेसद्रसाभवेकरीतेपीतातीलागातीदांतती पदकर ताते वासेपोड़ो चेएवां व च तहा यते हेता वाखे सदायनमंत्रसं ऋण्तायोजताकरयोष् तेसुश्रव एकरी उतारेस तसाहास्त्र व्या चारश्रव एकर वास्वारुन्म तंत्र ऋद्य युत्रती रास्वीते सांभ ता अधिक्रमतिवचंत वीना जेन्मकार एहो यते म त्यागमं तथानमं तेकांते पण्यावण्याकर स्थान रुउपास्त्र वाध्यमनी ताया वविश्व दिनियम ते ते कर्म तेनारवेताखापण्यह्ररावन्।।तथावुणाश्रमत जुका भावे प्राताव से से वंतक र उपिया वे जे जे के रमजावते देहन्या छात्र सुधाकर उ॥ तेयाव ए। बार वारकरेतो जकत्यामान्यावे १९ जीप एम व एक ग्रामा अस्तिता तवेराग तार्या एव पदापां मवातुं भ तीती जो शाबी ता खुता तुं सजा शाबी जो श्युता पी थे ११। मारोक्ष्मसजे पोत्ये पोतातीती ती ज बाऊ दुखी पतिते आहा सुधा जे जे भजं नस मरण करो चेति

व्यायदाय धनान्य नुरागनुषा याष्ट्रथा तेमा खेसत मुधार्य रमगुरु व चंतरा व्यक्षोध जे छे।।ते जनाधार्थ टका प्रमध्यप्रतक्षउतमानेकरातेश्रवणकरवे। १३। त्राव 300 गुन्मर यते वेराग तां नभ का व चं नमे ता जन्मता पत 0 स ब्रामायनगरधीसर रचुने क्रमाने वारवे जएका धान व्यारहे॥ पुष्रकार व च नश्रवण कसावा नो पुतायन्त्र 129 क्षितंत्रमायनां एवगे।१५॥जेहेताजोग बहे परमय उव क्षित्रभवाय। नम्ने नमातुर जंनहोयतेने पुगरपुग्र युष मालं म परे था है। हो ने ना न हो रे सु गंध गुरु ए। ना ना जुव नार पुरपादाकतोक राखाति यदार धतो खां धलेवा गुजा त्रामवता तीज न्यां तरमे थाया। ३ शांते स्वतपरमयुक न जो नोगम्रदतीने नेसुगंधीयस्यादीकस्यमरणकरेखं नेत ये ५ प्रमास्त्रवरो।।तेहत्तवयप्रयाययाप्रशास्ताप्रसा तक्र तेस्र राज्ये प्रसेखं ते हे तुं स्व चंत्र मां खे धार एक्र न नी हता तेकरग्रा ने युकारे वश्य इंजिंग वतर तारश्यु व्यादशस्त **IIII** गंधतोवातासकरे छ। १५। तेषुकारेषरप्रगुरुचर श्रव णरवांद उपरजमममनो कमलना सुगंधले छेते साम परकारेवा रह भावस्था धग्रहण्कर वेगा श्वी जेहते नेता मिले प्रेमव से प्रसाद प्राप्त धाया प्रसाद ते ती जरूप स्वतः मकता न्य्रमोद्रम्या प्रमपदार्थन्य तादी पदनो। 5 Z H क्षांध्यपां मनये। २९। पश्चितते -चरा चरव्य यसकल HAI करतकर तातुं खुगंधक ये ज एगया जे हे ते इरगंधी जेक कारे ताल्याचे पण्युकारे न्यतुम बहारे उपासता वार गुणंभाष्यात्रेसे ने जो वामान्छा बेता हा रेडा ए।उ वितेनीकर्शते नाउरक्षणकरवाते सरवजावष्र नुं प्र अमानधायद्याप्रभामता ईकांमता येकरा तेन्मतेका में के माने ते का त्या कर देव त्या माने के ते के ति के तुर्व में में विश्व नित्त त्या कर्द्य एतर सम्बद्ध विश्व के जी है के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद्ध के सम्बद के सम्ब जीवाउंत्यामकराते जा उपायतातत्वयुक्तासम् अद्वेतकता माञ्चाचे नेक्यन चेरेरे तक्यत से पता १४

साजोर्रतेतेमां १२५। जे जे वाभाग ऋग्या युते छे तेवा स यादाकन्त्रायातात्यागक्रयावातेप्रमार्थते व्यक्ते गाववां दियं छे बेहते एक ठांक री न्यांतर भाव चुता पासेतायाने परारथउपरतामायना पोत्यसमेरीने व मछोते उद्धाने वासेस रहेते। एक जाता ता का सतेना प पमान्त्रापनीज बाऊउद्यानांणीने ने सुनांणान यंगे। प ज्यवासोक परमधोता तादेख वा ता गोरिटा ज्यते ए सक्ततानेपण्तेजरुष्टायेदेखीनेन्द्रीलर्बवानुष् मारेराव्यना जरपन्मनेतेना पताये वेहते बीतो कते जा करउप्रशीनमहोन्मस्तंततम् सद्युक्तस्व अवविष्ठ ने देखा सो तो समानं मा अधिस्ववा मां जमा बस्ये ए स्वत सार्वयमगुरुश्रकरणास्नागरनुरुपन्मरवंउमत्ती रूपाजातारे हे अधिशासतते समूच पर मगुरु ते मतारे पर हातरन्त्रान्त्रताप्रमन्त्रताखासेषु खमजावी तेले ते करीते पुरव नारोपण्॥३१। नावानुं ने क युं छे तेपुष्णि पांमसे । त्यहो सकततत्वता ऋउँ या सहात जांगी ना जो बार्ति तापारा समद स्तित समा पुरव जो एए जो। इ.थाम् स्व तेतेषुकारेजी याबीनाती पदारधते पद जीवामांत पर क्रमावे॥हावेषदारपउभयेषुकारमा॥एकतोतलाः अस्य मेत्राध्यास कत्यकरतजा एउ। ज्यते वर्ष तेस्वजाणस्वरुपर्वदक्षेवलक्ररतातुं जेन्द्रमगरीलाः मास्वतिष्ठी। एउभये घरारध जीयावाताती तमिले पेत युमां एकां रेजिलाय वही। तम्बधावेन्स बधारहात एव सामाध्यातमध्यातमाजारणामान्यावे तेमारे या रममेदलक्षाने ज्यादररायाजी बनरनारा सरवे जी भार ३६ जेजायानायुताययकान्यनतायासरवण ११२ कांजसरे॥हायेष्ठथंमताजाउचरान्यरवेशारहेक्सीम मान्य विभेसा।३शान्त्रास्र नेक्स्य नेक्स्य नेक्स्य मान्य वासेसाइआल्मेसनेकाछोकरत च्यतेपरी

त∙ञ्ज २४

वार्यातवेरश्रुतीसमुतीयुमां ए। युक्तन्तो वातुंकसुर वार्षिण विद्यातानुं नो वातुं दसाञ्चा ३०मा विष्यं कारतं नो चुते तु समन त कल्यनु का नस्तरं को ने मार्थियाजीग हतोतेन स्वाधेसं जोग पर्न्यस्य मिं । श्री सम्होन्सायण तो दुगते स्व क प छ। यो। स्त्रा मक्रातकेवल पण्टा व्य र्गमर पे ज छे। ते मारोएक TH क्रिजार्येतो ज्ञायानुं ठारु सुभ छ्ये से।। शादन बहे हरू ने क्ष्यानमान्त्रता जना परंम नमञ्यन्य का छेपाते छ मास्र जोग्सरवज्ञ न्मरवंड वा खेता न्य मरन्म चता छे केन भतितं जो वातुं सं चातक सता सचितं न छे। जासन तर ुस्यामात्रकरतार ब्रुभुन्डं प्रमन्त्र रेख्व छ। छि। ते न्यापुत्री मता १६६१ एएक राने वाने वेक जणाया तिमां क्रमंसने र छ। गरे गोतत्वतुं घतमां नथा यहे।। अर्थ। न्यनको बलकरता तेणे जियेकराष्ट्रांसस्य चेतंत यायका जिसस्य बिगाभासव उद्यो पित्रताते जने युद्ध १ वर्ते यदा र यह रवा ये। ध्याते वा रणीन मेमनायु सायेकां इसियंस र वनेदे रवातो नथा नेते। । भारतिक के तिहे खें का मता ना बने ने ने देखा वा गांना भारवनेसारु पडे छे।। इस्। एस् का रखे क्रात्म समस्य स नत्व ग्राबनानुंदेश्वाराद्यि॥हानेएनोईनेष्रमयुरातंन अने भिष्मचल छेतेन ज जंत कर र उ। छ । हा बे क्ष धा पा पा नारी भाषां क्षाते स्वाउं पाउमु रवेक राजे रवट र सपदा मात निसर्वहरूमनो मयेकोसनुं पातण्करमानुं छ हुन व मार्थ स्वरस्य का या का वा ते कहा ये। एक तो जी मारेष भ्रम्भादीने मधनमाद्या तो इति स्वार्य ते ते हैता मरस्य वे नी भ्रम्भादीने मधनमाद्ये तो इति स्वार्य ये ते ते हैता मरस्य ता वर्ष भ्रम्भावा जो पहेता मरस्यते घटघटपा जी ये हे तार्वा भागाचे होता मरसत घटघट पा जा ना का पहेंची महाना चारसत घटघट पा जा ना ना का पहेंची महाना चार से के मांच चार से का हो तथा है तथा हो तथा है तथा हो तथा है तथा हो तथा हो तथा है तथ पूछी क्षित्राधिसातायने कुना खुकानाः पूछि। वर्षा क्षित्राधिसातायने कुना खुकानाः प्रति ज्ञांक्रमाद्येत्रथा जोवी क्षित्राधिस्य वर्णवन्तानां प्रति ज्ञांक्रमाद्येत्रथा ज्ञानी में भूता उद्देश व व श्वना ना ना यह न जा था । जा धना जा व स्वा देश है ये वे स्वाधना

6

B

R

31

सःग्र २६ मेरसजाण्यो। १९ विचान्य मो क्षारमात न्या छे रवा रेये ने न्यानमो जनमाने रसजाण्यो

।।एबररसदेहमरणतेसारुपुजुताकरी हा बेते तथी देहते सारुज परायता करी ते भोगता ले भुर्॥तारेकेमकर१यतेवानातोदेइत१रवाइनच ले। हा वेते हेन कहा ये जे जे फल रसादी जमा की मले। ते प्रथमसं तन्त्रवतार पुत्र समुद्रती पुत्र मादीका तेर मरपणकरजीपसीरवउन्डास्थास्त्रसे लंसरवमेह ताते।।५५॥न्मध्यातजरेककांते सांभलाजातेतेतुर् वतपुरतायेत्येमतायारायातेन्म प्रमन्तना धवारी एहेउरवाडी|५६||पछेते पुसाद रस प्रतापव को तत्वम गंनामुरववीकास पांमी ने पी ताना पत्ती भएगि भक्ष करवा सारुदो है। अश्रास्मय उगरुष नुद्दा रूपी मुया व ज्ञांतरमा फतेजान चाती सकलक जो ग्वी निरुषक प्रधारहात सिदी लाखाना स्वास्त्र स्वदाव्यदे हु रूपीपीत नं तेरेतासतम्बस्यस्वतास्य नोतरपथीए गंधायते।। धर्धाजाहारेयोते तारमसप्राताये कराये। धाय।पछएकमुम्बाजन्त्रीयासुलभथवामांरे।दिवागित तेन्म्रं सनी उद्धानुं रवांतपातते प्रमयद जे सक्र रताते था वुं जमुगतमात करो। जमको ई प्रतिबुतातारी हो यतिक मतजीवप्राणसमेता द्रापिता नाम्यव जोगमेखवे वर कारे नमसतु मुख्य जे सजाए। उद्याक्य कार लाभ ग्रीस पुर मुषधर्येदलं कलक्षुधान्नदमानुष्ट्यामाहान्मदभुतीन्। धायापणजेरवानपाननावदार प्रमलेते समरप्रीने रातेम्ब्रक्तमातकरेजा प्रमगुरुउपासना येता (द्राप्ति) उद्धारंष सतातंत्रनेवारवे संयोगकारवोते पोतित्र न रपण्यायताहारे जेयुकारेकां मनी वेहें यं तीषुरस्

इक्षा ते उसा ये कर रामे मा वा ध्या वचन भाजारीद्रासिख्ड इस्माचु गुवं बोलवा ता पुन्न तीचा क्षी शवतंमाजे अथा बोल बुंहो बते नगाम जो इने त्या विष्योद्धा न्यतेसतजेन्यापनाकारजनु होयेतेरखः वाल्बु॥ न्य्रकारण वचंत्रकालवावासभावताताध वी ६ आहा वे मं नने पुण वना योग वसे उचार धायते पापितेन्त्रस्ति स्थायसब्द्धारध्याते बात्वेचे॥६व वत्र स्वार प्रधान परमगुरु बोधवरो न्योत्र स्वाते वो न्य त्रागलको बोलवु परेतो उचारणाकर अंद्रजीहावेते मुक्षमवेद न्या छाले इने यं चेई वेदनो न्या स्वास्त्र करवा तेषिजोगेरसमार गाने नमरवंडकरमाना चानवंनमस प्रविशाया। ञ्ची जेकेवल परमगुरु तन जन्म गाई ते कर गायेहयधाय।।पर्यस्य त्यपदार्यं उचार्यं तातीस कातस्तरसंग्रजेते वर ते व्येकसीते॥ १९॥ परमगुरस्म पासेवाचा छे जेले। तजपरमपदमावेता पर्रहा। पात १षते एक सन्कता र जाता न्यांत्य उचा र कदा पानकरे 3 एव भाग्रतेन्त्रतपद्गर्ययुत्रतान्त्रा छे बोबवातुते पण ममेजकोले॥एषुकारतातायेवांगावदेश्याकरत विरतापरार्थका उभयभावते ते वा णापछे भ्रातरत भाषालप्रणातरप्रथनमुके तेषुतीत्रपर्जीण्या विष्ठ अस्रोत उदमन्त्राकं क्षाते जेन्मतर व्याक स्थोतो व ण्यमधायक्यात्वककतत्वना सपुसकरीने तात व्रतमात्र वाचची । । । गुउसकलतत्वभागतु व त्याना ते सम्मास्य चे तत्तता परसे करी ते चाला हा वेसात  सावतेवासेवरतेतेण्ये सामाउपजे छ । अतिव कासविताप्राक्षात्रेव स्रेतवाय अध्यात्रे वेले कां सन वासायमात्राम्य धाराय जाउपजी मासे तेता पस् ववासारसतगुरसंतत्र स्रवां गेष्ट्रम भावे। मतु अंगोन्स्र भेर थये करी ते। दिना जेम प्रतानुता यो पताने मेरेते युकारे ज्ञता कप्रभी मां न गुण्भावना हातसंतपदवारवीर शीम्प्रयवं उरत्यथाई जिंडानिया गुरुतुं जजतं यर उया क्रमनंत पुकार मी ते ने सरवम चुमस्रहात प्रस्प्रसः उपिछितेता स्प्रुस्त प्रताचे परमप दर।दिश्यक्रमत्मव बोधजाणवामांन्यावे।तिबोध श्रतोत्राजकरतान्य्र तादीस्त्राध्यजेते स्वायस्य स्त्रां यं मप्रोध्याति सम्मतादुष्टी सजां एहे तुं। जेते बरा द्तेवाखेषीचेसजाती भेरवडोक रातेते जसपुरमप्र थेन्मवानासयोगथयोजाणबो द्रिय छितेउपरा सष्रसथवातुंती जन्मापता ने कोई येर ख़त न्मतिए जसष्र सकरी तेन्म सदीव्यस्व जाणतनुतिवी सांती अप्रयुरवधाय छे। दिशाएकी सांत्ती प्राप्ततथी वानाने यांहा सधी अनुभवत् क्ष्यत्वा वाना नी नी उषतापते स्थाने जाएतते जा वते जारवं उरहे। ५५ ० थुकारेता पते स्वांती जा गाति कम्ती उन्गग्रतपण्य तांख्यवप्रमाणेतां वावेकग्रहाते मागतारहे वा रावेग्राजञ्जाकंक्षातेन्त्रापवालेवातीयु ब्रतीपरी मायोगाकरमना वह वाध्यथाय छ।। त्य्रीने प्रीती हाथाशिवेतेजहाथे उपचारसेवत संतपरमार्थ ज्ञानकरडो।नेपाराने परमयुन्यनानाक्रमकुन्ड अस्मात्रा के जा चरण ता मेरा बड़ां पछस्पर वत ले अंसमजाण्चरते वासे आवे॥ ८०० ते वेकाणे स्र

स-ग्रम २७

, प्रांत जा स जे छे ते स जा ये तारे ते तो ता जा त्या य ता त्रवंशंत्र ग्रापे छे न्यति हो होते स्रते॥ ८० गासे बानुतो प्रमाप्रयज्ञतभ सातोस्वार ब्रतारु पारु पति छे प भूतेचास्याध्याद्यायेकरातेन्स्रस्त्राभावतास्य मतंत्रथाय छ।। तेहते अमागत्य प्णार् १।। अमजुहा ध अम मतातुंती सांतव्रते तेकहाये। हा वेजेन्स्रस्ता स्राक्ष क्रीबाऊउष्टी हेतुं जेत बुता रूप जेतो हाचु जाण बो। ध्र काषेकरावेवाज प्रसुस्र स्तेसदासर्वकालस्त्रजाण पणवराकरीधरातेरारकेन्मतेतेसकतापासेथा। श्वात्मतंत्र गतीन्त्रं स्वते प्राप्ततथा यते सकता आध गरती। पण्नांसस्वरुपे जाहारे यो तेषार्हे तारो। हिं। सरव्यत्र गति ज्याये छे। हार्वते कर ताथ की जा पतेवेवानुते गता जाजा ग्वा म्मिनन्त्रापतेन्मा पना तरपतुं क्या खउन्नता ते ते ता जन्मा पारिशाभावस्व व ममप्रायकर । रहे उत्तरमात उत्तर विवत क्रमताद । सत्व ग्वितुंजो ग्राचे उपस्त ते व्याये वा राये मुन्तार्थि। ममगुरातेवावेमत्वत्यागन्मवंतेपवत्रत्रथायछ। हावे भक्षणस्वात पांतकसावीताकहा था हो यारिश्रातेम ब्हाचेछाचेनेनां ना वाधमत बोध घणा कका सर्व भमेन्त्रावेलाछेतेतेकायात्यारेसगुंशानारगुंशार्धि 9 भनेक पर्गर्थक मस्ती जुताचे सरवरवा धेतां छ। जा नेतेषरार्थने बासेन प्रेमरारच्छाते रूपारसनीरमल श्रम्नकरे जो जो जो तेता जन्म यती नमत्र में भा वार्ष ने मेस्यरास्य वस्र राधार्य रहते। हावे जासमा उद्देश मामाध्यमसमुन्नकमोरतास्त्रहोत्र प्रवत्यागकरवा विकारोतिकारानेनम् सनाजनायकापक्षरहानथर में सम्बद्धानकप्रसमान्त्रमहतनारसस्य सम्बद्धानेष MI भेगानाज रूपपताजेस्पुरसार्०शाति देतो वक्षवाचेक क्षुधात्रसातान्मा कंक्षातानात्रसे कहां हो । तेन प्रकारे त्वर जामल रस्र वामलन्म स्वाप्ति । वरमामानानाना जंतक मुँहोयतोते वांत वांते करीते न्यम प्रदानिन रवं ३ थाय । ति हते पछेषासुं रवं इति देसमी नमा व उत् डे॥१०३॥न्मतेमतत्वागकर वातुष्णतहेतानारह नमहोजेन्मसतत्वभगम्मतनम् मर्घयोषि रमान्त्रम् तयात्रकरतारतिमध्येयात्रासातीरहेशो जे नातीस जाएका उद्घाएस करता तुंभ जतक यी जेते नपानमञ्जी १०५। परमान्त्रम् तपानकरमारने मय गसां नो रहों।। जेनारम लस्व स्थ छते हेना वा खेवा रजर्व्हा तहा। १०६। मारो जां हां रजद्वीत धान व मलस्त ऋतां जो डेया। एकस्तत स्वरूपमज वजनात्व नेससकयाजाय।१००।।प्रकारे मलमुज्य वनस्ताचेत्र त कंशानी-आर्भिदसंतर्जनष्रते कहुरे। हा लेगमनष्र १ कंक्षातो न्यवसाभसो। है । ए खु खु इस का जमा श्ववतरतारी जीवगमंतकरे छो हा वेते स्वधरम् नेयुव्रतातेयुर्ववाधावन्यत्युमां लोकरवा। १०० व कावाभक्तातारथयात्रा संतदरस्रंत पुद्श्वणात्रेषु ध्वाचर उनां ना युकार ना उत्यं मकर ममे चाल उ न्त्रताउताल उते सामाक्षाका प्रतिहेवा सुनसादेश हैं रावहाधमेन्मावनां वारतागे तेमासे ना सद्यं ना नावेसार हेड।१११।।साधंन नमभ्यासमाजवेसाकी जा।हाचेष्रथं मध्यवतत्वभाग युत्रतामेन असम् गतायेकरशाएशरा रामनकरवामां कंचातना मात्रवस्य मालमहो उपा सता सान वेराग ए जवारी रुक्षवातुंस्रभाग्यनाण्डात्रशास्त्रशास्त्र ।।एएयेक राजेन्स्रार्थः प जंतकरवाजोगथयुंछो।लमायणनेमासेयेगमती चात्रेत्वात्व उते योतात्राई छाताताचे ॥११८॥ त्यहां वी नेर

र २८

तमात्र था वृं।। पछे कां ई भारबो जी जा नम सरण नो न्या ना क्रियातीहमतेमां येथा प्रवास्त स्त्रा ११५॥ प्रश्रमा प्रभ्रमा प्रश्रमा प्रभा प्रश्रमा प्रश्रमा प्रभा प्रभा प्रभा प्रमा प्रभा प्र तप्रमाणियातनां चालनां चोतानुं स्वरुपनेपोचेनेतेन न्नीरपण्पपरे तेन्स्रादेहमायकने वाचना जरुपा ११६ स्रायम् मायगतीर् वाधनां गावामां ने मावा पछे ने मनाइ वित्रपती समस्मा यता यात्रा वित्रा मणा चालव त्रता १९४। ना जस जांग जुता ये उता यसु चालं उते खपा गातीकरताना जांगाने जमपोतानामातानी व्यागल ग्रमांत्रवालकदोऽ । ने गले मा मा मा रा १९ दा ते युकारे ताज्ञ समाय १६ तुपता तर परम्भागे सम्माग्र समाय बा श्रिय पाल्या वनना वास्त्र व हे नहीं ११६मी जेना जरते वाषेपीन्यायेतमाराचाराजागतायेकरातेत्रमतुरप्र मत्राधारणा वजा पर्छएउ ययां तन्वाल वानुं कलपांत ११ शिजीवतेषार अन्यां स्वायार हो।।एर खासा करणज ए कामनगनापरमार्थनेदोस्ताश्रानकरजो क्रानेयां एख्या यात ता व च मे वो देश पर्ने ने। १२९। विश्वामत वे गेण्यकारे परमगुरु सन्कता उपासना गता ऋतुं भव भी ने मात्रे व कहां। एदस र जो गुण्ती नमा के था यो नी जारप्रवातव प्रवासाना जो सात्रे वा सार्वा सार्व सार्वा सार्व सार्वा सार्व सार्वा सार्व सार्वा भिर्रा । ईत्राष्ट्रा रजा गुनादसन्द्रमा कंद्यायो नाउ लटकी कणार्गामामा।।१॥ प्रारंभते॥ः एष्रकारेजांए। नेर्ष भ अवतानात्यामकर वान्मनेस् ध्रम प्रवृतीष्रगरशासक व वित्राची मान १ उद्दी रारवा ने जुत ३ ये ने बुत १ ब्रु वेरा गर्धा मा प्राप्त करते हो हो। या नस्त नका दाक्रमा हो हा व्याप्त क्रम त्री भूगानानानाकहाला। श्रामानानानानाहानाकहाला। श्रामानानाहानाकहाला। श्रामानानाहानाकहाला। श्रामानानाहानाकहाला व त्री भूगानानाहानाहानाकहाला कहाला विश्वासाहाला हो स्वर्धाना का स्वर्धानामा विश्वासाहाला हो स्वर्धानामा विश्वसाहाला हो स्वर्धानामा हो स्वर्धानामा हो स्वर्धानामा वित्र वित्र ने जाने जा कार कर तो जा स्वर्ध कार सरती भू भागम्य प्रमुत उपजा व्या तत्र जिल्ला स्थल दे हैं प

सन्त्र चमुतवानाकोई बाजातत्वतात्वाकरेता एमामाजा अ नेजसमारनेजमाकासएपजतत्वनास्त्रीसर्विद्याणिक्षुत्र तेसमेरहानेकरेत्रस्युष्टकायायं यस्तारहानेय व सेरहीने पायद्ये। क्षानेष्रगरड्स मानपडे द्याहा बेते हैं ज वारवेषं चमानारहा छे तेतेहैं तासाधारण प्रव्रताम मेसमान्यपणा येथाय है।। है। तेमानातीय युतां ते हैं। ने वाचे वसाने का यातुं न्या संवत् वत्र वे वित्र वात्र त तेहतेन चद्यस्य सत्वचारसतातेतास्य का ।। थानकने वासेरहाने युत्रमान चाले छे। हा वेले हे ती प्र वरकायासां भवेगाइमण्डास्य तस्त जंत प्रते हाथात्र जे हेता जोगवजे परमार थ जेती जम्म लिग ये लोपापत थाय। हा वेस व्हें जे सामल वातेन्या दी सत्य पद ने। हो यते हे तेश्रव एक रजीनमते पदार क जी वानमादी व ताते कतने तात्येतं क्रमते स्युसकर वे। ते क्रमता दीप ने प्रसरोएशी जनतात्वप्रसतोत्या गव्हरी ते ज्यतेषा रस्तुज्ञ यां तक्रव्युस्कार्जा गुनित्र क्रित्र यरं मुस्रा ताकेग्रहणकरवो।१९॥एप्रकारेमानाजोग सकर एग्रहण्यक्यमान्स्रावे छे।मान्त्राव्यक्तावा व्हें संकलरंदीयोयणविकक्ताता वेगाश्याम वेख्वां सरवां जिल्लामा ना व डो ने ते देशियो ते वा स्थि सपण्रं कायाक रवाकं क्राव्यु छो। १ साय च वास्य म रवाजवसे छे तेएक एक पाताता सजाता ते गुर्ण रेखाते जंभसुर्थता तेज प्रकारते ने जन्म तेज प्रकारते वि बारंषते देखे। १ छ। दावेवा साउपते पर मार व वा ची रप बास बाते ऋग्याधारा जेहे कही नमने उपास ती गतिज्ञांत एत्र शो यनुं रुपदे रवा उप छे। १५।। एचे त्यह की घणानां इसतत्वज्ञेषं चमुतनेषचमात्रा नमनेरजी

भूमकंक्षायो॥ १६॥ एसएसम्बानेसपुरायेकायासम प्राणुलते वासं प्राटधाय छे पण ते हे तामां धाउपर व्रतस्कण्डिय्रहां छोलि जंमन्याज्ञान त्वनेकरे छेते। विक्रीयाकरीजाया।१९॥ इताष्ट्रीक्रार्याययम माम्रतेपच्छतती उत्तर की यादरसनु युक्तण ॥ ६॥ द्वात विभागार। यारभते।।: हावेतेन्त्रतस्रकण्यचन्त्रतेन्त्र अप्रमापंच एदससत्व गुण्धा तत्व ययां। ते हे तु ख्रमम वेत्रमाधारणप्रयमदेरवाउउदाधाः ।। हा वेतेमायुषम उत मायान्मतस्य णाता कहायो जेहे कायाय से परम ताले तेरेमां परमारथ का जनसामस्य कत्य करवी व पानिसायेको मताता । श्री सकत्यने उपनिहेते याव श्यकरीतेभोगीतां रववा। एरते मातसंकत्यकरेते क गेतियासाये जुताजुत उन्हें। धा जे युषा म न्या कंश्ना पर नेक्षायाकहा छ मात्रा सहे ब्रुतमां त ते प्रमांण मंत्रता ग्रामकत्यथयायातातायायायायामारकहुरं तेयासंक्रम गंध हराने पर्छ इंदि या ने ज्या ज्ञा कर बन निका या पुता वेता संभित्यजोणी सन्क्रता जा या था एएक मे कती में विधाय वाभावना यो साय माय संकट्य मत कर से इंड्रीयो तो हेतु मा विवानिवयवतमत नो धरमदेखा ने। अमाचारव अ वितेमताको स्वत या स्व एहं बुधा नुं हो। सभावाव में भिषेषाने ताश्चेत संकत्य उठता वारमेत करवाज त्र वित्र भार धनोसंकत्यकरेतोतेन्छायाव क्षिण्ये सम्बद्धाः ययो। तेया नामाश्ये करातेन त्र भागात्र के स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास् त्र स्वास्त्र स्वास् भित्र का का का का का के कि हो। हा वेते तो तत म्यारेना । त्रिमानस्य स्थायत् व्याप्त स्थायत् व्याप्त स्थायत् व्याप्त स्थायत् व्याप्त स्थायत् व्याप्त स्थायत् व भाषाम्यायस्य स्थायत् स मा विश्वास्थायन्यात्रस्य या या मन्त्र

सन्त्र कबो वलभजनमे सत्यन्त्रन याध्ययणायावने । ११ हा ३० वासावेष्रव्रतावस्य निमान तु समाधानपामे छे। हा वेतनचान प एउन साचेम मलामी। मंतरबार की ईका ते तारारवडा १३ सत मभक्ता तांत बोध वेरागादीक प्रमन्त्र घारलक्ष्यो समुद्रणते वाचे व्यवनातुं चातवा वाकरी तेन चीता उ।१३॥तारेएमकेहेसोजेतन्य नतथ्या यद्यी का वेषु रपरमारथतीन्तायात युद्धताथाय। तित्रंसामेले तेषुतातानुं रुषदे खाडा ये। १६६। ते हे पुकारे ना स जीवपदार्थ कुमां न करीते ते ते जे का लेन चीता तात्रवर्द्धायातत्वतुं युतमात्। १५। युतावानी सम नपांमेछे तेन प्रकार परमार पत्रोगना पुत्र तापो हतुं प्राताचेकरातेलेई नितत्वभागतातातानी १ श्राप्त तानाजन्मं तरमां तेवा पद्यतेन्म नुं भ न जाहारेना ग्रेन भा नेतारे समाधांत्र थायते। १०। नारंनारते। जन्तनियारयेष्ठास्यायतेजन्यान्तेयास्यमि व प्रशासिक संतिभोग खां १९८। हा वेते ताचा पण्डंक चात्रभाग जाणाते पछ्तत्वभाग सदाकाल जतंते वासे युताच वागेरियीत होतर तो नीज स्थ वी न्म मध्रंत-चातता वश्रो नांहा सुधा स्वरुपते तथ्रो थयते नाजकरता। २०॥ सरव्य तेतु पणताद्रताथु हांसुधीतचांतकरायाथाउंतही ज्यते प्रसारका वरीतेन्त्रभ्यासतेवाचे सदायन्त्राद्रीमध्यातत्र २९१एष्रकारेन्त्रतंत्रमेकसीतेषुत्रतान्त्रतस्त्रत्। स वसितेन्त्रभ्यासतेवाचे सदायन्त्रादीमध्यांत्रव्रतीत सम्द्रणतानाक्रत्वाण्यनस्तन्त्राचा नानात्रहें। वातेन्त्रसरुपकोईकातेन्त्रसरुकुतनाथुउ।सत्रथे मनीतायरार्धमावतायेत्रतीन्त्रमनुक्त थायति हैं वितेत्रोहिते। १ श्रीनिचारक्ष्यिनाक्तरावीसंत्रि

विद्वा । १४।। तारे ये मके हे सो जे न्यां तस्य प्रण्याता विरक्ष यान पान ते हैं तुंस्ना भरता ने न न ने मंस व्यापणातेन्यापनाड्यासनां णाताथसायश्रव्या ग्रमपुरु बीधजां गाउ॥पछा पदार यन्त्रेया तरवाने जा भी जी संभवेते वी यो जता करी ने वेय चना करव क्षात्रज्ञाणपण्डतेन्त्रमंतसन्क्रणचानानुंतानजाणा वेज्ञतसक्त एसमेत जो एवा वुं जो एवं पण्रुं प्रातान वाधातप्रवकाल वसे छे॥२ आते जस्तु जोर्ग जुत्रात असरमेवा चार जांगा ज्वा ॥ हावेषु धं मन्मवस्त तंत्रधाष्टांन पण्रतेपांचन्त्रंतस्यक्रणानेचासक्रीरट व्यंतसन्कणपं चेर्न्यवस्तानुं व्यतमातमान्यभा यवसीनेकरा वेछ। तेषां चता युकार मुख्यभ्यव मादेषा साथि। त्यां ते ता अद्देशवा सो छे।। हा वेबा जो गित्रोक्षत्र से दसंतस्य ज्ञातते दूस्या वत्या जे चक्ष स्व अम्बस्ता ने च च ल कर र र ते व्रता वे छ। ३ व ते यु गरपचे रिमयस्तामे युव्यता सदाय चाले छो हा वते भ्रमत्वतायुव्यतीयान्त्रम् वस्तात्वाय देखाऽ१य विष्माणेस्वर वश्यवस्ता तेवा से जा अध्याप्रथमजा वितेवासे हलण्चलण्करवालागितेन्त्रात्राच्य बितिक्रीयाजोणवी।।कद्मकार्जाकाजवीनानुं मानषायते। इस्ति तारप्रेशकार्यकारणन्त्र विवासामाने अग्रमांत नक्ष्यसत्वजांगा उ जेहेचा मामाबना संग्रम् खतेते।। ३३। ह्मा खेतार पराग्रमंत वित्रोतिताराधकरीतेजागुतन्त्रवस्तातीतयेकरी भाषायस्थरहते काल चक्ष सत्त्व वानाः । भाषायकारेउतपता चाताते कातपांचेरित्रमवस्ताते भाष्यकारेउतपता घाताते क्रितपाचर कार्या भाष्यकार्यतस्माण्या घाया छ। तित्रोक्रमत्भव भाष्यम्भागममे पामग्रद्धेया यहारता रक्छा छ।

तायते एक जा वस्ताना उत्तर महें द्वा उत्ये ते प्रथा है से हिंदी हैं से हैं से हिंदी हैं से हैं से हिंदी हैं से हैं से हिंदी हैं से हैं से हिंदी हैं से हैं से हैं से हिंदी हैं से हैं से हिंदी हैं से हिंदी हैं से हिंदी हैं से निर्धा उद्दान्त्रमञ्जूर जाराज्य संमका नतं दी सर जेन का न नाध्यान्यतस्य युते बुधा युवाय ते वाय वाता उपने त तेजाण्युं। तारपाचेसकलकाचारलातहायत्यारे प ताने तयं तप एए ज्याचे ते हिटी तुरी या जम वस्ता नी प बुती जो एवा निवयव ने एक पुणायं मञ्चास ने वर्षे व जलकारहे। हाये जा यत तत्र ने जा यत देते तत्र दाती विश्व नसमेसंधानाष्ट्रवात्रवतेन ने मन्य वस्तातेवात तमकाषुरा।जायमनेनकामग्रापए ६५वे सम्पर्ध धंधाताताय ब्रताय र छ।।।। जाते स्रात्य सुन्याका।। प सरवोकाईनाग्रतपण्छे।तिकालेषुण्यतापारभाव उत् ना थर् जायते उनम्जनि क्योल य व र्वा ७ १ । ए युका रेसुध हा नाग्रतमेचतुरन्त्रयस्तान्मेक्रयवत्रवतेवा चारवान वासारकही। रावेसप्रतते वासे जाग्रतते। धर्यापदार स घारदेखवामां भावेति भाते मुख्य सुध्रतेका रही। भ सेयदारयमादा बुहो यते सामान्याचे । द्याय रते व रहे ध्रुचोरतां यात्वांतेन्द्रमाद्ये। ध्रुधानाग्रतथर् तेनार्थेत क हारे माहोय ते खुध्यस्य प्राणित्य युग्यदार थ वा साम जेत्यांमेतेससी माजो गया। ७६। क्यतेतार पर्यात्र याते पदार थरे रवाचे ते हेता वा यो हेत्त ता जा जा विष जायते स्वांतीयां मेतीध्यां मरजंतय एहं जो पर्ध यतो वलायदार पउपरमोहे छं सन्सो हा मेरे हे छे ते ते के वयांमे तेसमेतवेला सुष्ठमेत्राचाजांग्व ॥ वि हावसुष्रतोष्ठ्रमंत्रत्रमेतस्मो पतानान्मा सुष्ठिमे मोमे संधाने वासे उन मुनिनां ए। वा निवस्व तसी नहीं छिश्रातेससो प्रतापणानहाते का ते हा बेलप्रते स षदारपरस्य भाषतिने ना रा ने वा ते हा बेलप्रते से नंताममलससो हो॥ धना चिरात्से प्रतासि वे नुनाममुलससोहा॥६८॥६८।।हाचेतेससोसामासामास्त्रपूर्व

मधमानाका सुप्रसमान पयुं तेसलो पतामेस प्रात्वंतवताताधियो हा वेकोईता यामे वरता उत्ते रितपुछीयतीके हमने मालमनहा येमके हेये वा पुष् अस्त्रीयतामेषाया। ४वी तेनाग्रत जोणवी।।हावेन्स्र प्रान्ताका सुपन तो छ ने ते ता बा स्प्रता वा बुता पर्ज गतित्रायाससो प्राप्त जांण बा। ५१॥ हा बेन्स्र २५ मान्त मासुप्रसय योगयं जे। तमने तुरीया तमयस्तानी तमा त्र प्रवेससंधाचे॥तसंधानेवावावादासः व वससो मु अमे उन मुन उन्नो एवा ने वे ले मुकतो यु एव रव वारकरतो बाह्मयंना कले छै। ए चका रेससो सासा ए पंचमवस्ता वरते ते कहा ये छो। ५३॥ हा वेते तुरायां त वि असे तए अभयेन्स्र वस्ता प्रणायं मता ना जा जे व्या जे व्या ते व ध ।योजाग्रतमे रमञ्चलकास्यानास्यानास्यानस्यम का गणतमें चालते पावनसंकलवमान्त्र व्यक्त युता व्य र भमापतामें तेतो युण्य द्यारकरतो युवसे छ। स्थात विष्णंकारन्त्रतस्वकणतेवस्वतजागुतस्रतमास्य वाष्ट्रा-अने तुरायाने वेलाये सेतो छकता बहुधार त भरते चाले। ४६। कारण तान ऋवस्ता ने तीतन्त्र त स्यासान्या सान्या साम्या साम्य रूप विनास प्राप्त संभायाची छो। स्थाने स्यां नेयुग्त ष्या नेपेक्ष सम्बेक बंध तीय तावा तव खेळाले तामुकत जि भाषामात्य-यत्वाने रावि छ। स्वातारे एम ति भोसोने पा छल बेहु न्यवस्तानुं नारोपणक युंतारे भने प्रश्वचारधाययमक्रांत्ररायातुंक्रतमात में भेते हमणा १५५ विह छोरकरे येमके मछे तारेण तो भनगच्या सामा युधानतुरायानामा सामानं य मिन्री विभित्रकारे द्वावाध्य मुख्या द्वा त्या ने हे TATA STATE भाग वार्यकार द्वावाध्य मुख्या विश्व के के हैं। विश्व के व

ग्रते ते क हा वे दिशी जे वन में समया प्रकार कर ने जाता है। खुत तक शवायुः सहस्र द्वीरक शते चात्र वात्वा गाचित्र गुजना त्या गव सुरमधारकरान कराजमंग्रेतीहर।। जाने का ततिसमे जुणवलमानुकाराज्या जिस्सम्बद्धानिस्य समाधानिस्य समाधानिस्य प्रक्षा वसमाधानिस्य समाधानिस्य समाधानिस्य समाधानिस्य 32 रष्ठणवद्योरताक सद्धियाद्ये तिके मध्यो तारे मेषुणायमरे इते वाचे चतं वप एउं अस्य न्या वेशे वर णुकरीतेसरीरतीताडीयोवीकासपामित्रजायचे तर मासेखं समघोरकरती चालेते चेला तुरीया मेजा। ज्ते।निहेनुकार ए।जाग्रमक्षव स्तातोता अथोति निवे रधमुवेरहाचे॥६५॥तेलेकसतेताउनयोउरधमा वाकासपामास्मासम्बन्धानासम्बन्धाना रेतुरश्वामे जागृत ब्रुतती जां ए। वंगीद्धी हा वे जेसं ता घोरकरेन्मने मुकता व्यान घोर छते ते समेत्र मेखसो प्राचरतती जां ग्वा द्रिय निरुद्ध का र ग्राज्य रकातसकणतेससोद्गी एदोतुंता उनता न्याधोभाग सेला हो। ते लेकरा ते उरधाना में बेन्द्रा तो ह्यो र धा इत्।त्रिसंसोद्याण्या। हाचेतुर्यथातान्यतन्त्रते नम्नीनान्माद्यस्थ्यव्रतवानावेला। एउभयेष् वस्ते संधामे उत्स्वीतुरायामे ज्ञतना गरी तेहेतंकारणन्मरध्यस्यवेहनाडायान्मतान्त्रां रतेः जागृत व्यक्षितेमासेसुक्षमवरते एष्ट्रकारेन्मवस् स्क पांचतरम्यासहीतकहा। १००॥ हार्वडनस्तातेवी माम यांचेई खहात खते ते कहा यो जिलेह अशाय जागूत में के त्यातताषु व्रताहायते समावत समात्ययण विश्वते स्वता समात्ययण विश्वते स्वता समात्ययण विश्वते स्वता स्वता स्वता स्व हायसाधारण प्रवृत्ता सम्बद्धा स्वते ते जा गावी स्वते कही। त्रितहे से लेखे कि स्वते स्व

न Q.

A 杨

FIO

युंगि कह

प्रच रहा

38 हत.

कहा। जिन्हें में शेव हें ते ता स्व मान्य चार की कार कार एउगा करता चाले कि हो के हैं सो तार ते ते साभ लंडी ने मा

व्यवस्तानो मुलतुरायाने त्रमं ते॥ त्रमनेपा प्रतिष्ठ विहेत्र ते हेत् कहुरां। श्री सो हं कार बाह्य शकति विकोशिकात चक्ष्मसत्वष्रधात चसे च्या तेत क्षयास र ते तारी य एक चुंगि शाते बाहे र का द वा ती भा जाकालचस्य स्वताचीमारोडमं ये समंधे धारकी असद प्रण वते वास्तियाय छो। चान्मतजेन्मवस्ता वर्षित्रवासे ब्रुत ते दे हैं ते वयवत्य जा ग्रुत रे हे खे मारे क्षेकां ए प्रमुता रश्वरता जा गुतता जा जां एवं वी । मधोना उन्हें धंन पामा काल्यने उर्धना उनवनका स मातथर्छे ते एवं करानमुकता घारकरेप्रणा र्वाघ समात एउमयमययकारं उनम्नानानारोप एक पीपावते उनम् नागाउद्रमा जनात्य चतुर चुते छत मार्था। श्रीमाने एकदोसास छोरक यानि नासुनेन हिंव प्राप्त बचारकरतो ता कले एमा प्रसलेता मुकता ष्वयस्त्र ने युत्रमान या यहा ६० निसमे उनमे नामे त ाय विष्रुततीजो ए की नारपद्यास्वर वततुं वो मदा 3 विभाग्यय कर उधायते यु यु ता रूपा उत्तम् ताम 3 क्षोप्राजाण्याजे। एशास्त्र त्यारघारघुणयजो 列的 हिभागच्यायवांत धवामां सातेरसो जव्यापा 364 तससो सभारथा हा वे तारपा छे हा प्रपा व प्रस्तरण H भीरणनारे करेते खुषु उत्तस्ता मे नां णवा नि उत्स AZ भिनासेसघार प्रज्ञताथा यहो। द्राति जनारपा हे भूते भ्रतसमेने जागुतनी श्राद्य युवस वेला हो वित्रमेतेश्वता मुद्दता होयते। हथा स्वराय य वितेशास्त्र वित्र वास्त्र वास्त वास्त्र वास्त्र वास्त वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र म्म्यानिकारायं ज्ञायतारायं ज्ञायं तार्ग्य प्रस्तित्रे हेने युताये ते उत्तम् तामाग्रत ज्ञाण्या । १५५ व्या विश्व ज्ञायां भारत्य विश्व विष्व विश्व विष्व विश्व विश्व विष्व सन्त्र पणते वेलेवरते छे॥८६॥ न्यते कीर्माता सक्ति ने कण्डवेससंधानमावाचे। तेलेकसेत्रावाचे। उत्तम् ताष्ट्रते हो। ८७।। एपंच नमवस्ता पंचीनकण्य स्राप्त के रेस रेस स्थान से तस्त्र के तस्त्र के तम् विका नेरसमान्डेखाङ्गास्ताम्बरमायं चयनस्य वारवे नेयुमां गोषायाचे । तेयुमां गोयुतमां तथयां न -आवण्यत्मपुवतानीनेसेवानीने नागुनवीनाम लमन्द्रापडे। जिउनभोषणक उद्येण उनाग्रतमे न्यत उजाग्रतपणेजेको ६६ रवेतेते। १६ जिस्त जा एप स्म मवरक्षियेक्स्यामान्सावे।एवा एक्प्रवस्ताकीयुव तीन्मकतकवनातीची। अशीपण एवेकां शोतो जाग्रत तवासेसब्रावातेसारुक्रीयापंचेन्त्रवस्तातीते खाउगातिषांतेसचेतंत्रधवासास्त्रीधिर्शाजीखन्माः रप्रतेकस्याग्रवमायकल युतमान तत्वभात सहिततं नुसर वजणाय ते ताजस्व क यस जां णाधिय न्यापसं छायेतेसमेत जां ए। वामां न्यावा न्यातेव ता न्मारीसम्बराजकरु सोसक्वेवत्य राषे चना ए सण्। अधायक्षणसमेत परमगुरुतक्ष वोधवारे जाति नमेजणाया। नमनेते हेनुं कतन्मनंत छानां उच्चराध्य रदेवादीसमेत। १९४। जागूनमेन्द्र्यास्यवाजाग्रतविया नान्यां न्युन्प्रवस्तामे एमाहे ता एके गतामा लमते स वरेशिकारणजेहे नमां य नमवस्ता मे जुतमां ते व यते तो यो तातीईछा वरेख समन्मत्य था यहो। स ग व्या वसमेत जाग्रत व्येतान्य ने स्वतंत्राताल के मित्राते व्या तत्विमाणक है जिसे स्वतंत्रमात्य ने स्वतंत्रमा मतोतेषुमाणातत्वभागषाईनेरहेश्वादिनम्बल यान्त्रसंस्थना सजारा उर्गर हा सार्थण सार्थण स्था सार्थण स्था सार्थिण सार्य सार्थिण सार्य सार्थिण स राषवात्री। ज्यताउनायत्व प्रशायत्व प्रस्ता वित्र वित्र

33

वस्त्री विस्त्रस्य न्य यं उप्राव वाया तेजसार वस्ता प्रव्रता प्रव्रता प्रवाहत वेहत वेता जा भूतिया विश्व हो। १६६ जा गुत में भावना चेतन प्रणेषा भागमकरवो॥नारेकहेसोजेन्मान्यन्म बस्तात जानोसे हेनकरे थाय छे॥ १० शाल्मने नाय तमे व गावीयतो उत्तरीसकेछ। सारवन्त्रम् व्यक्ताच्यान्य प्रमामकमकाया सन्दोतपर्गे उत्तरोश्न्याहावे L न अधिय छाये जे जो मं जो मदे हत त्या मुकायं चदेहरो नु ने करे छे उत्यंमा। तंमतंम का यभागती जे ई छाये वु विश्वापण्जा ग्रतपण्डेस जांग्रमं सनुसर्विने म् विभागनेरलाने देहमेते प्रमां ए निमादीमध्यां त मु ते मस्त्रीयाई छा वती सर्व इय ए। वरते छ। मा से जागू गामियसे सउ जा प्रतरहा जे। १०५॥ सजां ए। उच्छा खुला ध्यावेष्यकारेदस्रतत्वस्र त्वारंणप्र उपजेत म अवस्य विद्याती जा युन में स्विद्य विद्य अवश्व से प्यरेशने वासने सम्बन्धा सारा तन्त्रां कर बुतमां विवाणनीत्रावस्तान्त्रां तसन्त्रण एट सन त्व उत्तर क्री अ क्षणम्ब्रम् ॥ दिशामागा। ३॥ छार्यमने ॥: हावेस्वका त शातावं चवावस्ता ते यं चयां मस्त्र ऋण एदसत व भागनी मतिया पंचनम् व स्तानी संधामे जेड प्रणास प्रमाणिक विश्व के जारण स्था के गुरुष ते स्था के जान स्था के जारण स्था मामित्र विकास का विकास के निया विष्या स्वास्त्र स्व स्वास्त्र स्वा म्मानवित्र जो हावसवन्मवस्ता सन्त माम्य क्षेत्र होत्र स्वाचनम्बद्धाः स्वाचनम्बद्य 

स्र सांत्रतिसंतरबाकराववी।धीक्त्रतेपएरवनुख्य वर्ध सामामकातरकाका चरवामा मारमला वर्षा ने भी सेमारसम्बद्धान्या चरवामा चरवामा स्थापना वर्षा ने भी माहाराहाध्या अन्यम्मानियम् त्रित्रात्रियम् भागहेउन्मं तरमे लाकी तस्व तय लिस में जुल उत्तर सहनव एतं तेतां ता कीध्य प्रयत्त करी ते जे हलाभ हो। मतमेवं नक्राया धर्नमावे तेरती प्रमानान्त्रादरेव रातेस विते लेव निवान विया यहा का कर राते त वाय एउजे जेहोच तेहे ताषु एव प्रचाता ई छा ने जा से से हैं। ताराववी। एवा नासहे जय एतं म्झम युनावधवादे । टीजेहेल्पकारातेपोतातास्वरुपते पतापदनो आह राष्यं उतेनकर ड। हा उसी ता प्राप्य ए एज वी सेमा सर्वदारावन विवासावादीकमावनाताती ने स्नान जजनमेरहे आहावेसं तोस वनसाय तेवा वे ताराखवेस ९ भीन्मतेपर मेश्वरकत जस्म जुताताले इने वारंमव रभागदेहतासाम्मितरमेषाय एकाष्ट्रमहेतुं पात्येराते यो।११। अप्रतेनात तेदेखाउवासंतो सनार बताराष वाश्रिमधुसद्यात्रवात्रवातेश्वात्रत्रात्रवात्र यातेतज्ञाया १ शालम बेते एपे बद्दाते ता ज यूरमरस् पतानोकत्यय्यान्य स्थान्य तरायय य उस्ते। १ श्राहावे मता ते ने चरा चरते वासे व्याप के गास वसा है। वतवष्रतेभागमान्ते ताजचैतं तस्यक्ष प्रतास्त्रजा १धीतमात्ववेते प्रधानावा पद्मतिहेतावी में हत्यतातारायवीयोताताचातमे जिने के वालते हैं। जागतारा जिन्न का निवान के वालते हैं। कारे का ते के का या सम्बद्ध के तमान जो दे ते जी हैं। नी संधातवास करा जो जे के कर मान जो दे ते जी हैं। तागता क्या या में जो जो हैं। क्या के कर मनादी स्वर्क के का समय के के का जो हैं। तागतीन्त्रायणतेन्त्रेशिष्ट्राण्यकरेन्मनादीस्वरूष्ट्राण्यकरेन्मनादीस्वरूष्ट्राण्यकरेन्मनादीस्वरूष्ट्राण्यकरेन् करमयचेरहेनेवासेउत्यमकान्त्रविस्तावीतार्थिते

मुवस्तातासंधामेदेरवाडादाधुं॥१थाहावेजेषुकारे प्रवस्तातां ग्राधा छोन ज्यांतस जारा ते जा कारे वा वसातान्त्र धरियां तासंभस्त मारोहिता तेभरित्यभरे वत्रेतीक्रीयाकहैं। तेजपण्यावस्ताताखंधामेज व्रतिष्यक्षयक्षयक्षयक्ष्याङ्गाश्लाहाचेस्पातावाव प्रतिथाती सदासर्वकात प्रस्तु ज जंत संमवादने वार ॥विमाजे एये करी तेस्र रवतत्व तो धरासुकावधाय॥ भोगवे उदार ते जे उदासाराय वा। वास्येमे पाता नारा पष्णातातमकावैयागतेवायोन्त्रततेवधातीकोईयेजे वेदरातेषरमदाव्या १ शावेम वनेवा वेगती यो हो चेते विष्णावेग ना से ये ये ये ये ये ये ये में न स्मता हुन वे गोधंकर१से आरथा ज्यते परमारथसाधन करवाव माबातपण्य तया अवया ज्ये तरमेयण्य तथा रजा ने जे मालेयरा विधिया नी मानुनी का रतनकृषं ने धाया। रही। ष्यातेन्द्रारातेन्द्रातसंधामे व्याचारमुध्यकरवा। हा प्रमानेत्रातस काण्या वावस्थिका यामां वहं वत्वात विष्यासरवरं इनयो तो धारणा ये ब्रह्म ब्रह्म या मात प्राक्षणे धागलकाते परमज जनकरकातीकायात षाऽयोषधापछतेतेकचानमजमसागतानाचत मामवासाये त्रमाकां क्षामेते त्रजाया पछते तो ताजपर विष्ण म चुतं नवा से रत्य थे ते रे हे से सिशहा बेकुं भत विश्वत्रम् वानो नम्बरोध प्रतानम्बरनामे करां ना विभिद्रताषुष्ठताव्यवस्य सिक्रतपरेते कलामेता स भाषानुं चेतंत्र प्रश्रुजागुतछ तेहेत्रस्मरणत्रथवा विभाषानुं चेतंत्र प्रश्रुजागुतछ तेहेत्रस्मरणतथवा विभाषानायुद्धतातत्वज्ञाजेकात्रेथवालागे ते विभेशायादेयाते चेतनथउपोत्ते।जेन्द्रावस्वत्य मिन्नी यादेवा ने चतन धरमाता जिल्ला या ने यो ते

सन्त्रा ३५ न्मसरप ना एस्रा न्मतेम शानिया वीता प्रतक्ष से ये जन सेजोउ॥देशीजोजोघणाकजंतते एक्सवीवस्तायेन उगं छो। जे जे हे माउ पास मासाधां न धां पात वर्ग ध्राम वादीधाते न रूप कर ताते ते करते ता जां ण वादीधा मजेकोयमायेषु ब्रमीर्व्या तथा समुती ती नमाग्र ना-चालवादाध्याद्याप्रमाद्याप्रमात्रारम् नरजोवार्तनगतीरोकी एखहो वे जा गुतमेन्मवुभव बोलेतेकहेउनमातत्वसंसार्यश्चीभ्यांतरूपजेभवा यवभावेश्मत्। त्रमंतरवाजव्यायकवेमवमांताते वगन्ताम् णकोवलकरतानुकरतन्त्रं सन्त्रं सन्त्रं सन्त्रं न्त्रागलगतीय चालीताजीखाँ । से में वे अवनियस नीयुद्धतावासेसवधाराते मासे ता जीवादी धुन्ति जायु तजेनी युद्ध ती येथारी येते भागनाव दि। दिहीषा ते जिस्रोम ये तहा विहे तो या चारकरा वे तुं त्या धाव रेण्यां तत्यभागयुतायया। दुशानार एस को है स्वीजी युमाणितत्वभागघोरव्याचे ते हेउ युत्रमां नतारं है तत्वतुं चाले छे। । इत्याहा वे तां हां चो तां ता चतुराई क याजाय॥ते हे ताकां ईये चात्वं वातात हा। तहारी एकरजोजेजेचरमांसांमग्राउत्यंममध्यमन्त्रोष ज्याद्येभरेत्महोयाद्याद्यात्रम् वार्य अरथभा वेष्टवासाराहाचेतेरकामाजेरवाव घटे ते जरवा वा शिक्षते न घटे ते सुरवे च ए। सपुर णनकरवा ज्याने क्योसधाउपरजे लागववानी धानासमारथ योषाया ध्यानहा तरमो कारवरां मक्षण्य राये तोते हेतं को ईका ले जिस्तान तुं पांते के नेउपासमाध्यानितमते तेते हे तो त्यागक राष्ट्र न्मनंत वाधन उत्तयं ने पाय । मारे ने हे बब्र नी गारि यनात्री छे।। छ । निहे नो त्यागज कर को ते यु यु तात्री

विमाना विस्ता ने के स्थान सम्बद्धा विस्ता विश्व विस्ता विस प्रभारमां माने तेन मां माने अमां वर्णक मुस्य घन्नं सपोना नाई छापई ने युकार मायुक्र नाइ ग्रातागयाणिधाते सर वकारणिक छो उने व्यकारणी क्रमागया। जांहां जेहें उतांहां ते व्यवस्था जतान करी वित्रासास्त्र विस्तितारे नत्व तायु बुती पायते जीव प्रसम्बर्गिन्म पानिएये करोते ने यत्। सामान्य विषण्यस्य सरस्या पर्त धारा ने गते वा वस्ताते ग्रियोत्येत्ररूपंत्रपामीन इते पण् करताताकरतमा मायतम् ने वायसजाता छिली समार व्यायना जोया गोगमकेरे साने भागतोन्स धानतन्य प्रथमकहाग ग्रों प्रान्म तेर्म ए। ता कहा छो ए के म छ। हा वत हुन वितितत्वभागपक्षतोस्य जातास्ययवनेवासेवाभाग ामंत्रापुशादेखाकायद्यायुद्धवातं वास्तित्याधाक स्याप्रमाण्या चारराववा। हावते त्वता जे प्रवृत <sup>|||</sup> स्थातिहेतामा प्रयुक्ता ग्रायस्था स्थायस्था स्थायस्था स्थायस्था स्थायस्था प्राप्तसंकज्यवाकत्यनाच्यानकार्युधानकरे बु जिस्ना मा अविद्यार घडां जा व ए व व व व मा न मा न व्यक्तियर तते वा रवसम तायुर्ह् रायु आर्थिनमते त वी भेषाचे कमे एउरा रखा ते स्वर ये भाये ता ज कर ता तुभ वय भिष्ठत्र आएषं चवा न सता ने पंच सांभ सन्त्रत्या एद स विष्यां कार्याकही। संस्थाएउ सर कार्या ना ने नी बतत्व अभामां जवुड़ा जाय छ ते रखंसते तरवा ते सारुपर जिल्ला है। हा ने एदस तत्व का वस्ता वांच मे विकासिक्षा हा वशदस्य तत्व व्यवस्थित्व विकासिक्ष त्री माजा शाने तस्य शाकहा ते युमां से युन्य वा विव त्री माना णात्रत्वस्य णाकहातपुत्रा ए अ विकासच्यात्राच्यां च स्त्रायं च स्त्र भी स्विकासध्यामायं चस्रभसक्षण्या च भिनेताः श्वेतमारुणमारसकासमुब्रमानक

सथे। विषयममा वकाल जेतत्वना मान वक्षा वा हाथाषुवमसमा प्रयानिक तिस्स विन्यस सु तमानेक छ। हा वे तेमांकता समध्यम स्त्रमां तत्या ग करवे तमतन्त्रा द्वात्यभागतिहाथे यो त्ये कर यो ताहारे छ भ्रेष्ट जस्बभावते वारबे प्रनतितेतत्व ने वस्ता ३।। सुय चेतंत्र असंसतो स्वभावते चेतंत्र पहाते न्या करमतीसा णतेवाचेत युत्तवा देवो । धीनमते परमा वक्षकायावरेन्मसयराच्यजनने ने वास्य यासर छेईशयोगेतत्वनास्वभावजेहो यते यति जन्मे। ते के वा तो जे वा पोता ती भावता हो यते वा पत्तरी ब्रुतानमत्तो स्वअतास्वभावसामताते पारस्रतेष सेकचनथाय।।धारपुकारेतत्वभागपुभावपरमार थेनायामा वेनमान्नां तकालती प्रज्ञतात वा साये समभा वेजे वासेन्मा क्रांता वंत श्रवता त्वरहो छो। तेर्तभन्मान्त्रंतभन्मकारण्छोउाचात्रेसतध्रमतेष सेवा खवो। हा वेकां मताका सते कां मताती जन्मे माब्रावेदि। सर्वतेवासेकां मतावसे छे तेन्स्राप इस्तरमकामनाचे स्वांगायांगयरमणुक्यदन्त्रभ युरायुतथायाधीतेताजलक्षरायकेनोग्रेसकती अज्ञेतयुतायुताधुत्रसमान्यथायते अज्ञेतताराय हावेन्स्राध्यर्यकातते।१वायोतातात्व रूपतान्स्रा कोई जांगातुनवा।मासेने क्रमाश्रयविभागकम ता उंगे विहेतेनार्तेने शेकराने जाध्यये व्रधायानेतेकर्यं व १९ जिन्द्र निक्र माध्य यो सम्बन्ध स्थान सम्बन्ध स्थान स्थान सम्बन्ध समित्र समित कारेकरातेकराछे तेज्य चानकरम्यादाष्ठ्रस्य केर्ष्यकारेकविषेजेजोबानेकरनामाभ्यक्राप्र सागरते वासे युक्करा ते गाया छ। दिना महिन्मा प्र वन्त्रधाह्मधेते स्वाद्धाया छ। हिन्ना ता निम्नार्थ

21-57 3E

१वेष्रथककातज्ञ चराचरते वीस्रा १धी घउउभागउने क्रातक बुंचे तेतत्व क्रमंससमेत संकत्यतागता देख विज्ञाष्ट्रथकष्ठप्रवास्त्रमं नदेखायछो१स् 3 वता वाभागे करो ने ज्या के ज्या स्वरा राज ते दे वा यहे अते कर्यु छे जे ने ते कर ता नी गती पण् ऋ नं तदे या यहे 19 क्षाति होता एका मबते ए युकारे युषक सक्षेत्र रवदेष उ विवायातकातन्यकात्म्यत्यं त्रमतेकप्रकारे धाय 12 लिशायेतेयाद्यातकालतो छे डो जो ई तोयेयं चदेर 17 प्राचीतेन्त्रतात्यतास्यंतज्ञां एतिमजनमेभागसः वर्षामन्त्रावे एउकर अहवा हा वेन्द्र तांत्र का खने चुणा प्रातीमांतानना प्रावते छे। ते वेहे वार में ऋत्यका ज शन या राबाग्रयाते (स्भिन्मा गलपो तात्रागता क्षेत्रमं तरकेच 29 गायवी। पछिते ज ज त भ जं न यु ता ये ज्यु तां व का खं ज युव विश्वीतेष्रमस्तात्रेष्यान्त्रितम् का वेराग्तात्रतात्र 9 बियवामाउसे जेम-चमक बडालाई चते विवाद ते नेवा भगातवरे जमसात जमत्यपप्रहें छोर आते जस्म सात थस 月刊 भरवतत्वभागसमेत उत्तराते सतस्य वस्ता पछत DUA जोरित्रमंगाकारकरवेगा २२॥ तेकमतारे ऋतांत 羽州 भवनेषे ते वे व पा चा उचा ते के ई प्रकारों क्रमहो पुर्ख नाउ भाषतं करेल जे कमा कत वन मुत्र भारे देश ने ह का ई ये जा a a मित्या गम बद् उ कि मजे नम पार कति ता गता की 318 तियेतमेकरा १६६ तिन्ममो तेतज्ञ गाम एषुकारेन्स 1310 मिकासते सद्यात्र जेयो चेए जन्म त्यां तका स्त्रीमां 523 किता किता के स्वास्त्र विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व विमान का तते जमादी सकता परमधा मते वी वे य भाषाचेरायवीष्ट्रयमतो उपास तास तस्त स्त्रीय प्रमाने अस्त स्त्रीय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप स्वाप्त स्वाप क्रिताला अस्ति स्वास्त्र सात्र सात्र

सन्म नावहेतुनां क्षेत्रपादां तन्त्रमाय उपिते में में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा वर्ग में घरे क्षेत्रमा वर्ग निमे में घरे क्षेत्रमा वर्ग में घरे ना वह तुमा (मक्ताना वह र उद्योमे । १८० । छे यत्र पुरत् रवी। हावेद्देसका बसक तत्वता प्रश्नीहेस माही हे ये एके कसाधि वे रुभाव छे । ते समो कुता के सार नदेखवोगार् भाषा हो इसने संकल्पने वा से पी तानी। वनाये वैरागवुतनां वापरीने स्मात्र कोई पदार्थ वानमत्यज्ञावतीनमासातकरीते। ३१॥ ज्यतादीपुरा नेतांहां यो चाउवो यो तानी सन्दोतं तजां एय व उपे न तरतो ने देस द्यातक न्याय ण ते मारेक द्याय प्रशाने स्रती न्या विवादन करने जिन्न निक्स ने वधा छेते। हावे रसमोवुधानमंतका ला ३३। जे जेतत्वम गताना या भरा छते मायस युधायां माउने ते हैं। त न्मतन्मां लेखे। हा बेते जे जे उत्तर ऋत या का ही छे। ३६ त ततेन्स्रंसस्तां एब्रुतासुधायोचाचे छे। ताजमाप च माण्येकाकास्वेर्णसंकत्येहोय। जे जेतत्वभा ना ताराशिक्षा ना राता धर्म जूते। ते नुमा प्रयण स्मार स्माबारहे। छेले वारे समस्ताहेत बेहे मा वता स्था वदस्रधांवधोषद्॥हावेयांहांसुधावस्राते वाभा युवतिमांततोकलसकरीते। तीज करताके वि स्तातंत्रयदसुधायो-याउँ। हुआहा वे एउ य रांतवी जे वयातंतत्वभागनेवाज्ञंनथारहां।एजवेकांगिरिता वत्री साथ मान स्थाय है। इत्या युकारे व्यक्ति स तकालनो मावनी युनानी संतस जेन ने दे रवा और य दसकालनुजे प्रकारे प्रतिमानक राज्य ने ते वि ने बेमजो गाँउ॥इट ॥इतामान मागुलन राज्य उत्तर । त्वना उत्तर जात्वा प्रकार मागुलन मागुलना स्थाप का त्वताउत्परक्राचाष्ठकाण्यत्वम् ।।दी।भागाष्ट्री।दी।भागाष्ट्री। रमते॥: हार्वेग्म चत्र्वणतेषात् ॥ त्यामा॥ व तेहताउलर ऋष्वायाय तेषाव दस्यमान्त्राउप तेहेताउतर ऋषाव्यस्यावत्य स्टमाव्यत्यः अ

वक्षविद्याषायुषम न्यहं नते मुद्रभा वनाते को इना क्रमाकी रेते तालमा बडे।। हा बेते पोता ना मुंद प्राण ने वासिते नाव वा वडारे यवं उस्प कर उपारे। ते जे न्या पर्ण ने मामावरेतेपण्यहतंत्रकस्तिकस्यानारे एमकहे ब्राजेत करे खुं के हेड ख्या च स्वेतो ते साभरतो। आजे प्राप्ण तेनान्या वडे तेनोन्य भ्यासकरे ते सनसंग क्रोतोजाण्यामां नमाये ते जांएपा युमां को प्रायु खर्ष पण्करतांज्ञायाधि।ते ख्रांसयुते धामधामेकाता ख्रा भो। जेते देहम जेहने जे का लाखा धाने कामन्या से कारी नेस वितेमावरे छे सि ने पात्ये स्य चे तनसामून वर्षे न्या प्रमातस्वतभवरं छ। तेन्त्रतवस्य क्रातन्त्रं सने न्त्राध मध्यभातस्त्रधा छ जाहि। पण्य चमके रताकाका ताज क्षितेमासेकलान्त्रसस्तातस्य याम्याक्रान्त्र भावतात्राक्राम्म। त्रित्रताका हर्वय गाव अकराते येषाराष्ट्रा तेउलरावाते युत्तेता स्वक्ततव्यस्त्राताव 71 भागतेकासे घुगरधाया विष्णुते पातेन्संस स्माद्रका (गरेनां ण्वा ए चुकारे समात्व उम्रसनो नमा पुकारव 24 णिशवेवासे ज्यांस ताकता लिमान जांकर ते जास 11/1 म्यनेकोईकात्रेना ज्ञाचे। जोचे हेतं नक राने करता Je ष्या भाव डो। परमव असे साही नमनु म वाश्विकरत 30 विचतेबोवेछे तेसमर एसमातवास्त्रस्त तेनश 49 भावे॥११॥तेमताक रेखाग्रंथारायुताती व यंतर विसमेत जोईने ते हैंने ज्ञाधारे नो ना चाध्य बांगी विष्णे में त्येयोता ना ना में ले । १२। हा स्नादीक सुधा त्र भूगेमवकरवातातात्रात्रला हते तहासायाधित्रण् क्रिमेनवकरवातास क्राका हते तहासायाधित्रण् क्रिमेनवकरवातास क्राका हते तहासायाधित्रण् क्रिमेनवकरवातास क्राका हते सहस्र वक्ताया॥१३ विश्वसम्बद्धातिक इता रेप्रबद्धकारेषु तीभाव

ताजनम्बात्यासस्वरूपकरमामायायम्बर्धात्रेयय इयाएण गमातात्र मानाति । निर्मानाति । निर्मान इंत को म केहेवा या १५६॥ नमहो जे हेते नमो स्वर्थ मानु समजनमारहां छो। हा वेसंमभावना व्या नारे मंत्र साहोतत्वने ११ हा। जमंधा हं ध करी नारवे है नेका सम्बन्धन ताम्युतामी खुउन पुउ जादे अमनेम प्रज्ञाकरावे हावे प्रज्ञताने वाता वंदने । रुपायों ने व र्त्रे तेरे ते ज्यो यद तरत्या वधां तथा यते स्वाक्त आप तसंभवतामंद्रपाडीते सद्युक्त सद्यातीभणीवात १ति जियरमसुख उपासतान्त्र पार ने जी वेनाजा वेकेष्ठताकराववी।ते एपेकरीते अतस्य क्रण तत्वभागसचेत धेतेसतातंत प्रभुव्यवस्प ब्रुतः लागसे । १ सी हा ये या सरजात भा यता ते खु या उष् यतेनुभान एकेक वेलाचेनारहे ने यो ना मास्यह ने पणनजाणे निन्महंदे हो सम्माने स्वयुक्त प्रात वमाताते वास्त्र जंतप एएंता श्वीर वीताते योतात मेलेतेन्द्रस्थां तज्ञान्य दस्यमां वे उत्कल्या नारीते हुन्मात्यमामपरते बेनारकरवाजा स्थारिशानेनती वियो ता नाषु जने के हेती जनमोची ताने खु त्वी जैये। ममोतेक मनमाल खासो। रशाते जास्त ताक में यो बांधाने जैये छे। ये ना सांना ये नता स्व जो। पर बहुनाराचे जारमे एक ठा परीरशी तेम एचे स्वामी ते मानाकमेका अभारे वातकहें छे जे हुते तुके हुते। स्मामान पणे बोलाने लड़ वाडकर ताकर ताणि राजदर वारमेगा यो पराजा ये स्नो मलाने त्यायकी, दे ते समायुक्ताने बोलाबाने बस्ते मलाने त्यायकी, दे विखाने परिशा घरते (जावा के स्कार एमारीमार्गिक

20 T

भ्रतिवादिन विश्वप्रायेन वश्मांन तायो मारोन ब्रोतेत्र गायद्यातारे ये जायुक्रो पोतयोताता मायोते जालाबी मेहा ये जाला ने लेई जवा मां आ नारे पेला पुत्रते केहें छे के जोह तारामगाथ्याहोई तो लेई जानहा तरता पछ् बदला वा नमा वस्ते तो राजा बदला नमापे त्रशाहा वे एषुका रे जे स्वलागा या ते है तो न्यत वसांहा जावीयता जेरेते यो तानुं सरीर युत्र समेत भातन षाश्चितेतारासमां तज्ञंतुन्मते कतरर्तरहृदेह्व मामाधंते तुमान जनवनार भी एयुकारे सरजा पर्रातेन्त्राजस्य भारतामा हका एवा कां हो था ३ ग्राष्योते साहां जास एव। सरजंत सरवं वे धया। 211 भीएषु वासरजंतपणा प्रयम सञ्जद्धाकराते प्रमानेवायं नु तसामान्य वासे सकार न्यसने १३ नेषुकारेएकमानेयुनन्त्र एयएकयछ्वा उपे एक 5 नतमेला तेयाय वेषातातामाताते के दलाक काल ग्रंद गणाउर।।पछातेमांकालवातागयलघुरुतातार 1 बेजण मातुश्री जातां त्यां कां त्यदेसमां जतारहा 70 वितानी माने सुरतिगाया। हु श्रीने नमोखर्काण्यन 98 मिन्मने एक श्री खते माता ने क्यो खरवने पोतान त्रा श्रीतोत्ते मन्त्रावाध्यन्त्रम् सते एक युष्ठ ते जां लोप क ग्रमित्रार्थाञ्यते बेहते तो न्यस्तात वारवाजा ग छा मधितिए। कराने असागया ते या सरयणा तायुव मानायभागनवधारमध्सा तेष्ये कराते ते जस्वार भिमायचीरहा। मारोदेहह के चेतंत न्द्रास छं से व भिमारेष धलता यं तोही यजां गां वामां तान्त्रास्युं भेडेनरायेतोतेत्वभागतीनमोलर्वाणकरीत्रम क्षेत्रायेतोतेत्वभागतान्त्रमालरवा ए जात्रमान

सन्त्र एन्स्य स्थानिक विकास माने के के किया है कि स्थान के किया है किया है कि स्थान के किया है किया है कि स्थान के किया है किया है कि स्थान के किया है किया है कि स्थान के किया है कि स्था है कि स्थान के किया है कि स्था है कि स्थान के किया है कि स्था है कि स्थान के किया है कि स्था है कि णन्मा स्त्रमेत्यवावका गाम्या वातं तते स्व स्ट श्र यरमउनकर रेग्सामार्थे स्थान स्य स्वाता छएवाना वार्ष्य स्व अति परोत्रमनेतकत्यसुधानमस्व उभजनेत सतीवा सकरी नेरहें। परापरम एक एक प्राच्या व सतावासकाराम्य विश्वास्त्र तेरके नहीं मु स्रोतेमतालक्षउपरेसउपासताचीचेसर्वहारेहे ग्रवेत्राश्मावतातुं रूपजे तत्वते व्यासयन्त्राप्रे व मबेवायेजयुभामेजावहाजाय छे। जिला व णानारासमानकोईनेनसुनेखं जेहेनेनमाधामध क्रांत जेतत्वषु युतीको एकिया था यते ता जएए म ध्यामारोतेतासुकेलुंड्वेज्येजोर्ते सरवयुकारे म सावधानपर्ति स्वरुपेती जनत्तानुं नजान अ तीरता वलुं रामभ्यासेक रउ। धिरू। राम तेहारादाषु क्रभक्षणकरडा। ज्यतेची चरउत्तेताताचे तत्वव भागमेयछेतेएयेयुद्धतासचितंना। हिंहाद्यवी नेवासेरहेस्रो।तेवातत्व प्रयुतानो जन्महार रोतरतो हमणेनोकरतानोकरता रहाथे। ध्याते हि र नाषां में ये माहोषु संज्ञां न वा ना कल्यु युजंत्री मज्ञधायातिसारुकार्छे गउषायकरातेयोता ध्धाम्यवर स्वतं तो ते वाय। हा वे त्रांधते आवतावरवेतारामेने अतरत जो तेते। ध्राण वाणानारवारयवा वेते मेराववा स्ततभा वणाव नानेप्रांत्यनवीत्व प्रधानेसत्यव या स्ततमा प्रति व्यान्य व्याप्य याप्य व्याप्य याप्य याप्य याप्य याप्य याप्य याप्य याप्य याप्य याप्य या वं अजनमन्त्रज्ञात्र ता जना न वास वर्षा हार्वे में चेतमावनाते अवाजनमञ्ज्ञारर हुन्साहार

d

ष

व सने

67

गा

का

जोद

शिं ला

नेर

या

ना

वेत्रताकरतनेकरा जांग् तान धी। ते हे नान्छ्रं सस्ह ताहा वते यं यह हमान पा यो ते अंस समतना प्रध मवधानेकाले धवाना जेवरवत्य सन्तापुरसर व्यवस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य का इना रहा। स्थाने तातकात तो सोध यर मलक्ष नम छाद व जे कर वो प्रधितेहै नी नमंतरमे धारणारा खवा। ४३। नेन्म्र खं अस्येपदरेरे वानुं तेरेनुं चातवतकर उं॥ एपुक व्ययेतते चेता वीने भावता शुधी भजतने वा वर षवा। हावेउचारभावनातेषुमार्यकार्यकरवानु करायें तेहेमांकोई का छंगास्यालमा वेतातेवरव लउरासाराववी।।के ऋसे माहारासंचात का य मांत्रकेउ जत्मजनमा तरते वा वे करेखुं यो खा। सह मारोकसे खुमार प्रसाधित जता नमा वतुंत प्रभाए ष्कारेउदासान्त्रांतरमेन्त्रां एए ते जे ते युकारे सार वकालास्याना तामां युताय एउक रउते हुतास्यार सत्तीसंगतमां रेहे वायतेज न्या रत्यराष्ट्र विश्व विष्रभावभावताते वासयेवे भवजो इति ज्ञ गवरा बचोते परमे स्वसद्युक्ष पद्वे वासे छे मह रें अषं उरावको सिल् जे जेतत्व जाया परमार ध भाजमेन्छाचे तेरलागुह्णकराते जुता ववा न्छते विरमार्थमे। ६९ । भ्रमता उकरे एवा तत्वता नात्राया विशायवी युतवान देवा जेवे का शे व प्रतागितर भागाद्रशामाये ब्रुताव वांमाय ऋ याते व र विषक्त मायता जाके वल जा जाता माहार तह त मिन्ने मायना जाया वा का निर्मा ने स्था मासेतेद्रसमिनमान्यते वा वेन्सभावरावाते मानान व्यानान व्यानाम ने व्यानमान विष्णान विष्णा विष्ण भाषानिकान्त्र त्यानारहा यत्य मुक्ति। ध्रेशायायक्षेत्रं स्वय मुक्ति। यायक्षेत्रं स्वयं मुक्ति। यायक्षेत्रं स्वयं स्

केवलकर तामाज्य माना स्थान्य साम्या युवाना ज्ञाना का केवलकरताताजात्वाहणान्यसायुक्ताजात्वाहणान्यसायक्ष्याच्यात्वाहणान्यसायक्ष्यात्वाहणान्यसायक्ष्यात्वाहणान्यसायक्ष्य रसंख्यावनाताला विद्याचारा विद्याना वाजां व चतुरायाते धुरधारणाव से प्रमारणाव चनवे घणन जाह्यामान प्रजासम्माम् वामा वना जेते तेतो वास हिं। उप्तयांतकरवावी सेन्प्रयुक्त युक्त विश्वीषा घण् ययुव्यतिवेतायेन्त्रसाम्यपारं धारणकरउषे करी त्येहार्यपण्डं से र्तेरहेते जजाते। ज्यते परमार्था उत्यो क्रमाह्यामे वेले साम्य प्रयोगार्त्र नामक प्रवार उ तांहांतो ध्रुटधारणारा बवा। धितरत येवति वावेत पते व तांत्रमक्तिताष्ट्राष्ट्रताताक्ते मलेवायमारेत सहार नाष्य्वनाहेतंष्रातां चेत्राच नम्य प्रायाने हे। ने उर मम्रमेश्वरतंयजनथायाद्यीत्यत्यतेयाना सा व त र्मसर्वन्यतात्यजेन्त्रत्ये पोतातुंका जन यायते । तोतेन युक्ततीयुरसञ्ज्ञास्य स्वाद्य १०० एस्वरवन्त्रो स्वातेर त्रिजाणविशाएउषरांत्रत्राजक रताञ्चा गुरावा नेमर रपांप्रवानीनानान्। निर्नादानार पर प्रायुक्का कि जैने णसागर-अवतारगतीरुयञ्चगरस्ता। अपने कामः सेवंतकरउं नेहेतायोग व सेना जनगराधारपर मेन दे दरेषां माखे। मारोने नेमादर ने वा स्थेन्स द्वायामा मानवा. पण्डेराखडी । एष्ट्र नारे ने स्वां प्रभावतीय राजार कराते परमारथ साम्रथधाराते सर्व कालकी स्थान स्था कारेन्यणग्रणभेषाच्यानागामहा वर्ष व्यारमामकामेएक दरसा ठावाचा निस्रार्थ तत्वभागसम्बद्धारम्भारम्भागमान्या स्टूर्मारम् भ स्तार नेन्य्रभयासकरीनेनीजित्वायर मारविष्ण लानाः वरवा

ম-সা গঠ क्रतायदती जारेष धर्मिन्सचलभ जंत युनाय जोगेना त्रधामयाम् वास्ताककहोदेखाउ१।।एयकारेडसहक्री वाजांगात्रे ब्रुते ते परम खुष पां मे।। १ ता ग्रीन्मचंत घण्नीदसभावनातत्वनाउलस्कायां पुक्रण्॥नवमु॥ शामागाह्॥ अरभने॥ हा वेमुख्य त्र एप गुराते त्र एप घणताष्रवता। व्रथमसन्त्रतमण्यभासमे वास्तार क्रातेक हा छ। या ते यव र स युस्त जो गेत त्य भाग जहा या उत्समध्यंम पायछे॥ हावेतेनो युभायुमार पयुग् पवासार उत्तर प्रवृता ना। थाक हाये छाये पणसर पतेषा घता तरवं तरवं उ एक बाहो यता रेते ब पराण्याया पछतेको ईतीजाव घातंक रातस के इ तेउरजागुणान्स्रादी छण्यस्य हात तान्स्रववतत्वभागेत मारतेन एवर नमाया कहाते प्रमाणे प्रवृताक रावे। ध गोते मात्रयञ्चां तते उद्यवस्य मन्त्र ती ता युद्य ती कपीप सातेखुरातांख्याजां एवा तेसा वडेतारेखदकाया नमरुपासेहरू,वडो जाण्वगारा। पद्यतेव सभयादा कमधमप्रमुवतमात्र सुकरवाधास्त्र। तमहोपुमारध क्राममानेवास्त्रभाग वृतीक्षाताहारेगुए छणुष एति है मत्कतयायते एक मेक वा चारकराते सरवव्रत मनकरो। शहा वेर जो युग्त ता मो हद खा छ। ते लुपा द गमध्यातप्रमगुरुखक्षवाचारममाह्यावातेष्प्रह गत्रायुत्राचा नारेन्म्र तन ना नुत युत्त जे सरपं जेरा का काले तपुरा स्वर्ध समुह्महात नमंस्र ता सत्र मुखतत् भूगामाहरूपवाय पंद्यात्रमंस ब्रुतीयुभुपदनेवीस भूगाहरूपजाई लागाम्महो मोहवानाकोई काले भूमानियायार्थात्रमनेम का वतना रूपर सहाव्य प्रति मानानमा वे। युता ता वा ता जेर ता ज का कर ते सर विष्णालाजाण्यगारशामारोरजोगुर्गमोमो द्वेगजे छ

ते १ व कारे मान जम मान जम ने जा माने ज ते १ व कारे ता जन्म वा ग्यारे जी संवेश र ता रे जा व ना र र में अवरतर प्रवसारे व ले ज्यारे जो ने करे ना रे जा रे रमेश्वरतरप्रवगरप्रवासिना ने निर्मा नि त्यान्यासातात्यात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्र नमोगुणनमापुष्ठाने हे तान्त्रकार गुंचुनार्थाने । कर्मका से उपने हो तान्त्र तान्त्र वा स्थाने । नेष्ठधंमजीनायधीयासायेनुंबतमानायनुंध तपुषमजाजाजज्ञातमायणधारणते संधामोका श्चामाउणसाक्षाकरायायावातामागपुमारपसं जासेकोकासेमा ब्रेसीमारो तेका जसार प्रथम चं यहण्यकर अपिया समिते ने ना नाम प्रयोग तमोण नातुस्रामुधनकीयने तेष्याया से संधारण करीं तेनगाउकरे। १६ । मारोजी सहोयते एये योताती व ताषुमाण्यवयो।।नमनेलछजावने लछ्यायवं ष्रकारेतमो तापु बुता साम प्रवास प्रवास का जापी।।। वासेसतरायवी हावेस्रत्वयथ्य सान्तीतमणा राकावध्रे॥तेतातावाधकाज्ञ से नस्तावी॥१०॥ येतेसारुदीनपण्डं सरवयुं गाउमा ने के धारण्य छ।तराजपासान्त्राद्येन्त्रायनात्रेयाठहावस्र १भीनमारजवछो अने संतस्तदगुरुपरम्यूरम् मारजवष्रमपासी सारकरयो नेते मतुनसे रचंत्र अरवंड करडारिश ने सत्व गुर्ग ती क्रमाता सकाण उपरचा से सकरी ने छे। नि ज्या सार्व तेवासेवासवा॥१शासस्वत्रसाम्यव्यसम्भए। तेषाताते परसेकरे ते सकत्व माग पाताता ते हैं व रामुके | श्रिमा जरूप ने सकत्व माग पाताता ते हैं व रामुके | श्रिमा जरूप ने प्रस्तु प्रमुख्याते व त्या | पण्डी स्वास्त्र विश्व विकास स्वास्त्र हों विश्व मण्डलाम स्वरहे ते | श्रिमा ने का पात्र महिर्गा विश्व व रूम ना दो भज ने स्वास्त्र हों विश्व विष्व विश्व विश्व

स-जा ७१

१त्रण गुग्नाउल ट यु यु ता कहारिधाते जयुकारे वे मब्रहे करा ते अम्होराचा खुत आचे हे ता व खेता जभा तर्वेत्वताताये चात्र।हावेत्रणञ्चण्डं यतमान मवस्तानीसंधाने॥२५॥व्रतेछेतत्वभागनेवासे ताकायाउसरावासारकहाया।हावेसचंत्रघण त्रप्रव्रतीन्प्रवस्ताता उत्पता साथे ता जांगा वाद १६।।पणते ग्राजांण यणाने ग्राल रवाने मजनमे षोता राषवी। भजन सुधुम बेलेन्प्र यंत पण्हें जा ग्रतम्म वस्ताना विभागात्व म्या वे ते जां ए। ने पो तेलां ससजां ण चे तंत्र रायाय धांततत्वसमोह तेवासेषवां १८॥ तेस कास समार चेतं तराषातं प्रमेश्वरज्ञांन ने वासे छुता वडाते वरवत मंद पण्यावते स्वकाजतं। २८९। जांगाने तेषागक्र उण्याभागमा चेतंत पया जेका छेते वेतंस्यका मघणतत्ववाकात्रकारवानाकाममा सदाचेत नरेहें सीदिनी पछाते तसर जभाग संधाने निकास पमाअतेयेक वेके संधाने छ राक्सनांखी ने ऐ कराते व्रत मां तउत्यं मिदिश किर वाती उपास्त ता श्रिषाया। जोमस्त्रसाउद्येकात्रभातुं का का समीजेयुकारेकमलपांख उत्तमलाजायाद्वया मयाभागतत्वता युद्धता नमचंत घण्यते तारे मर्करानारखे। स्रतस्यकासघणनायुवतायु वतेव्यवतज्ञंम मानु उदयेकम वविकासपां म धाणमतत्वभागवाकासयां माते तातामे छूरा भेचनघणनायुक्रताराययाष्ट्रधानमनेयुमेश्वर क्षेत्रजन बेलायेस्य कास छुणते चेतंत्रराष्ट्रातेष्ठ धोनही एवाधास्त्र कासने स्मानं त्रमचात्र सचितं तथाव त्रो

वस्रीयण जमहंका रघण वास्त्र सम्बद्ध सम् त्रस्रीवणन्त्रह्मार्ययस्थास्य स्वतत्वनं अह गमाध्याताधारणायराज्यक उपण्डेकां णराखे । हिल्ला में राज्य का राज्य र जमह कारवानाम्य प्रमित्र विस्ति स्वास में त उपणावानाच ल एक ततापंच मतनी छना हो। सम्महंकारध्यामम्बद्धाः वत्यासाम् त चतत्वना अञ्चल विवय ते व्यवस्था ने न्या व रथयात्रान्त्राध्ये इतेषरम उपारन ताकरे। ३०।५ न लपुष्ठप्रसेन्त्रनेस्वांतपांत चात्त उठ्योत्तउन्त्रत्व सम्बन्धात या द्वा है। विमोहत्या गस्वात ते सचेतंग्रीश्विस्वकासन्त्राचे खता वाचे ।। पण्य प्र हेकारवानासामुधवंत धेतेना छते। सा दोसब छे सतेम पुब्रताने तो ऋहंकार घण प्रधान छ।।॥ या ण्जेन्महेकार छण्नोजपदनेयो वावतेजधारण ने करानेराव्यो नियानावानावानकारणा त्यहं कार्य मा सनेवावयेता प्रवृताचानां तत्त तक्रवं । छेत्राजेवा भा सायेतो सहकार धयामिजतम जमते का वा सेसा पत्राहोता कंदी तेक दसी निमासे ना जक त्यां एष मार्थमाधनकरवानेनमहंकारधारवो श्युक् रेखाउण्यणनाउनरमादेवाडा धरा।दी श्रावरणण व्र णतीमुख्य-मतया उत्तर महिया तुंप त्रेमाथेचतुरतत्वकारणश्रीक्षते॥ एक न्याति 

पा

ध्य

ह्य

वराय विभादे।। जी रुप्रा नंदे कर रो ने नी जा स्वक्ष य ने स्त्र रा तायुताती नमल्हा दरुप या सुधाया। एका धानमा त्रितल तेषुत्रमां माधी चा ले तो सरव तत्वभागहे मास्यां मात्रेयां वंतक्र तारथ धाया। हावे माहात वकारणते दे हते वास्त्राथा माहा ताष्णु जेतत्व क्रायाते घा संरक्षं छे। तेमहा ता परमगुरु उपासत बेबबने बाख्या वया नेवाना वायकारण सुंदि म्रामान से इने नारे हे आप छा सुधुमनी माहाना वेग्रयवं उदे हुने वा से उत्यं म बुत ज चा खरो। शाम तेत्रेहेना प्रताये केवत्यन्त्र है तता मेर पायाहा बे पुक्ततीतत्वकारण्वेतत्वभागग्रवनेचंचलकरे लेपातेषरमभजन कांममनमाचे एउच्च वसपण गयब्राम्मवासभागपुन्तताबानायां रखोग्माव नेकायातं उउयायण्य वाया शिमाते युक्ततातो भाग ने प्रवृत्ता कर नार व्यता ने व्यता ने व्यता निव् भागतेवासे नाताये छता खखनार्थ। जेहेएयेकरात गाजरपञ्जां एग पता ता ता ता वा वा वा जे जे पुकार गष्या उस र मात्र या कही छेते। य ए। य ए। य ए। य तिलाते। भी मां ये चतुरकारण्य्ये व्हारे । ग्राम्या पातमरवती क्रायामां त्यभात्यप्रव्यथायछ। ते मनुमवेज्व वोष्टियाण्युका रेखा सरन्मने चतुर माने साने रतत्वभागना उत्तर का या परमार थ श्रिषाय एवा तारोय एक रो॥ १३॥ ईता श्रीचतुरत विकारण ने १ उत्तरका या प्रक्रण न यमं ॥भाग ॥ द विवारमंत्रे ॥ देश विवासित रतत्वंत्रे मां ध्वेकारण प्र मित्राचिद्वेष्ठे तेन्त्रव्याक्रततेताराजन गर्द नाण्डा में निमाधारणाशान्त्रायाय्यवनरनाराने याय्ये भेषितायाधारणाशान्त्रायाय्यवनरनाराने याय्ये भेषितायुमाणे जुने नेतुं नारोयण कर्यु छे॥ जेते

स•स्र धर्

प्रमां गेष्ठतमां ताधातातमां सर्वकाल चाले हे यमण्डलमान क्रिक्स मित्र प्रमुख्य ने नियम गण्याय ते साधारणका रादरसा वे लाखे । तमागतणायवासयेषु व तमिनकरे।। यहेवा गयुष्ययाता स्ट्रान्य स्थाता स्याता स्थाता स्या स्थाता स्या स्थाता स्थाता स्थाता स्थाता स्थाता स्थाता स्थाता स्थाता स्थाता गयाम्य यामा अप्राचित्र महास्मर चेया मे बेनावा ने लकाने मालाने एक रस धातुंकारे नारे सरव मुधार्ते ज्णया । सापछी जदाकर वा जश्येतीत यतेषुकारेश्वरत्त्रीषुरसते व उ व आगल्यरस्य सरहा छ। ते वे रागता कु धारण करी ते स रवा। कार्यायं छे धाते वैरागधार ऐसुन कादीक ज गार गा आ हो अंग्रह्मी यो प ए सुरे वय ऐ। विरता पण्राजेतावासयेवासतातरनारातेभोगनाग ह्याधीन्मते एके कते सांमु ग्रास्य य रसदे रवतांष जेवासेसन्प्रस्तरतारा-अवतारादाकातेज्या अज्ञावतते मतेवा सचे पु खुता ताता है। जे मजी त्राध्याकर समुसे तेतेतामे से सायाध्य जाय नेहावेपावने परसेतो छां एक माटा से धी बुप तेयुकारेवासेसतोरसनावतपरयंचनाती नक्रमाद्वारामकत्मत्यमेयुताने योत्ये तीर्व सहाततथ्यतास्त्या।१९॥हाने स्वारां क्षतोने नासामान्य मासने नो वंधन ज धाय ने मारी बैरागधराने तत्वभाग एकर सक्र शहे वारि जेनामग्रेने भगगरहाने रिशयोने तणार्ति से शि खुता वाते ने तो ध्वार हा यो ने ते ता हा है ते खरें गजे में जे रहा छे ने के ते यो पा वा पा है अपने के ना गजेमेजेरहाछेतेमेमेलवादेवा। गरसेत्रमा समामुजनमह्यशास्त्रवाद्या। गरल कार्य क्री

A

a

न्र

TO.

ला

क

ब्रा

不

यु

क्रा

ले

47

47

लें.

जार

मुत्रमहे तारे तणा वते ना भाग नकरे। पछाते ना जर पुत्रविषेतास तस्यव व से १९५७ सते स्वास जो त क्रवेत्रत्र थायतो काहेरयणकराने तेतत्वभागना। क्राया नमरेते ने ने काया येजा वयं यन यां मे॥ १६॥ पर्वते हे तो घुटका नमतंत कत्ये ना धायाए सारु जे रतेपरमारथ कर बोहोयते ऐक्सासाधंत कहां छे १०॥ एवा युव्रताकरतां मुलचनराषवाजे साधं तपुताप चडारेन्स्र तादीन्स्रभंग सन्त्रता तुंभजंत थाय गपुकारे ई छा छ ता नां १ ता चो द्वा ते रतत्व ना उत्तरा क्रीया एक सन्कता तुंभ जो त करवा सा सकहा। एवा क्रमती संकत्य भावता मेर्ड छा जतार हा छे। १ सी ते तारंजतादाक्तसञ्जलतत्वं भागत्युतमांत कायावु तातीन्मातायुरोकरे छ।ई छ। वातातत्यपरार्थाते मीत्वभीत्वकुण्हा वात्रे जाता ते भाग वुमाण्या १ वीषु बुरायताचे ते मारोरवर युतामध्ये ईछा युतानां त यपसारीसाम्ग्राजनोबेहे हे मारो तेई छा जुतायो मात्रादशापो तात्र ने न्याद्वा में हुकं म प्रमोशिका रशा षारायेमे बुताये ते उ बुत्यां जाया। मारोते जनताय युत्र आर्थ तार्था नारं जन ने ने ने ने ने ना का जिल्ला है। क्षयायुक्तण्यात्रवस्य ॥दियामाग्रायदिययुग्रंभते॥ । हार्व १कास ग्रहात व्यवस्था माहात त्य प्रयोग् कथा मामानाज्ञ मानानानानाना कुमस्त एतीतमाह तिवजा एवं॥१॥ एहे ता ऋत्यायो या छ्रेत युमां एस भारणाष्ट्र ब्राजिन प्रथम सद्य बक्त ये छे। हा बेते ज भायामी बुभस्त जे छे ते कर वोग्यारे च कयुरकर मधारमेर्दियो जेनुभकतेष्ठतापरहस्य विश्वास्त में तरहा छ। जिस्से युग्वतो सकतत्वं नुं नेहें तावर 

क्रीयासंमाधीमं कत्यमतादीक जतायुवसंचित कायासमाधामकल्य माम्याम्य व उरोक्तराक्षे जायद्ये। ई साम्य ति अपर क्षेत्र माम्य क्षेत्र स्थान जायवारिक्षावारम्यार्थिता देवेनायते स्वार्थ पलमान पुजुतातारहे। कि र्वायल के रेपुकारे र्जायते न्याय एते मालंम एता य है। ते सरवन रजायामान र जान वता वता वता वे के जिस्र के वेखं जतमांत जततांतारहोष्ट्रीय वेए कतवते मायानेक लेन्स्र ते एक प्रशावपण्याले वासे स तारेवी चारकर्याका ता जा ता के र आसने आहे वाहाचेतेनाचारधारताचा तातारवांण्य पदनो पावे मारोधाउरता सारुदंमजे प्रण्यव्ते जरवाति मारे हतेवारवेव सउ।शाजि प्रणायं मसाधतेका नेपाछ्तछणानासुन्न नेता ज्ञानास्यमपंतपर्भाष तेन प्रण्यनुसाधन सदगुरु एतक्ष्यना व्यो होयां मापसकरडा १९ वाय छोते कुंभ कुछा रजा गयुतारे रवतत्वता ऋषादे हमे पायते क त्यामां स्मावे नेपछोस्नातंनयद्। १९। नेवाचे हेतुं के हतसभा नताउपजीष्यमग्रहताउपासतायेनम्यंसतत्वप्र तीसहातसदयदने यो चे॥१२॥यद्येते नमारत्याम यातिकरताउपासताती माने धीना ए। मे हेर्ड वातारहे।। स्मोरस्योक्षनतुरागते करनाउषास्त्र क्षवधाजाला ने॥१३॥व्यवधारहा तजे यरमकेष पदते वासे युवता रायाने यो त्ये त्रास्त्र ये सन्ति। नारकावराचातवानसरवकातने हे नुंकरंति माने करीते के स्वकात ते हे तुं कर है । अरीते के स्वकात रचका ते हे तुं कर है । अरीता तानमाहा त्वना च १० ।। ईता श्रा पुकार के के के श्रा पुकार के तो ते के से स्वना साधार एका प्रवस्ता माने माने के स्वना साधार एका प्रवस्ता माने के स्वना साधार एका प्रवस्ता साधार साधार एका प्रवस्ता साधार देखारां छ। है। जेरेना वज्ञान वज्ञान का समा

रा

77

9

ह्य

वाविद्या हा विते हैं नो भेद उत्तर देखा रा ने हे हथा या र विधातिश्रवणकरजो जेयुकारेयुकास्रव्हात्वयुता वातीत्र माहात्वेकरो ने वाचार उस्य मां तथा यते वुं भवारताय झांतजण्या ३॥ यण्ते कोईकाते चक्षस वधातान्त्रादीमध्यांत्रत्री कलामांन्त्राचेते चुगतां वहंमीत्यमात्यकर मजेवास्य भावतायायाधी वयागकरतेसतक्रांम युद्धतादायेतत्वभागना प्रमयोगियंज्ञम करवो। एक भागदे हते वास क्षयासंज्ञमञ्जनाधायनहुमेश्रातसंज्ञमकरवा मारुव्रासांत चक्षसत्वन व्रुताव आहा वेन्त्रनंगनी पुषुतास्वरुपकां मते वा व कां मातुर नप्रश्वं उसं मराष्ट्रीतिद्याययाययायया विवासिते कार्याया विवासित के नांत्र पुकारता काया ना संख्यार छोवर करेते नांण यो। प्राथमधारकाल अवताय छवर पायातितान 34 गावसहातरातातातत्ववाच्या उसमाण्ड्यापाच जीतीन्मंतरन्मं सचीनानो सहतु सुनुतमान ज षुकारेच क्षसत्व जुण्यभावतास्कृततान्त्राया 19 गिन्ना थी। भी रेव यो चाउवा राज जा या जुता नुउत्तर 30 थ्यातंत्रमपारकष्रजोजगेहाचेईछारवंजमभोग 34 भूषकास्वरमणार्थातेसज्जावंतव्रतायेन्द्राद् भियाततुंमायन्यांशादाधं तेसरवतत्वभागसम 3ch चितंतपणातेसावागाः आजेयुता साजावंतसक W g मिल्नु ना वां तक रतारा ते सन्तावं ता। तो ऋषे स A मिस्ट क्रायाने माध्येजां ए। व्याहा वेत्र सम्मायां निर्मा भारवयुष्ठताचात्रीश्चामादामध्यातस्रधातेन のできる भेगारायान्येन्तायाञ्जतीन्त्रस्तार्खानायामा क्षेत्रामाण्याते न्यसं यञ्जतायो न्यास्थात्र ते जा

न्माप पोत्येन्त्रं स्रते वास्वस्य स्थाने स्थ न्यायपोत्येन्त्रस्त वार्याद्यान्य सरवेकातेषा त ने उपने रिक्ष । ए वाधा ये स्र रतत्व भाग जे के स्थित नयुभागार्थं समयुरणका जकरवासार जकरेला य नयुरुषसमय प्रताय युष्य तीयु पं स्त्रातिया यूरमे त रतरप परमन्त्र र प्रसाधंत्रक र वामां न्यर प्रसा ग्वां छो १९ था गमा एके ईतत्वकां ईन्म्य का रण्छे रा पजोगर्नं करतारे करेखें नथा ने युत्तस्याधारा ए तथाउत्तर की या ती शिर्ती यु यु ती नम तु म व के हो। यु तक्षवं अजो र्तपासी जुवे। हा वेते यो त्येते अस्म र शयपुरशये जोवाते। १६५ वितान नामी व तेवायाज्ञ ता कराते तेजेना युग्रता युना प गरोत मसेपणम्मसतेष्राष्ट्राष्ट्रशास्त्री साथ या वा वा व कारदेवदांतवमात्यवतरतारास्त्रव छते छत्राते व करवाजागन्त्रान्त्राचाधाराक्र ३ ११ निसामां त सेससरवसंसारनेतरवासारुउत्तरऋगयाप्। गुरुउपासनाने यो तानुं ना जरु या kरी नथा सन् है नत्यक्रतारतीगतीजाण्या ज्यावा श्वते भने उ मक्षयधायगरेवादेवाउगारशारताम्याम् हैतकतचक्ष्यत्वादश्चलरक्षाया॥युक्रण॥ ग ११ ११ १ ति । अस्म कता नम दैत त्यक्ष को ध पंची ण रेषाञ्चतीन्मारीनाज्ञास्र तक्षित्र व्याप्त स्वतंत्र वे प्रमयज्ञतं प्रमार्थसाधन उत्तर ऋत्या तीरी णतामनवर्मक्रमण्या धन उत्तर ऋत्या तीरी णतामनवर्मं प्रक्रणयुरणस्मा है।।।। इत्रीष्ट्री क्रण्यसमुद्धारभने॥ हाथे छमाञ्जतायासकर्ष र्यमलाने नाजपोता तें स्व रुप जो वा नां दरपणि है। डाबितनेवासे परार्थनत्वभागाना यान्तरवीते व तोकाचनुंघरजांगाउगम्मने याक्रयाने प्राक्रिया

a

वाशिशास्त्र वर्षे वर् वित्रणाय।।तेकी उतारेस जाणस्वरू पदाव्यात्रात्यत्र भागिताल परायपाने से ते एउ छे। हा बे ते ने जीउ ते परम क्रियाचितारमत्युध्यमायनम्सरपन्मोस्य खबाधी भागमप्रग्री इतिन्यानंदकरवी नेपरमस्त्रमेदस्वभो वर्षा हा बेतेस्वरूप जो ईनके बो ज्या नं द पाया। स्वानो वर्षासारकरोनोतांदछातकहा जिसकोईरा जानारा विभागति सुद्रायक प्रधान प्रधान यो ने एक द्रावसे उत्यं म कारते हैं धोयते पोतानी गारापराहा वेसा क्रमसंक । अरण्याउपरले छे। प छेसर वन्त्रातंकारधारणा वितरयण्मे पो तानुं तानम्यवस्य वस्त्रामस्य त भोशितरएमेकरेछ जेढ्माढ़ारास्वरूप समान प्रायोकमेती ज णातान था ने ह से य ए। नहिंगादी। य ए। द ब्रोक्सारे वागमा ग्राह्म हाते जुणव मुं जो मांक वा वेब षरेलुछे॥तेमांस्वरवयात्रत्रेयस्वरूप मवनाउमायाकरतां। निमताउतकष्छे एउकरु क्षेत्रोबेद्ध वसोक व्यावस्तु नान्त्र र धंगाधाईर हाछ तेहे जिमागर स्वरुप समतान्त्रग वस्ते। १०० ते वन ता बी किर्तामने उपमालागे एवा ज्यानल मेन हो। एउन मचाराने ज्यानदेषां माने वलाके हे छे॥११॥ जे ह हुं तो भाषं॥ एरसे स्वजात परोकरातेमां तासाधाः विकारेन त्वव्रताचारु यद र य एमां ता जरुषा १२॥ भी जाताका च में घर धकार च सजा एगा ती राज्य वेत माने जो खो। ते न्याता वाता वाता का ताता का राजा का राज 74 हैं भूतरमेल क्षमा ता उपमा खोता ते मां ता ले छे। हुई। हुमने भाषायामानाउपमायातान मानाता व्यापयता अत

वास्त्रमाग्रिय हो। तवा नाम ने ज्याम रति लेक वास्त्रमाहाम्म विश्वाश्विष्ठ।। यम्म त्रामाभावना क्रियामित्रामाना विश्वास्त्रमामाने पद्धाने प्रतीपां मना ना ना के के प्रता के के प्रता के के पद्यात पतापाती तेवरी। हा वेते प्रकारे ते जरुपन अस्यतत्वधात नहं छं एम जां एग ने नमत रते हेती जेतीजकरतारतेषता। श्रीनोस्नोधवरमयुरुषे क्रमतेत्र १पतस्य रबाक्यां त्य देवक्रमतंत पतामात् उपासता कर वा बलायाहता । १८ । प्राप्तापत जयतीसमातसोभनानधी। व्यसजेएतोन्न्यापना जजीवेशीनमनेनमाप्नास्वरुपनो तोद्ययप्रतीष समान्यनमान्य रूपा १८ । न्यनं तन्त्र पार छो हा वेते तानुन्वातंतपरमगुरुउपास्वताने संगेळरीतेभा न्म्रतोकाकद्राग्यस्थरयजेहेनुन्मतीस्नांगुन्न षध्यार्गीतेयतान्त्रायता परमन्त्र यसा ध्रेसंग तेमाग्र छेहेततकरीतेकर उपाग्न वेप च खुता सहात त्वष्रका रउतर नताया ॥१॥भेदस्व वतस्तारे संतर रमान्महोसन्सता ता संबद्धमे छोज ग ते विसे बुतीमा वन्में बुर उत्तपंत्र प्रयापित्र । ए जुका रेतेते वार नाजन्मससमेतकसो। निहेमे यं चप्रवृतीर्व पण्कलुं छो। हा वेकारणसमानका समिभावता येरधा तेन्त्रसकाचे सक्तताकार ए। तेरेप्रेजी नीतंत्रक्षणकराये॥हायेते स्वस्म नायास्य मसंख्या ने हें नो खुकार सक्ता म एक मास्व गगतागुंधनेवासेकहा। तेन्त्रस्ताम् वास्तिकत्यभाव मेउतवंतनेलये। वायतेनारीय ए। रधाक रेख जोतेष्रमाणेन्स्रसमेथ्रतारवरमाञ्च्यस्तर्ति

A

d

7

A

व

20

कुं

Z

4

Ø

नु

जी

था

2

मा

सा

न

उक्

羽

हार्

त्रव

न हे

FILE

याव

ZIII

मः ज

त्र क्रीहरास्त्र रहे हो। २७॥ जेकरता रेस्प्र व्या तापी प्रतिउपजेलये पामे एहे यशा ते जुता के जी जेमको रेन्स वीते,पोताता पती संजं में नम संख्य पाय ते युकारे २६ संतता राजपताकी वसका रता माउद्या स्मास उपरभास स्मा विषये। नंमस्वराये नायुकास्व छोने सूदेखनां थाय शातिहे वा परम सत्या च उरो त्रमस ने जुत उ ॥ ने हे मां रमञ्जा अमेर्ने बार बस्तु पोरळाषु मारोञ्ज मधनां जा यादिनी ते पूरा पोता ना वा यत जोई ते त्रवं ममास्यसंकत्यकरे छ। मारोकरवाजायतोन्मं स प्रकासम्बन्धतं न प्रमाधिशा नम्मानमं सने नो जेकरत नाष्रकारतातंत्वकेन्त्रंस्तार्याकस्तु ने देनाधान भयते हेतुं का र ए अयं स के ई युका रे स त्य गता वाल धीवता उ। १३॥ जेन्म् सम्मेक्र तातुं कात करे लुता 7 मार्थ मपरेगा जे बगं हां के ई युकार मां मत्य पोरवा ने वा मानिमनेतेतत्वने ब्रुताव वृंदिधी सुद्ध रुप युकार जैतीषण्यं मतहा निसामासे तो जेन्स्यते भास 380 शिजे वृती तेतत्वना संसे गेकरी ते विभान पर्शित्र नेतत्वज्ञ सावायरवातीतजाएमितेपोतातार्घाय भगातां ऋषामाविद्याराते द्रवामोगवद्याकायो। द्रह विस्रस्त ना दुखानो परमस्त ना एछ। यए। नत्वना श्रुताष्ट्रभावमां गुसाताधाचात्रोतां म्यारोकं च विष्यायाद्यादेशाने एक ग्रेसकाये नारे स्नोतानु ब में साते छे। पछा तेमां या सो जुण सारभ वासगाव भावामायागरकाठात्रे छे॥इटाहावेते युकारेयां है। भेषारवावेक छेते हेरवाउद्दावे तोनावाध्यसहन्द्री भारतियान जा या स्थान का स्थान का स्थान के स्थान

समक्षेकरावेनामज्ञकरावेनाचे एनाना । पद्यातेन्स्रसते सोतुत्तव एता पारो एताता जन्मत पद्यातेन्त्रस्त्रस्त्रस्त्रत्यात् कां साम्यागरने स मेनावच्यमकरान कार्याम्यानात्रमा । करातेकामायागरूप्रचलक्षीतेकाकाहां धास करातकामायागरणावरे। धिराकराने जो वा है मजी वामाकलम्पर्यं तद्रसावासाक्र उत्तरम यानमतंत्राताये दरसायादादाधार्थि। ते परमत बुब्रती उजा ग्रतयो त्वेरे है वा सारु। मा खे ते बुक्ता ह त्रमाचरायेतेष्ठतातालेवी जिहेण्येकरीतेषरमा मेवमपद्ते॥ एए॥वामेषुति। ग्रापनी अरवं उरहे हान्यावीश्वमो मांन्यवतरतारी जतते सरवष् कारेजाएव पण्तंस्वरवकालन्त्रंस्वरवनां णाने ।ध्ये नमारीमध्यां ततु छतेकां हां सुधा जे चरचरत्वलं परायधदेववा मुतावैरार सक्त मान्यवजन जसरवनमालरवां एयपरे।। ईवजे छतेमांमा नेन्मोलवेषण्तत्वगतामान्य जेवादेवते तही केम जाणाये तारे मां न्य व ततु ते। ऽ । वाषे वीरे सन्मंसन्प्रवतार धारणकरी है नेन्प्रतंकारी न्य वाकार नेपाती कमें धाराने देवादा कनी प रगतीगाईनेगया। छटा। एषुकारेश्वववाश्वेदशि उद्यारोमांन्यवारुपारोक्रउद्यादाः प्रयोग्रीनिश चराचरतोतामग्रेताजतन्त्रेते स्वरुपस्य ति । ज्ञाणवामाञ्चावे हावे एरेहते जे त्रमस्य ते प्राप्ती स्वरुपस्य ते प्राप्ती स्वरूपस्य स्वरूप प्रशामिडरतामहे वादाका-जमाद्यने एत्रतानी प्राप्ति ने वानीमास सस्केल के जमाद्यने एत्रतानी प्राप्ति वामीमास सस्केल छे। तेसार कायाउँ वस्ति। वस्ति। तेसार कायाउँ वस्ति। वसार कायाउँ वस्ति।

ă,

**T** 

गातिया गाती जीया गुता वाते सरवयुकारे सजा (पर्वाक्षाचे तेस जांग पंणातो परम बासेस असे ब वित्रिष्ट्राय्यातेमतेस्र रशे ज इति तेम ना युताबोध वर्गेना एए बेडा। ए युकारेश्ववण करा तेश्वो ता जंन प्रमकरेछे॥ ५३॥ जेयर मगुरुख ने को ई रेकां खेयर वित्रमन्त्रंसकोसा मेयरण्यकर्या छे अतेन्त्र लगामं जिते ग्राधार् कोधते कासे के वस वेता ग्रा वास्थातारो पर्गामे परमन्यंसर जकरतासरवह पापतकरेमाछ। लारे एश्ववणकरा नेसं खेउपजे क्षेत्रंताउणकरात्रे। ५५५। तारायणसामतवो तारे प्रमां भवा ते परमगुरु पोत्ये सरव ते पण्ड तर चित्रेप्रवणक्रामान्य प्रोतानादावाध्यातात्या यतंनारोपणकरेछा तेद्रष्टांतेकरात्रेकपकाञ्चण यमरीदेखाउँ छो छो । जसको इतर एक त्यायकर भगएक देसमावसंछ। तहतव सम्मायो तेवरा गायंत्राएकते। भटा पाता तामाताएट साएव गामारहा जैते जेउल फरहा यते ते ते हे जो त्या य भगतेषुताउतरनमाष्ट्रास्य तारएकवत्रय कागा मगपांचछ जणको ६ र रो ले ६ ते त्याय करा यवा मार्वितागामती मागो रेन्द्रमा व्यापते व्यवत्येताव विषरे।।६भी तेमरतारा यते युद्धे छो जेत्या यकरा गर प्रस्याहां गांम मां यसे छते छते छते के र्गां भगरमायां छो। ६१। एउयु धंम एक बार्माला मित्रेषुष्य । नारे ते जा रकारे जे ते तो मरागया। एउ भित्राने कर हा ने गाममां जर्ये एम ना चारा ते।। भागित चालाते वाजा आ स्मलाते हेते बुछेह मारेतेणाये कार्यं जे ते छेषणा ज्यां ध्याध्या छे।तारे मासवासय उत्राह्म न छ न ए जा न र ए ए येतायमर

गवायेउकेमकर्षुं। नारपछ्नमाग्रसं चातानां व गवायं उक्तमकर्व गायं तो तेकहें जेते तो न्यां पायं का रिक्नो हिल्ला प्राप्त का रिक्नो हिल्ला प्राप्त का रिक्नो हिल्लो हैं जेते हैं H-34 कातवरायपाय परियोगको जातीका जारितेन्या यथे 85 मायुरस्ते माना जे जो या तो स्त्राम्य राख्येन्या व ६६। वचतनातातात्रीयराउतरहे छ। न थामरागा नेक्संधवधारमुगायण्य या । एहे वाजी इति से ग्रामिक्सावेलायुष्ठेष्ठेगदुः। जितमोतोष्ठोत्स्रके न्मावातेभागोसे पुरुषु तो कते। तारे ये उवपंस बोह एउ व्रतमांत्रताय कर नाने संभावा खुं दिए। नारें। हेर्नेतेतोसरवेतमोते बोल्पालेन्या यनुछोतिष ग्रवेषु थं मची खाते तो न्या मारी नमर पंगा दिली छैं। न्मासंसारमां न्यमोएनमा खेन्मरत्री यो परं णार्थ तेमां छ्छमास एक एक ना वाया क सा छे।।।। तो मारोहा सत्र थो मारेते एये कड़ा ते वात सो ची विख्यम च्छा हावेचा जा ते हुमारी कंत्यामोही चे विश्वातर स्वात स्वात साहत या या या व नेहते से जो खंते लगतनो जो गतथा न्या वतो तेव मध्यक्षुंते साच्याध्याते हेते खेल्यां ध्रतोत्रा मवेषेता ग्रांमणे के हैरों ते कह छै। जिन ए। ग्रांमण खेतरपासेछ।।तेरमेएक व्यानाना जमान उवाब अधितामें त्राधातते देंदी करायाद नेप्राच्याति वाचाराजीवंत्यारे छेह्ना जमान धरमादाती क्रमेक ना अधार कहना जमान धरमादाता से से से से अधार के हे ना कि धार है ना कि धार है ना कि धार है ने हों ते थी सेषराउत रनान्त्राक्षां मासने हेने तं रवे हुं बेहें। अधारह संमान मासनह ने तं रवह बर् श्रावेशिवर रोज अमाला हुं भे सदो हुन ने न्यू रव

AR AT AI

70

ना

43

973

नेट

स

分

दार

यह

पा

खं।

वा।

BR

स्न

ज द

गट

कर

छह

नाः

केंद्र

335

वत्ष्वरषाईलाधां पणाउधमाताषासे माख्यतारे रक्षते विस्त्रमाण्मा ग्यां। त्यारे त्या यक रता। श्रातेष ॥ यरणांमा लोको एयुछं जे स्मा वडामोढा थया छो व्यायपणकरो छो।। भने रह्छाने इधके म माखा।। नियायकर तापुरसके हे जो ७ वामे तो त्याये ज दु प्राम्बं छे र उन ते एमां न्याय तथा हा वेते कहं मात प्राविहतो या लक्छ मासे र अते माम्युं कथी नरे क्रिनथ्युं मातानी ज्यागलमाहाक श्रोद्य पणुं सु तेन्य मुद्रधायेतमोयण्ज्यवो। नमने तमारा नमागत तो प्रेष्टमायकर ताष्ट्राटिंगीतमातानीन्यागलतोस एयससुछं।।एउसांभतानेसतमां ताने पो ते जेन्या यक्राववान्त्राव्याह्तातेना न्यायकरात्र रेताद? षोतातागां मयुतेगयां एयुकारेया स्तारे प्रष्टांतक ग्रातेनयुकारे परमहस्रते खेयुकारे उपमानां ए बाद्याते वया ग्रम्भवता रथया ते प्रणाम्मास को स विषक्रतार भामा छाएए एउ जो लेला छे। ले जा बते र माताकहा । द्रातियाता नाईश्वर ता वोभव नममोम विषय संस्था क्षातन्त्र नुभवा छाये।।एहेउ बोला ग्याष्ट्रीहाचेते हेता उपरांत जेन्द्र बताराद्व के ते छोध स्रामात्राटधाप्रमदाना नमादीसमगुरुजे नमुस्रस्व थेनां ग्रमहाकते जा वां ना नार नार लक्षा धारस्म षानेजेतत्वभागना ता दस्याताम्य कलगत्यमो भेदस्य विषय का सहातदातार प्रसाध्या नेकोब लयदन्य वर्रसाव नार माहो ते कर नायु बुध्या है। जिनासम ने भेच तक हुगा। ए वाना यो त्ये ता जा का ता सना तं ने वित्रमान्त्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त् मिनाईकोईकार्यातकालेयणकतसंमध्रतेन्त्र वितासिकारकारमारा परमात्री सतीज करता तीर भित्रेगतारुषा प्रमास्त्र प्रमाणानेष्रतात

वेकसंगण्यकारेकेवलती जयता हाता हाता हाता है। यक्षा एषुकारका तात्रहरूप जाता विभिन्न स्वास्त्र स्वास्त् सरवहेगतारूपस्य अस्य तेमांत वा जोगस्त नम्म्यवंगाताक्र पंचे। हन् तता ना ने ना मना क्षत्रेते प्रमुजन ने तका र उत्ते के जिल्हां सकी शह मना लागत मछ । अधिक निते नो परम पर्स महानमन नम्यु स्तानास्य स्वाम्य मामातुमाणमाना नामाना विस्थायमा तीकरताष वासे षाकत्येकत्येषा हर। मागाने ते छे माता ने हनेगवा स्वार नेन्त्रतारीसाध्ययतितासर्वकालयरमरस्यास् तेउत करेक्रान्त्रान्मतेकरतापणपोतातानमस्त्रेक्षणजव णानेगत्रभेदनासाणाधरथातेन्त्र दरायान्त्रायत १०६। जनाय श्रीधंधीषधानेगानासांम् अवजीकराने अवतें गंमगंमन्माजातेने वनसेत्यायकराते दरसावेशे तेपो मासेपरमवासेसते काताता ज्यागाल सद्यस्य सेपेहे लसस्वतम्म खंउछे।।तेगतागुहातेन्यायेकशी वक्ष र्धाष्मतत्रजावोत्ते तार ब्रुखांउते वा स्व धवाहे। शुरा पासेन्प्ररवंउतां तर्श्वरन्त्रा जगतता जनवन्त्रस्य येले त समछो। हे आते परमदाच्यातीत नुधार साह भारते रूपार लरूप जांगा वा। गुष्ठा रेउ महा मेर रुप्र स्व अतर । क्षत्रहाते ई श्वर धा व णारिता अने स्ट स्व गुण प्रमण सने द 

ब्रहा TAG नुसा तर्वे व

ने गाः घाउँ युप

वास्त्रांश र सी पहिल्याने युस काय तो पता बार से मत्त्र मार्च तारवा स्थाया निते मनोरवी सरप विमानी ती। १० थाते हे तो छोण छात करे छो। ते मुंबर रेख र्वेषु तमेच देखे। तारे तहे ने च नस्य ता नाखुरा जाए वारी अपासराजे छो १०३॥ ते गुराचे लासगस नेस्व वार तिल्ले कराने ते हे नं जे हे रउतरी जाय छे ते युकार प्रविषय पदार प स्वाद वासे जना जाने का ने लाखे ल वाय आग जा ता ता वा वा वा वा या या या या वा मां न्य विसेससर वन्सं सर्वे सारगुण्ना रगुण्क पाति क्ष व्यद्तुचदेलुछार-४॥तारे यरमगुरुए जकीशाहावे विश्वतराज्ञायवारव एकोउपायसुक्रे।।तारेषरमगुक नां गाकोईगारोडी जांण्या निवनस्पतीताबुरीसुंघा ध्याग्रवेतेन अस्य सम्य यस्य यस्य सम्बद्धा यस्य स्था विवसान्त्रत्य ज्ञाताचं तन्त्राय पान्यं सच्छाये एउ अविषोतातासजां राजुती भावता रुपातास्त्रोता १० आवा विषासिकारे पद्यतेताककरता ज्यादा प्राप्तत मक्षजणवेपोत्वे अत्रसम्य वृते तो पद्यास्य गर्थय न सप्त हो। १०पासकतारुपक्रातार्थस्यतातात्र उद्य बितारे ते एोक सने ते पदार पवारव एस्वाद् । नम्मात ष्णवाषचरेतुं नाजञ्जल तेजा १० लाते तरतकाल व असे जाया। एवा पर मकता रूपा नम चल बुरी जे स क मतेष्रमगुरुष्ठसगद्वजेष्ठास्य इति॥११शीतेताजस य जाण्यतारुपानासापुरते नासे तायुवीधगुरुणव विश्वास्तिके हैं रउत्तरी जाय तेस चेत्र ता ११९ अधि इति विश्वास्त्र व्याज जातते के सम्या से मासे बारंबार भजें विश्वासे ते जकर अने हैतायोग युक्त मतंत्र कर्य व्याप्तसंख्यां जाततेन्त्रस्य पानः विविधितं ज्ञाकर अनिहतायोगाय सिन्धाय सितायरसे विविधितं वास्त्रय पारिश्रशान्त्रमाय एति क्यायश्रम् विविधितं वास्त्रय पारिश्रशान्त्रमायाते युद्धता कतारहे भूतिम्मवालभागयोताने न्याधान युन्नती कतारहे भूतिमवर्षामागयोताने न्याधान युन्नती कतारहे ब्रुतमां तनाहां सुधानावा चार्मानाहों सुधानाहों तायण्यसमातायहजाण्य सिर्धाताताकप्रमात तायण्यम्मातायर् । त्यायतस्योधभावण्ये । ताथायते कर्मे वे । ते हे ता व चतस्य व व व व व व व व व व व व व व व व व व नायायतकरूष्णातारामानीनमनादायदनीयाप्ता ।११५॥ हां युक्त ताथ र ते से स्वारती त्या गर्करी ने नाह णुंधारणक ये हो यतो ते प्राप्ता वा तासक स यता खारिश्वाकां गमरखं माराखी नमहोते लेदेखादेखा पाजोग लक्षीहोय तेला धत्य तेस मांत लेवा ते न्यूर गतमां माहादतादे बाउवा साम्जा ग्रां शावा । पचलागकरीतेउपजोगसुंकरगो।जेहेण्येसत्य मंतरफ्र खुंतहाते तक चुंत्रत मते करा से वंत्रम रांमनेन्मरधीश्रदीरं भाकमजनसुधादेषाउउ नतेदेषाउया एकां तमिश्यां त मजंन करा ये। एमक नेबेसे।११८मापणताजरुपताचाचा तातासकता त्रााती जेहे ते ज्यादी मध्यां तत हुत ए स जां राष्ट्री जा त्वस्वाद्युवाहते वासेन्यतासेन्य वाने केष्री उताजायारिश्ली हा वेजे हे खेळू ज्ञ च प ए खोरीक न्मनेपरमार्यनायणजो अनाक्ररी। एहेवाजी तरपथालुराईने अधोर मेय आवा जेवा थईरा ताहारे ते हे ते समस्य अतयर मगुरु के हे छे। अपहे अस्यते जा वतमे खुकरवा म वसांस्वार छो औ वाबताकरीताध्या १२२ । भने ह जुन्या गर्वे व्यमेधताजसे जासेन्प्ररेष्ठयं चते वते वे रहते ववाको अदेश ने पत्यागा तुंधारण । १२३ वर्ग ने करवा ने हें होते तो ना ज्या चराने भरकी छै। 子の一日 वसाने रिते संस्के हे लेगा ता वांस धरते । १२६ प्राप्त वसाने हेते संके हे छे। जो माहारो को धव यन मासकरातेतेवचनगुध्रत्याहाध्रम्याहित्र्याहाध्रम्याहित्र तेहेमाजावने । १२५ । प्रमाय वस्या हा यम या । १ 衣 孩

a

ही

A

动

9.

छ।

FII

रा

100

विषय वितारते जावध्य वाले तारा॥एउभयेता विर्धा प्रशास्त्रद्धा पण्त क युनि न प्रयुक्त त्यां एन श्रमी कि ।। तारे एम के है सो जे न्याय को न्या खुर पर विष्य स्थाधमाहाद न उन नमा पर पा पता पता। अप्रतात जेउ त्यंम युकारे कारेन्स्र मोनेन्स्र नेतन्त्र ग्रिकत्याणमाध्यसंस्यारे तेहेतुंकलसुरह्यांश्यत भूते उपरेसातो युताय वां गाये माहा ने महस्ता कही भेरेषु या के सुं। तारे परमगुरुव रे छे। जे सर्व जा व प्रमाउषद्स कराये छाये॥ १२ भी ते काले जान त्रवतायो का तमास्यरहातहोय छो। त्रमंतरमे ये मंड तक्रासहाततार उपदेस स्मापाय छा ये॥१३ बीयण ग्रपदेसमंत्रवतसभ्य गुरुणकरोनेते हेर्नुसाधन क्षमात्रतेषुमाण्नधाक्याक्रास्यमा तेमारेफलधुप र्षतिताजपरमारिश्री। जासावनं मधायजां ममाराजुं क ज़ीरतेषुरसते हे तो उपभोगकरे छे। ज्यते बांड ब जनमतमान्त्रयपण्यत् छ। लेबा उक्तमलतेवा व ध्यामाम्या बाता युत्व विज्ञायते मायुरस्ततोसा स्व पार्षे शामसमगुरुलसका धलस्त्राच युनकर असतेतेहेतास्र प्रद्वावतथाकरास्रकता।।१३३ गारोतेउपदेस करे तो जावने ते है तो दो स्व कं चातमा <sup>1सतगुरु</sup>तरपनथामासेसाधुसंतसजंतनरता णमवाचारकर १ ज्यो॥ १३ धा जे हे ता जुता ते बार ग्रसन्त्रयमासलक्षनार को बोधकरेलो जाव गोताहान्सारत्य र तुकेमता मा सेसक्षमारहोग।। विषयमध्यसमास्य सम्माध्यामान्य सम्माध्य सम्माध्य सम्माध्य । एरलासार समारत्य के दे समाया मित्रवामगं। १३६। यरमध्रेमधारणकरोते परमग्र W. 200 क्षेत्रसंग्रन्मता अत्यक्ष्याने ले जी पद्माते ग्रा भाषाउँ माना साध्येन प्रमायसे ते॥ १३ श्रामाज्य तास

नांशकमलहेत्रहेतुमांग्रसीतहेष्यंकरीते काला जांगकमलहु छु । जांगकतस्य । १३८ । हा वेते जाउष वायसम्बद्धारमण्डस्त्रस्तास्त्रास्त्रच्यत्वउपेवाध्योषि नायुक्षप्रमणुक्षा नां एक्नोशित्रकी ने तीन कर 83 अयुमातुमथ प्रत्य प्रत्य देखाय छ। एहेने यारजोईने अध्ययं तातीरसकतातुं योते सेव रजो १९६६ । ते परमगुरुके के वत्य पुरा तंत्र भजव मारी एमश्रवण करीते तमोकेहें सो जे हमोतीता षक्ष से रिते पोता तुं रुपते ता ज करता जा साते भा करायेछीये।१६१।।एवंकेहस्ता ता ते हेतुं सांभवे। बोध्यमां ऐम्जनते रेहे एं जिटलां व चन नाताचे तमातकरसी तेरला सारधार संस्तारमा १९६४ वाभाषदाधिता नमंसस्य वन्त्रादामध्यांतस्य योगतथसी कमतेलक्षमां एएउते य च्छा जो वसंत व्रतोते।१६५३। प्रम्तताताकाष्ठ वरुकाराते जेरलाचा तेरतान्मं सर्वे पाछ्ताज्ञात्मोत्ररन्य ताकरेता गष्यातार है साते।। क्रमते कृति क्रमता ता छाता छ। केवाउघाडा।।१९६१। जिरला जुतमां तकरे तेरत कत्यकर तानो खरी धतास्तुधी कम व धा प्रजोते गववं परसेते घरगाउनहाँ॥१६५॥ द्वाञ्चासकी महैतनस्रवोधपंचाऋण्यवरग्रतात्रादीपा वासंसपरमगुरुमाहातानारोपणोनामदस्र क्रण॥१०॥संमधुरण्यासमाष्ठ्र॥ प्रक्रण्याश आरंभते॥ जमादासकार ॥ अञ्चलकार मानावण च बाकाकालचेतंत्र रुपदेशतातात्म स्वामाण स्वर्धे तो त्याकासंपदारक्षत्र स्वातात्म स्वामाण स्वर्धे तो त्याकासंपदारक्षत्र स्वातात्म स्वामाण स्वर्धे में त्याक्षेत्रव्यत्वत्वमायधात्रणकरेवां पर त्वांतकतंक भूते भावधार ताकरता जा जा जा विश्व विष्य विश्व विष संध्यस्य यं मतत्यामा या का रता यहा । वर्षे । स्वास्त्र वर् । स्वास्त्र वर्षे । स्वास्त्र वर् । स्वास्त्र वर् । स्वास्त्र वर्वे । स्वास्त्र 

व्यवस्थानोभावन्सारकरमात्उष्ज्ञाने ॥ संकत्यधाना जरपतर यत य एवे अवधाराने ज्यामकरीते स्वस्तहतातेकाते एवीमा बना उद्येष तारणमके हैं सो जे चे तंत्र उपाधार ही तस्तु वता परम वादिया ने वेकां गो।।।।कां ईक स्न न वा नमने तां दा विकरतउप जावातीभावताकतीसारुधारणक ॥ अतितेसुखमे एभा बनाषण् के. म उप जा शिलारे n. मांभवीते नेतु छोता। जंसकोई मांन्य व जात्य मां नरव 19 ।पकवांन भक्षण वणादावस करे छै।।द्यापछाने वा 70 तांवातां वया यत होने ते हेता उपरथी जिसमा व पर्जा थारे। रवादुरवारुलार्युतमतेम त्या व्यायदार परवा वातुमंत्रवाया। शातज्ञ व्यारं ज्यातादासक्रता युते उ प्रीन्मा व्युंत्या रेसंकरमध्यकी स्वरस्र तीतत्व ऋरंस सोत-अवंकार घ्णाक्रवाजगताचे थारावाजामाह 3/ प्रसातविषाञ्चाते य एत्यम जावधास तिउप चावी ने रचेल चला लगे दितचा नाहा स बील प्राथायाय एवं योत्ये अवग्यासक्रता षित्रं जाणे छे जा। मारे जाता मज जुता इक रामे जा ग्रम्बाध्यस्य बर-चेगा १० । ज्यते सर वन्यस्ते पदार क्षिलकारकरीने ज्ञाय ताइवा। जेयदारथने संगो मानमायकार पहेतं का समीपण पुरण थाय एउत्र "कसारियो तेमासेते पदार पञ्जा पण जुता वा चे छे भाषणास्त्वा युमां खे जे देना उप र यो निमा प्रश्ने का विमान्नेयेन्मं तरमान्म फुलग एक्समावतथाध भाषात्रयनमत्यमानमञ्जलगा एकात्रवा उपत प्राणामने जाने चेतं नजत नां हां ज्या समित

कां हार हो से ।।१४॥ ने का ले जा वधा जा ने व व हे हो ।। वाहरहस्राप्त्राम्य रहेवाधनुमन्ध्रामानाहास्य वसे तेकालभाग र प्रकार प्रकार प्रकार के ने स्वार प्रकार के ने स्वार प्रकार प्रकार के ने स्वार के F-33 कारममरलायदार ने नितंत्रं सहष्टी उपजा पूर नेहेने जंग्या साम करां है। ।१६॥ जनवा ताने म मुद्री।-अंसपदार्थममेतनातीयेवीच्र्राक्तसं रोकराने कलयां तस्था माहारोक रे तो रघेत आने येचाससे॥१७॥-प्रनंतप्वारे प्रनंतजीब ब्रतसेने जांगाने अजनचातवनकराने सं तीस्यामाउसे एवं धावीचारानेवीत्नास । १८१। प्रवाह सर्व न्यपारपोतं कलवडोघजोतेनी सकलमुलव्यानी उलटस्या त्यभागमाना॥१८॥प्रथमजस्तर्वन्प्रर्वोधायांमा बक्षाकरानेकहाछे। पण युलदेह आरोपर मका देहसधीपंचननुष्प्रवधीनीमीनेयो त्येकतारेरणां रणाहाचेत्रेकेरलाकरत्यातत्यनाकायाकायोद्देश तानों का या वृता येक सो ने भो न्य कर । रिशा वेष्णमस्थलदेह तेपंच अतने यं च माजा। ग्राहकार गणीगद्स प्रयोक्तांते॥२था न्यनेर जो गुणनेदस कं सायो॥रावासतत्यभागलेईने॥-अनेरजोग्रले हकारघणप्रधांनरा सेय तेमां मेलवाने। ए बाबीरा ने चलपुर बुता धाय ने जो गावी। रिर्। हा वे सुस् येच-अंतस्य मार्ग चेच ग्राचस्ता ग्रद्सतत्व सन्तर्थे । वर्णने नंगा विष्ये विषयिवस्ता नेयं यस्म सन्क्रणार्ह कासच्या धाधयेला। १४ ।। रामद्याने वीसतत्र अने सत्येशणने स्वकास घणामधान वा का वा बावासत्त्वाचे प्रतिकास घणामधानगर्वे प्रति बावासतत्वनी सहम्ब्रिना प्रधानग्रह्म अस्म स्र नो प्रख्ता या यते जी स्पाहावेकारणहेह।दिसक्त्रवता यायता वीर्व लाः अने अंचेत घरण नार्सनाय नायोग जी

a

म 6

A

2 a

1

â

a 6

F

20

वित्यार है।। अने नमो गुर्गाने अचेत च्या प्रधांन।एवे प्रताने बाबास तत्वनोकारगारे ह प्रवृता बायते जांगांचे श्वेमाहाका २ए। देहतो चतुरतत्वकारणानी। १०० ते मंगकतो न्यानंद तत्यका र्या। न्यने बीज् मोहतत्यक रणा अनेत्राजधने जे तत्वकारण ने चोषु वक्तातात्व कारणारमाए चतरतत्वकारणनाषुब्रता बाव्यतेमाहा बारणदेहजांगावी।हावेपरमकारणतेन्त्रव्याक्रवत्त्व वीरिश्वीनारंजेनतत्वग्रह्मयेतत्वप्रम् बारणदेहजां गावी॥ राष्ट्रकारे वं चदेहमसाने जगसोवी होतेरत स्वनी ये चे ईतन्तु जो ए विशा थिया । १०। ए चकारेई छात्र ते यकी बोहो तेरतंत नारमाने यं चहे हन् प्रसने सारुक मरिकीयाखंताना हाचे कर्या ने कह्या।। ३९।। तगरेराउस à खणकराने स्रोताने संस्थ उपजोत्ते युछेछे। जेमहराज U ग्रातमोप्रयंमयांचिद्देने वीसे जंससन्तर्गाने जवस भागभान्यकहा।। ३था वेलर नहायाने वासे॥ प्राने न्त्रही तीएक सस्मदेह ने वी सेन्य्रेत सकाए ने न्य्रवस्ताकही अनेबाज्ञतन्यया जांन्यतत्वनाकहाने नेद्राायी ३३ तेमारेने वारता उपुक्रणामु छेते नो जा छेए प्रकारेही थतोते अनेनहातो ज्याही य ने कहो॥राउसां अलांपर भगुरसं नसज्ना। ३६॥ को ना जात रे यह के हे छे।। जे हे 亦 कारेपंचतत्त्वनाभागवेहकस्रो॥नेज्यकारनाक्रा 193 गेंबतारात्रवाचेकत्रांछ।।इय॥ तेहेनावा सेन्स्र NU गैं अनुग्यकवी जादेह मे तत्व जेत सक्रग्रा सुरामका 30 क्षेत्रेहेचतन्ये स्टाने व्रत्या जायचे ॥ तेहे लायुटा दे IJ D वाराष्ट्रवास्त्र विश्व हो। ते प्रकारसं गर्व पर विकारजेकेई न्यु (वस्ताने न्यंतस्तक्रागत्वा । अने ने भागित्र विस्तान न्य्रतस्य मार्ग्य स्वास्तान न्य्रतारहाने ते देहनां त

त्यनाषुब्रताकरावेष्ट्रं। वेहेनापुब्रतातालेषा साह्य त्यनापुब्रताकरावयं नावासकराने। अस्ति। स्वारित्व मराने चेते नारे कां एग सहात कही थे। हा वे व्यान हो वस्यात्रात्र त्यात्र ने संग्रह ने स्वरं ध्रष्टांनसेहेराचरपटा संज्ञक्तजाग्रतः प्रवस्ताचा धाष्ट्रान सर् हावेस्यदेहजलनच स्थान्त्रतसक्तराम्यरंगा च न्मधीष्टां नसहचरप्रशसंज्ञक्तसप्रवन्मवस्ताकेत न भोगवेछे॥तेहेनावासेन्प्रहेनावीस्मी अहतारहारे हावेग्राजीकारणदेहन्मसानवन्महंकाच्येनसकार मोगुण अश्धाष्ट्रांन्य चरपुरा से ज्ञान्स्सो सी जा व हरद्वेरवांना भोगवेछे॥ धर्मताहोन्स हेसावोसा स हंतार हाच्याहावेची योमाहाकार्या देहवा युत्रवा न मंतसक्रण्याकृतन्यधीष्ट्रांन। ध्रिश्चरप्रशं यं क्रनशयान्त्रवस्तामगायुर्मा भी नतर्याने भी अविशेष अहं ब्रह्मोस्मी अहं तारहा छै। इं वे यं चमोपा सं कारणदेहसद्यगणन्त्राकासतत्वनचतन्त्रं तस्त्र ती नारंजनकाधीष्ट्रांनराचरप्रशसंज्ञनम्नोञ्जा वे ध्यांब्रह्म अध्यावंनने वासे भो गवेछ । तां हो प्रहंस टन सरजंनो अस्मा अहंता रहा छे। एषु कारेन बदेही म मोहा। ध्राधियां सम्बन्धे वेद्या ने हे नो सकल मेर न विल्यां । हावे ज्यावं चस्रश्राद्वा व्याजा न्यारात् मो खेलाने यांचदेह नां तत्वेन ज्या ४५ । वंधभांन्यभी ण्यास्त्रीरत्वं प्रान्य नेयं च सर्गरना यंचन्त्रहत्ती केरेने जन्म नाना प्रकार ने स्त्रीय सर्गरना यंचन्त्रहत्ती केरेने जन्म नाना प्रकार ने स्त्रीय सर्गरना नाम होते हो स्त्रीय सर्गर होते हो स्त्रीय हो स्त्रीय हो स्त्रीय होते हो स्त्रीय ह -3 वे जेहें ने जिस्ता में असे में से ने जे के हैं। ते जे के हैं। त्ययां राक्णप्रवीकासमाहात्यां ज्ञानवाजुवाकी ध्य हालनेत्राज्ञन्त्रमस्त्रमाहालान्य सन्बाज्यवान् ना A.

级

(तेवासेची खें खां छेराने हे मां जा वाका सने वीका सग्ड अये पाहा त्यपंचदे हतां तत्यज्ञ ष्ठा ने एक ग्रंश रवा ने रहां हो। ५०। । उन्नेत्री ज्ञान सत्माहत्यने वंचदेह नी संधीमे वासे यो खेख छे।। ने हे नो प्रबुक्त वं चहे ह ने वा से भां नामा मान्नहंता जे व व मक हा हो॥ ५ आ ते ते दे ह ने वा से के न स्त महात्यमांन्य ता ये ते ते च्यहं ता ने मां ना श्लाधे॥ हावेतेप वसरारनां नावी ध्वावे भवने।। प्रशादी संदे जास वनपो वर्षा वानां नत्य भागसां मु अपूर्मार्गरहेछे॥ ने हुला सने अक्रावाने भंग कांए करे छ।। हाचे ते कहा ये जे।। पश्चिक रताना संजमभोग ब्रुतानां तानच ससत्वे ते राक्ष प्रानंग कातां न ने का छ रा जां ए। वां॥ ५ छ। रात्र रा जी प्रयुती पांच संगरनेवासियाय नेकहायेछा ये॥ हावेए त्रएपमे युगई वनेगानं गचस्यत्वनायं चदे हने वासे भागरहाने॥ ५५ पंचसरारने उमंगे रारवेछे॥ पुरक्रने कं अकः प्राबेड च क्सता मोर्रो ने हेना ऋग्या याया। ते रापेक्शने पांचदे ह संतोसन्मानंदर्हें छे रूपरहे छे॥ ४ श्रीनेकांमनानेयवे तीत्रत्यभागनीय एए होना बतो जा द्वा चाया हा N वेतेषंचदेहनोउमंगजे ब्रुतेहेहेनो॥५६॥जेहेबेखेबार वेचे ससत्येना प्रयुत्ती चाले ते हे वेले सकल तत्त्वभाग 10 माष्ट्रवताना मंगकरा नां रहे॥ राष्ट्रकारेपंचदे हने वीसे भवंतर॥य सान्त्रवंस्सा भोगवे छे॥ अनेचसस्यने महां खञ्चनमानकरे छे ते दरसाव्या। ५ त्या रा तत्ववाने भवस्ताना चालपलरायछे॥ ते हेने प्रकाणवात उरागन णिकरेगामां कहां छै। ते अरबील च सस्य नो नुकार मेलाने॥६०॥ अताउजाग्रतयरणावजा मजाएहष्ट्रास् भानगरवाने नाजकर्तानुभाजंग ग्रार्वंडकर्डा। तारेत्री TE. भेडें ने सांभदाने यहमक रेछे॥६०॥जेथांच देहः प्रवस्त P. महात्र वा सक्त वा सकोई क यांन्य के मांर

द्रानेहर्नहां ची जावनास्नानं नकर्तार्थि स ध्यानेहेराहाणा जा अन्यनार बांएप प्रनोन्ता स्त समेत्रेहरवायागिना अन्यनानेहां नहास जनेता धा स्मेम्रहरवायाग्यायाः सेकरानेहां नहास वर्ते भार परं ध्यात्रेनाज क्रयावार स्वात्रेय सम्बद्धा प्रयाप्त मान्य प्रयापत्र मान्य प्रयापत्य प्रयापत्र मान्य प्रयापत्र मान्य पत्र मान्य पत्य पत्र मान्य पत्य पत्य पत्य पत्य पत्य पत्य पत्य एउष्टमवर्ण एवा स्ते स्तर ये जो श्वयरमार्ष हेछे।। ६४ ।। इतामा सकता ना है न त हा चे चा काण हम्माद्व गर्गे चर्ष चर्ष चर्मे हमादा ना रोष्गों मात्र द्र सोयकरगयुर्ग।।११।। अयो हा दसमो जुक्तरग मारेम -अहोसंतसजंग-अधीकारान मोयेजे प्रध्नकर्गा स नीउतरप्रताताकछ्ते गताप्राप्त्यायए हेउकहार्य य हावेकेरे भीमीकाने वा सेरहा जे स्नातं नमु जना र्ज अनेकेर्याया माना अनुभवायण अष्ट ज्ञाया। नेम महात अखालपृष्टवेदांत नी पारा यक्त ग्रंम उत्का ये हेमाहा अवाजगुज हा रदः प्रर य जे ग्रामादी वावेवा वा हिष्ठाशाएउम्राकतरणा सागर्यर्मगुक्तसंतसम् ज धाकाराष्ट्रतेबीसताह्याते सामली॥ जेबातमेमा क्र माकाकहाछेतेहेनो प्रकारती वंची करगावातउगा सः बरोज्छेतेहेनावासेकहाछे॥ध्यातावेताहां वरमा सि तार्जान्मासेगुलरार्व्योक्ताचेत्रेन ता जी जा से गुलरा रबो छे। ते हे न बगरगाए जेते तो ब सनीपारातांबनगतीसम्प्रवानाचे॥ या मारोग्री खाहाबेषुगरना जऋतानुं अजन सर्व जेनकरी। तभोमाकानोदेसम्बर्गकराउ॥६॥तेषरमगुरुवा २३ जेयरमभायग्रवत्तेमनाः मर्थन्ते । हार्वस्ति रहे काकेर्न्त्रनेकायासरारनेची सेवसानेकायत धारणकराने रहा छ। भाना ने की छन्त्र त

स 3

P

मारिष्ण भ्रमोका प्रयानात्रय युक्त सरीर जाग्रन सब् वाउने गरणची धी-मधी हान सहात मेन खेतस्य करण गुरणकरीर हरु छो।। था ने सामा से प्रधंम जे सभई छाउ क्रीतमंन धाउपजे॥ ने हे नो संकत्मकर नारस्युलनेबा वेष्रधममेनजोर्गसा १ ।। - प्रनेतेस्अर्ध्यानीऋगियाव वमानणाय। ने केम पर्गरण खड़े हे करी ने करी ने या ख शाजेरजोग्रेणच्याकं साद्योना सरवउखर क्राया॥ १ आ रवादातेव्रमांनकरायेउपासनासंज्ञक्रतारेम्श्रर Ī ग्रातनेवा सेव्रगटनर्गया। वेच अत्रवंच मात्रादसन्त्राचे मायोग्माद्येष्ठवतीसमयुर्शातेसुभईद्यावीनायरमा प्रतरप रत्र एए र्यमाने न पाया। १था समर्घे कराने मोत ण जगते। तद्चं सारमा जवात्ये वुत्तावीये ते हेवो।। प्र है नेमंनसंकत्ये आवृजाजे देह ने वी षेव्रते तेय गासु भई छे वे वते॥ १२॥ र प्रकारेओ मी का प्रयंम सभ्य र द्याये जो एगः व गारवेबीजा स्वीचार्गा समीकाते॥ मुस्म सरार व वस्ता । १४। सत्य ग्रं मुधा च्यं तस्त भे भेग भेमांन्त वा एत : प्रधी छो न से हे यू तमां न सुधा ख़ेत ग मक्रण अमाका धारएक राने र हाछे॥ वेसामा केतारे भवियार्गाजेमतावंतने उपजे॥ १८॥ तेमनी वडोपाय <sup>१</sup> भेने उत्यंमवी चारनं सस्मक्रमक्रतजे ब्रुते तेपए मिस्मदेहीरोजयायछे - जंतस्य स्था - प्रवस्ता। १६॥ देव में भेल अएने खका सद्या एटलां तत्व ना पुत्र ता जेथा व विशेष्ट्रमिये हेने या से ने सकल तत्व उत्तर का या स्वीच विरवामां - मध्य-मावेछ्॥ १०॥ - मधाकने न्य साम्मनपरी व विश्वामान्त्र भुन्त्रावणा १९॥ जनवाता ते हे नावी से सुवी वा मिमोनोनोस्स्चधीन्त्रेतस्रकणधार्णकरीर्ह्युनो है।।१०॥हावेत्रीजी सम्मानात ने मान साते ने कार्य 

मन्त्र था छां न सेहे ब्रुतमां मा १९४१ जहं का र-ज़े न सन्त्रण व भू था हो न सहित्र माना । अस्य माना ने दस भाव व व स्था करा ने र संख्या निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था करा ने र संख्या निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था करा ने र संख्या निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था करा ने र संख्या निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था करा ने र संख्या निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था करा ने र संख्या निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने दस भाव ने स्था निसामारो ने इस काल ने स्था निसामारो ने स्था निसामारो ने इस काल ने स्था निसामारो ने स्था निसामारो ने स्था निसामारो निसामारो ने स्था निसामारो करानेरलंखे। तसामा विद्याना प्रस्ता तह तमाग्रणमञ्ज्ञ वर्ते छ।।रबी-जिन्न स्वत्वन हो सक्रमधारणायज्ञ विशेषात्र वे स्युत्त स्थान त्रिपरास्त्रहरू हरहनताला । स्वास्त्र तत्वनं कारणदेहनेवी सेव्य हो न ग्रायते प्रकारे बताये छे। मासे बहुना वी से तनुमा पर भुमाकाषुगररहेताचे तेजोगाबी।। रथाह्य वेचोषीमा वा कासलापनी नो ने हे च वी वर्गा कहा था। माहाबा की देहवायुतत्वनुरीयान्त्रवस्तान्त्रव्यानन्त्रधीष्ट्रांन् तेर्ड तमांनचातःप्रतमक्रणधारणकरीने उद्युष्टे।स्या मव मासे हावेते कहाये।। स कल नागम सीहोत्तनु सचते। का सारां सन्तेपतापण्यानेची तवनतेचाते करीने स्था हते य।।२६॥ जहोबीसबीनाको इचीतंन न्यवस्तामां मारं सक्रण्याय॥मारोचीतवं नरावेकां गोप्रधां नहीं हो इ 'अनेस्युल सर्मनेकाररगग्तान सर्गरक्वेयाछा सेने हां॥ नेहेना सत्यनुपती प्रगहने हो प्रगामाहाकार्य। माव रेहनेबोसेबसेधे नमनेन्साने द्उपजे तहेनेधनंजें में रीनारवेछे॥ प्रमेषुक्रतीजेय्ती नेय्यती वस्ती वर्गने सरवदेह ने प्राचिकार्ण ने सरवस्था से ले महातावण्राखे ग्रांचकारेचत्र तत्वकार्गातिवीं केहा वर्ताव्यक्तरहाछे॥रमामासामा हाकार्गादेहतेवीं थे॥ म्बावनाभुमाकाजांगावी॥हावेवांच्या भुमाकाजी अव मन्मसम्म सन्ही जांशात्रा रक्षाहा वेते हे मां वरमका न से तमाननचंत-प्रतस्य वस्ता नारज-भागवार्यं होन यंजेनारेनचीत्यम् जेनेनेनचीत्रप्रेतस्र

व्यमंत्र षाय छे।।व्याज्य ग्रंतस्त्रक्णनेवा सेन घ्या ३१ बहुतीयुतमां नचतरवाध युकार नां ओ स्थान यायाचे र्वेक्षासेम सक्तीनां मे भुमाकाना प्रवृत्वाकहा खे॥ १२ वजानंद मंग प्रख्ताने माहा ता प्रार राच तर त त्यकार ॥ वात्राक्राया। चतुरतोमा हाकारणः प्राद्यदेहनेवासे à ग्रावद्ये।। से सरवसमसक्रीरूपनचात्वण्यवद्येष श्रेण यहो। अनेवार्मवार्थार्ता परम् जेन्मा वेद्याते H शानचीत पर्गाराच्यावेछे॥३४॥हायेन्त्रकतरहातन्त्र 14 वाकृतीं त्रभा मां नहर सज्तो ती स्वरुप। राउचे तासंम स FÎ) क्षावतनचे तय्यानी एज ज्ते छे॥ ३ था। अने असंप्रवृत्य ति स्वतिमानि स्वास्ति स्वासित्य स्वति स्वति स्वासित्य स्वति सत क्षेयासमय १एए समय दे जाय छे ने जो एउ आ र प्रकारे दे दा हती संमयण जे याय कप्रमकगर्गाने वासे रहें छे ३ अ विरंगते आसंमयण जे छे ते प्रमक्तरण ने वी से रहणानेम । १५ तेजासंमसक्रा नामाका जेपंचमामुमाका जाहांब वक्षेत्रेच्ये छे। इस्। तेहे नो भे दहर साळो ए प्रकारे पंच्य । रामिकाबोहोतेरत चने वाये रहाने खने॥ ते प्रकारेउत्यं गर्व भित्रोता येदेरवाडाद्यधो॥ ३ त्याहावेखमायदार् यभाव महामानानुसस्य क्रियाजेहे उद्यामान प्रणवनेवी वा मिलेता स्वा समा अञ्चता याया छे।। ४ था हा वे युर वे वेच अम का भवेसेरेहतस्य न्त्रवस्तान्त्रंत सक्रण्यान्त्रधाष्ट्रां तस्थात वर्ग में नेजवमारो जासमाकाने वीसे ज्ञान वदेखाड़ी वर्षा प्रमास्य आस्त्रास्य प्रमान अस्त्रास्य प्रमान स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व विश्वास्य स्वास्य स्वा केंग्रेस स्ट्रमानुमाव जनवारा । विकास स्ट्रमानुमान जनमान स्ट्रमानु श्रेर विकास सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा था उत्ता सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा । सम्बद्धा सम्बद्धा । वतमानचीदामा सन्प्रतस्य करणकेहेतां जेची विश्वाहावचीदामा सन्प्रतस्य क्याकेहेतां जेची विश्वाहावचीदामा सन्प्रतस्य क्याकेहेतां जेची विश्वाहावचीदामा न्यास्य नाच्यां नवे तेचीत

7

मस नकहावी। ध्रानिहे नावी से यक्त पदार्थ ना पुरस्त जब हा या। धराजिह मानु स्प्रवस्ता थी नी जो राज्योग स्वी वारतम्माहाद्रमण्याक्षेत्राधिधानेचीद्रनां न्यंत्रस्य दक्हुनहरुक्त्र्यं पाजां एउ। तेषु या बने वर्षे समोन ना सहो। ध्यानारमानस्का अपे दमहेष्याते णवनेधारणकरारहरुछे। ते सामाटे ने ने चीदाभास मक्रणकहायो। धर्महावेषदार्थभावनी भूमोका हेन इपकहाये॥ ने जे जियद नी जार पते जा विकेहें ब्रंसनेवी से नेहे नो न्त्रष्टां ग्रेमावछे। ध्राने ज परार्थ वना भूमोका। अने जेने ज्यंत पद जार्य नी आव्हेत्र रछ।।तभावहेत्रयगस्थान्यहेमसार्नेवारवेरहोोछे। धराति आहेतो प्रणवनत्यने वीस्वसं ये प्रणजेहेनीय मां वनाबाहेर्नाकलानेकायक वीभुने वी खेराकाकार नी येजवानाछे॥६४॥मारेतेहेने पदार य मावनी अमीष तर कहाये॥ जे ज़ादा मधां तस्धादेह ना तत्वे वे सेवा वस घे॥हाबेसातमाभुमीकालतप्टनराव्यानं घाता ने जंग्वा।५शाजेभोमाकाको प्रमुमव्सहार्येशस्य इन्त्रिशायदनएकत्वयएध्यायरावुछ। द्वितेभुमीन यन नेवासंयुरव्यमाकाष्ट्रमांगा। ४१। सुरार्ने तत्त्र अधीष्टांनने संनसक्या धारणकरारे हेनाक्रते तकहोथे॥५२॥सरवतत्वष्रणवनातातजेनाजकी रेप नोः प्रशासचेत्रते कृषे स्वमेव हे सस्य गर्जा गाः मोहं वणवरातो तत्व जेचा ले स्वस्तु र सम्रार्जा कर भावना बाहेर गवंनकरवा नारंतरछ। हावेजेहें वारवेःअवस्तासहेजस्वानारतरध्याहाः अव्यवहासयातः अ यायशीषशाको देये जेनस्य लामारा ने हारे हैं माहोसहैज सम्यक्ति ये जनस्य नामारा न था जनस्य है। मारा निया जनस्य निया सम्यासनिया स्थासनिया स्थास हेगमनकराने ज्ञरवंड भाष्यं नाचे लान वार्य

A

B

27 22

A

A -3

ने B

धा

羽

न्र

932

を行う

रीर 73

वारी बेहे ज से न्य न्य पार जे ने ज न्य व स्ता कहा छै।। हा वे वेहेन न्युधा ष्टांन लेकेव स्यद् जे खका साक जाही ना रहंदेशीय ही एट्ट्या से हे ब्रु तमानचाद-खंत सक्रणध णिकेरानेरहाछे।।रावेचीद्जंतसकरगतेकेवस्पपद नासक अरवेड जो ए नु॥ ५७॥ ने के व ज वदन्ड की र राज्या मने ते ज ज्याय के चीर जे चीर ने गंत ते बंदन प्रकास र ग्रहोन्त्रस्य अवीन्यास्य ॥ ५०१ । अच्च वन्त्रमरजोणव त्वीदना ग्रेत्र वकार एके नाज के वसकर ता ना बाहा प्रवृती सजांरणजेन्छनं तन्त्रं सने मां थे सरव ते रुपे॥५६ पारएकराने रहा छे ने ।। ने हे ने बाद जान सन्भएक हा ये प्रनेमापक्चीदब्दं उसत्वजेकोई तेसत्वनी सहजाह मंनीनता नेहा वरू ख़ मे व्यं स व्ययने वासे रही छो। ते भीजन्त्रंस स्थान्त्रहेष राण ने वी से ब्राज्ये रा वी॥ देशहाबे न्तर वर्ग ब्रह्म सं यो नाम मुमीका व ने कहा ये॥ जे मर <sup>वसग्</sup>रनात्रवतारसोहंप्रगावभावनावते जेवारेवर वेतेजोएउ॥६२॥हाबेतेजसद्भारनात्रवतार्ताहारहो। लेमेंबहंसने सोहं प्रगावृहत्वने सेहज-अब स्तारात्रण क्षेत्रणयकचार ब्रह्मनेवी से संग्रममली ने सुरवका भगकारेहछ।।६३॥तेमारे लेनेततष्ट तराख्या भावाछेला आदेहनेवासेक हा येते जांरा बी।।हावेत विशंतचीद्यां तसक रणजे॥६४॥तेत्त्र एउ छे द्रम मेनीरबोग्पभुमीकाना सत्यने न्यायते स्वक्रयनेबोसे भिरंभरुखं हो ॥६५॥ तेमारो चीर्-प्रेनस्करणतत त्र विश्वेष्ट्र । द्वि । तमारा चाद्-अत्या भारति । रा भारति । स्वामकाने - अस्य धारणक रानेर्द्र अस्ति । स्वामकाने - अस्य धारणक रानेर्द्र अस्ति । स्वामकाने सामारा ने सामारा अस्ति । स्वामकाने के सामारा अस्ति । स्वामकाने सामारा अस्ति । सामारा अस्ति

मध्य नांएकप्रजांएख। ६८मानेखंमनेविराजमांनथः हैवा सार् मानमजलामालनाह वेली नत्यभागनी हवासार आतमा विशाहरात्रियं सते मो अस्तिना नकरतारकरला अ छे ते मोजे मजला में ज़ंस यो ता ता है छा। या य जे जेस होव्ताः प्रभासमान यर्ने यं अनयां मे। ते ओमीका पुरसकेहेबाया। आनेबाकातोनीजक्रताना ग्रेमने नासानरमालसांमांन्यनसदासरलकालछ॥यम नावी से अमाका अमोका प्रते के ता ना जा से सन्।। जा य नुन्य गता तत्व ना मां न प्रमारोग माहा ता ने प्रातान यद्ये।।तेकायेपकारेछेर वेकेहेछ साते हे तसांभवी जां हों ज़े वी अमीका स्थुल सुभई छा दें के लोहों ते है वा रेब-प्रेतसकुए। ग्रुबस्ता नोष्ट्रभाव-ग्राह्येस रेबरहा ७ थानेषुमारे माहाता स्परे छेते ते एकारे तांहांका नाः असनी महाद्ता मुकुर्ए याया । ते हेर्एकराने भांन्यमाहादतानाषु ब्रेताता जिएएय छे।। ७५॥तेहैंम धमस्भरिष्ठानेवीसेकरतानान्त्रं सुनार्ष्ट्रास्त्रांण तमांनकरेतोतेष्यंमअमीकानो सर्व्यत्युरस् य॥ ५६॥ भने जो बाचारगा ने बासे ग्रेस नाई छाष बीजी अमाका नो ने युरसके हे बाय।। अने सत्याप वीखेन्नतानाग्रं सनोहेर्य हमानकरे॥ श्री ती बी माकानोयुरसकेहेवाय।।हावेन्स्रासम् सन्त्रीतेवी सनारे छाजोब्रते तो ते बंचमी अमीका जो युरसके हैं श्री ः प्रनेयदार यभावनाने वासिना स्त्री सनार्थ मानकरेतोछ्या अमावनाने वासे जो स्त्र सन्गर जोक राषा प्रकार माकानो पुरस्तके हे बाया ७४ जोव दाषीष्ट्राज्यमाकानापुरसक्द्रवाणा वासेक्रानामायरकारेतत्रहत्यां स्र वासेकरताना असमार्था देततह नरा खुल विसे करेती ते प्रसमानक स्था देती समार्था राज्य समानिक स्था देती समार्था स्था देती समार्था स्था देवी हैं करेत्रोते पुरससातमा अमाका नो ग्यु ठठ प्रविध

गार,॥जेसरवनुमाकामां ग्रेष्ट्रभुमाका जां हां रहानेजे र्वागता अवासार शाकरता पदनेवासे वोचा जाञ हैवा।हावेग अकारे समस्माका जेकहा तेमध्ये॥६२ कृताना जोस्नाई छा जां हो जां हो जा जना बना था था। वहांतांहां ने संस्थारां मक सांजाय॥ १ शाय कते सरव भ्राकानु स्व स्याकार प्राते रखुल देहने जागुतन्त्रव माना अतं अवने वासे वा चारक्राये॥ १ ।। तारे जारा ग्रामान्त्रावेतेची नावी जादेहन्त्रवस्ता मारानोन्त्रनुभव नक्ते॥मादोउजाग्रतवरोग्यताश्हरने॥स्थ्याजोराव मंत्रणकेहेवामां ग्यावेछे ।। बाजा ग्यावस्तामां नाकेहेवा ॥ अनेवाजादेह अवस्तानेवासे असमजां राजादृष्ट । अभासमांन या बतो नां हां के अक बां मा ने तो हों जे वित्यभागन्य यत्रमानहोया। तेहेउ यताने भाग्यभाग्य विशेषाची स्वेरेहेय एक दुतानुभजन जेक उड़ ने तीर गग्रतनेवासे - प्रनाउ जाग्रत वर्ग सलमा भुमाका नोल स्परमबोधसम्ब्रासिक्तेचा तनस्तां ग्राड्षायेकर्ड (मातेषंत्रोगक्रिगचीनवंन सकतानेपोहोचे॥तेब्।नाः वैज्ञान्त्रवस्ताने समाक्राने वो ता तु सन्तां राष्य्रा सवेत्रा णनमारेहे तार हा। अने जाग्रत सातम् माका नाम गत्रामा गत्रवना मां गाये॥ते बुतावाने कतानुभ मिनारंवरकराये॥ ८५ ॥ ग्रस्ताया से स्वाभ्रती स्त्रा "श्याना वासंग्रे॥ तेस्यका सक्रश्या वामेष्ट भेतेजा यत्रमां उजा यत्र तरहा ने भजं न करता नुकर छ। विगम्भ सहेहा ऋता व्यवकार करतारे प्रगटकरेकां म्ब्रिमागवकारेते प्रतस्वधनः मिन्नोग्ना द्वेबोधगत्तानाद रसावी गरा नाम्यव मिन्नोग्निम्यासकरेनो सासात-प्रस्तिभव॥ ६३॥ प्रताना सम्बर्धासकरेनो सासात-प्रस्तिभव॥ ६३॥ प्रताना

मञ्ज ईत्रोज्ञामक्रनान्महेन्बोधल्स् वेध्यंचाकर्णास्य मोयुर्गा। ईनो प्राष्ट्रण तेर्मुप्रार्म ते।। ग्रायं कार्वा नार्यसाव न मारार्मा। अहा अवकार तोष्यं मना गतीनाकरतारेपोत्यधार्गाएकसातेयोत्येयकलाहत नेकाले॥ शाहाबे लेन्ज्यहस्रवाम् नानाननुकोईनाफ्य मंप्रारप्रमांगे जीवामांना ग्यावे॥ ए प्रकारे ग्रालेका रा नाधारणाकरेलाकोरने प्रतस्य रमासार हो बेन जरेन आवे॥पणते हेन जरूपर एपणे जोरा सी तस प्रकारना पबांबाजाताधारानेहेबाबहुधान्यायुक्ताशातेकेमन णायचे हाये ने कहाये महा सह कार तत्य जेम सपेता चनीसीसीयतेतीजेमछतेमजहीयछ।।धारावेतेह वासेरंगपालीलालखालासांमजे वो अरायेते युमाल रंग सरखोजणायने मुलस्येत सासानोरं गनजरेता ज्यावे॥धानेषुकारेचोरारा सम्बन्ध का २व साजगतीं करतारे कद्योने यो तानाधार्**णानी का** इस वी अती उप माध्यंमनायसा॥ शानार्यक्राने हेनावासेनत्य्यंय न ज्याद्येनां नाष्ठकारनावाभागकर्गने अवस्था जाहारे हेर्षे करोने ज्ञाही ऋत ज्ञातं कार्॥ ।। नजरेन यो जा नाजेन्त्रद्रशानां नाछे माटे॥प्रा उछु वन छाट दसप् थएहेनावासे॥सा अलंकार समस्त प्रगटम्रती भासमानवायछे॥ते जेमऋतारेधारे सा ते प्रकारे न्य उपवंत जिला यहे॥ स्था तारेश मके हे सो जेपर मक गान्त्र सने वा स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्था स्थान स्था नानं सने ना वास्वास्या सारु ॥ अस्त्रा च युर् मकार् नेवासेजमेदभान्यना उत्यासास्मारणा अने हाटा राष्ट्री कोहोछोतारेसांभसो यसतन्त्रवीना॥११॥-मानदेर 

भारतिएक यो एक तत्व वी से सम्प्रक्ष या कारा छे। अस्ति कारा से वे कारा से सम्प्रक्ष या कारा छे। गर्भ ता ना ने हे जुत मोन सक्त प्रकृत प्रज्ञ र खेल मणुबरेह नेवासेज सरवर्ममांन यायधे॥१३॥ जेख माने क्रतारेकरे जो छे ते ज्वेभ ते है नावा सेव ता एकः क्रिजात्वमे भी भावतारेदेर ज्याकतावरं भवरामे उप वर्षां जाय हो।।१४॥ते एक ना सर्खाएक ना नहीए अप्रवेतवाध्यक्षायके । तारे ये मके हे सी जेग्र ता प्रकार लातां कारा। ३ ५॥ तो जे दसो बा बां युमा ए। युक्त करणहे शतात्र मुल इत्र ने तत्य सां मग्रा परा घरे एवा ज प्रथम विवाधे॥१६॥हावेतेवासेनाखेसचर्नवानेसार व्यं कारमेत्रा भ रतां ते हे नावी मे न्यनं तज्यारनी ॥मभामक्रीयाषोरवाछे॥॥॥तेष्रमांखेसकजदेह प्रमारपः प्रतंत्र युकारना ग्रजन ययां जायछे नेध लेके का वामे वे रवे स्ता ते व्रमार्गे जांरा वी॥ १ ताराष्ट्र गोता प्रनादी भेदना जकता नोकरेखो क्रोर्सना कर गामंनचा न्यां वतो। न्यने वेदने वदेछे॥ १८०। ते तोऽष्ट शिष्क्रन बंस्माना जांगा वा नां ग्राव्य ने रखयुगाव गिनेपछान्येना बोले ला छे॥ जानेके रेप्रकारेउतपन १ । १०॥ तेबं साना चएवक यी मां ना जा युते हेन्ड भिक्हायेयायेजे॥पेच तत्थाराची सेस्जेसचीः मिएक जां एवा ॥२१॥ते ज प्रकारे न्त्रायको ते हे ना पर शानामान्यवर्यचननसरातद्याय॥ गुजकोरिगक श्रीतां जा वरण देह स्पाजां रण वाश्या र अने वेद्र र तो आ श्वीतेष्णवणम्भरचावनसहातध्रमकारसख्य शिवेते।हावे नेहेनावडोग्यापण्डष्ट्-प्रदृष्ट्यदार्थन भूषिक्षाने ॥३३॥ज्यां ग्राय्याने सक्त पदार्थं भूषिक्षाने ॥३३॥ज्यां ग्राय्याने सक्त पदार्थं भिष्णशन॥१३॥जारणार्धरायसाग्र उत्तरस्य विश्वास्य विश्वास्

6

शल नेगरचनाको (करेला छे जेन यो करी। जा से उपना के रूप प्रातमानमना प्राप्ते वी छेत्री एउ । हा बेते ज बुकारे वी व तके हेवा मान्यापनवा जिल्ला है के एजां गावा पर्येन अने ता ।मारतक र प्रवास्त्रीत जाता हो। रहे। जाता हो। ज रतारेकरानेहे उप्रमेसके प्रमेपरमगुक्के हे छ। नेत सजन श्रवणकरजो।र माद्रगदासदहरूपवे तकेवा नाव शानेहेल्येयोताना जड्टीयेजयः प्रपार्व चना सरका गुज क्रेते उद्याते कहा। २ आजं मकं आर अध्येन चर्डे आंजेते एक क्रनेडेंडहायमानाधरेनोहोययोनानाएकलाहापेव गुरु वेकरे॥३०॥तोहीयकराय॥हावेते हेमां चन्ने देडकरान् त्व करउतेतीनाजकतानार्छ। सेक्त्यवदोकरेते प्राण्यत ऋंग्यावता आदा ब्रुतावतो करते सहस्रोकराने खाः रावु॥३१॥जेसांमग्राकसायछा च तार्रामकेहसोनेव कैल्पनव्सहस्त्रवतनांगावो ने वेईप्रकारेनोपना राने हसे। तारे आचरायेसा गरने वा से एउ ना ऊप ए। सो प्रा आचरायेक हर्छ जे नेहे नो पार्तो नप्रवार्य रो जाए के हे नोछे॥३३॥नेवानाकोई जावनेमान्य मनायडेराउते । नेसां मां नवा सेस उभय ताने प्राक्ते हे नो न्त्रा हा जी है में कले। ३छ। गुक्रयरम्बा संसज सर्व्यत्वय्योकराते। हेमां क्रिताकेवछने जागो ते वाना गायळ व्यायके शाहणी महा जीवनेव गाने जड़पदेसकरे छे।। गण्डका रे जंडपी वे दे यराक सहानमता जहें ने छत्या जाय छे।। द क्षाहणे वे दे वासक स्वीना साथकारे जिवकी चरे।। ज्ञानी मारे वे ने जे अरे वेदमी जे जो को सारे वे के सारे वे जिक्का रे जिवकी चरे।। ज्ञानी मारे वे जिक्का रे जे के के सारे वे अंशित्रें के कि स्थान के सार्मिया के सार्मिया के सार्मिया के से का से या जा जा जा जा जा के स्थान के स्थान के स

M

मार्थित स्वास्त्र स्वास्त् वावतीके र सामे उत्मकां मक रागे ते मने बक्सा स जाणा। ३६॥ तारे कोई एकदावसे नेदावोनचा कराष्ट्र विवातानाई छा छे जांमदेसमे गयो।। तेहेर छे संगात्ये U क्षिणास्त्रात्या वास ने र्गयेको यद्या ने कोर् लोक 8 म आवेते लोक ने सला पास देखा हो ने के हे जे जा बोतमें त नेमासाक रु॥ ध्राग्य मकेटला कलोक जोवा ज्या बेते हे र गणने ण दां म लेई ने लेहे ने दे रवा है।। राष्ट्रकारे यो तानी ग्रामियलवे॥ध्राप्यास्कृतंमयोनानायाम्नरा याक्षमताप्राणवृत्रोकरानेनास्नेदेखाय॥नेवकारे ग्रम्त्र उपदेस ले ई ने ज ज त मे। ध्रावरमण्रा बोध्य व विद्यापणलस्य सारका ने विज्ञान के विद्याप के हैं गरे ण तीतीनहोते मादो मान्तर यनीनाता छै।।ध्धामंत्रदे त्र वारोने ग्रेड्स्या पोतानुं यो हयो स्या चया साऊ लेई स नेवालखेप चलाने यथा कीईने कत्यो रगन चयु नेनद् में भियोतांनायासेन छा।। ध्याने सक रे यो नानु सुतार्थ ष श्वापयतेया रकान से करासके॥ ध्यातारेये म भी मोरासाजेछे नेसस्वानासाधेदानास्कतम् भी भी नारेनेहेन अप इष्टोनेसरानेसहाये॥ धर्मा भी प्रकारानेसस्य समस्य समस्यान्य क्षिजेपारका नारा नो संग्र जे कर से ते हे ने दरम भू भू जिया रकी नाराना सम्माना स्टार्स के स्टेश्ने सी भू भू जो नहीं। इसी अने ना में ना बरते ने हेश्ने सी भू भू जो जो सी एवं कारे कहा ने सारामां गासरारमा भू भू जो जो साम सामाना का ने कोई ना हा रोस विकाशक वेसापरा चाकररारवाना जिले हैं ता हारोस

गक्रेनेट्लांनांनां मलखानकाने। अभागताना वाले जातमनएक लान तथा। मात्रमनापडे॥ नारेएक महामामेने वे सानो संग रलाकलोको येक सो॥५९॥ तेहे वा या दो राजाने वा। वद्यामहानाषुरो प्रयोसरवहर पायो से वाजा तारेराजायेयुछताकेरछ। पर्भान्यमोसरवजो माराकाय हा माय्स यरत्या छा ये। तारे राजावे ने बोला बोने २ ज बात करोतो के टला का पर्वावमा नाकल्या तेरलानेरालाने बाक्वानालीको नाता नेद्रमायो उक्वी जा जो। ५ थ। हा वेतेसी वंतव ये। तसकरतेतीनां नावीधनीव च्युवारत्रणप्रश अंसकोरा। ५५। तेमध्याकेकव दा दो साध्य संतप २ नोत्यागकराने प्रयातेचाक २ दरमायोक् राने॥ तेनातामारजे॥ ५ ॥ वरतवा साउँ॥ हावेतेहेमांवा संते तोष दार्षपुत्रीतानांना प्रयाग्रही नरही जांग ५ । जेन्य्रतंतत्रन्भागवी भुतावांनरारवी जेन करताभरणिकदापानातामेव्रत वादेनहार्व वणाष्प्रतानेयणसकरेनेहेनेयण्याज्याज्या मारेते एक सांकरे। - मारत्यवां न र मंतर भावन तजाबनेषमेखरउभय॥ ५००॥ संजोब्रुतमांत वक्तं नरी भावनाकरेछे॥ हावेपदार छनो सार वक्रतातरय गायेलो छे॥ ६ जने जे सने तोदर नोजवद्दा हे आ-जाववानु जेव तक नेत सन ता जी विशेष हैं आ के जाववानु जेव तक रे लु छो। हैं जाववानु जेव तक रे लु छो। हैं जाववानु जेव तक रे लु छो। हैं जाववानु जो महागा जे ने जावने महा है आ के के तो पहार धना जान के साज रे ते वर्ष के साज के 

वार्याकररारवाते कांमतीते राषेनाक साम वे जां मको मनी के ने वी से रत्य षई ने पूछ खाद है तपरे॥६२॥तेजावयानी ना चतनार जांगाने सर् बर्किता ते हे चे फ्रांत ने प्रमांगो ते हे च ग्या पे ते पुष् क्षेत्रवायद्ये॥६६॥जेसकसना-प्रतर्नाजाएपजा ॥ नारसासास जांगाचे तनने नायं ना॥ तेजकं म वावाकर मनोजोनारो छा सने मां चे सर्व काल तांशावो॥६५॥ नेकर मजोईसा रानेसा कुक छापरले हाराकने जनरवोटाने खोटा क्राया कर्णानु जा le. शसादानरकभोज्ञ वावे ज्यादाक्रका का ज्यां का ग्रीहाह है।।हो वे ते हे मां जे कोई गुक्र ता वे सा नो संग गर्ता जेन्ये मे संभाजी रा रवी ने राकण्य ना हा सम 3 गरजजन जेहेर्षेक्स्य। ६ आनेवरमग्रजना स्मा तापरंते सस्वोधक्रता ख्रमां ख्रा। यद्याने हेने ज्याहे ) ते हनेवासे जा यवा तीत - ज़ेत्ये या य ना रे॥६ त्याप्रा a भेजभ्यदे आहर य-अयार-अरवेड दर्मायोमसो वेषोयीः सायेछे ने के टब्साक ना ता ये वरत्यातेम ने 37 शिष्ठमारो एज न्युभंग न्युस्य न्याय तगह वाग प एश्रमातोनाना येचा लेनेपरमगुउनी की पाइ शिला या करे।।७०॥ ते हे ने जया त्या या या या जने जने । M मैश्रमक्षयायेतोक स्यांतस्था सनातंन यद् छाप्रव द गनिमाहा ससक्तवात हो।। हावेर प्रकारे सर्ब् "कराने॥ ७९॥ संत सजन सर्व प्रष्टम करेछे॥ हेबमे भिनोजनाण् हा बेन्माजनम्ने वासे तो प्रगट रन् क्षित्र व्योधि ॥७२॥ तेष्ठकारे जमोने जर्गायुष त्र विश्वाद्य । १०२॥ तेष्ठकार क्षेत्र नाम निर्माण के विश्वाद्य के स्वास के

रहाने समाज जनने के चलक र ना चला जन जन रहाने तमार जननन व प्रामित्र मानो ज्याने ने प्रामित्र करप्रकारणाया जिल्लाम्याहां जीने यो पड़ित त्रधाया अमान कर रे ती न श्री मासे अने ते तता लेश राच २रागर बांद य ते २हे ग बो उपाद कहो।। ७ है।। राष्ट्र रेत्रोताजंतन्वयममाभ्यानेःप्रतरमायायाय आवाकप्रतेष रमगु उवदे छेते सर्व एक रजो।।।। जन्मोजनमनर्कर्गकालेवा जी गन्ययोजीया बोग्रादरजोरबरेरबरोकरता होय तो त मीने तेमा चाल्यानो उपाय कहाये छाये। श्नाय सम्बर्ध शनेयाद्याना खसोतोने तमारामेन संकल्पकता मांगेषात्रयसेने नहीं ती ने बातना जा सान का उत्त अ।हावेतेसांभक्कोर्एकनाराएवसा जेर्त्ययई तेनेरात्यदावसराक्वीनाएकनेगमे र । येवोग्नंतरमनेहहेतुष्रग्रां। तारेयेलानार न्या वीचारक सोजेग्प्रायहां ने सायुर स्वांबीजोगजा स्थान्याय्॥ १॥ राबोके उपाय्क राये सोगावरी ग्रेतरमाधारानेपेलायुरसनेलार्ग रुपेया ग्राप नां नां वीध्य प्रकार ना वेहे यार मां नां रखों॥ दशातें पारतेगादेशमानवराईना जावेरावो युचे वाना नेनेहेनासंग नत्दक्य यराज्ञ पायराउकरानां व र्शाहाबेगप्रकारेवरमग्रु अचरण सरणाजेजंत र्थ्याहोयतोते हेन सकर उत्त कराये छाये॥ अतं लेतात हर च कर उत्त कहा यथ प्राप्त के के लेता के जाने माना की ने ने ने में माना की लेता की माना की वणकेरीनेसरवतत्वभागउयासनासेवीसे ख संतरला प्रशास्त्र ना स्वामना सेवंनव रुउत्ते वस्त्रानना ना ना स्थाप

3 **5** 

AT: ज़ी

南

79 चुन

ख

झर 97

स्र नेब

नेम

H?

नद

रवा

ग्रह नेदे

BU

शाह राउँ

च्या

नसे

E W

वंतरंत्रमंत्रपदारथ-अरपराकरवां॥ र शानेपातर क्रमवनाये सेवंनकर्३॥ अत्रदक्ते अंतरमेएको गवजीर्य। जैव-उसंगात्ये जानं तकालमाही रोबा न्नान याय।।रंभाने प्यरवेडभजं नजनन जनमन्यने क्रमंस अवधास्था एमना अक्रानो वातो गमुजने विशारमारायकारेहेत्रवेमदांमदांमवाधतनाय व्रमराखानेए जस्वभावनेवा से सस्जां ए ब्रह्मा वितारेहेड॥ ६९९॥ यद्या ग्या गता वरमगुरुनोल सबोधगताने नाज ग्रन्न मववी वेके जो उते वर्चन प्रांतानी। ८ जीय रोक्सचे हे छ अव्यावराने छत सक्र3॥जेबरमग्रङ्गपदेस्रक्षान्त्रजेननभननेत्र तेबासेग्र के लो ग्रही या क्षय के दे के जो उपार हिष्य प्र त्रतागता बरोजते मने जी ला राजी ने जुवा। ते पर म ।तकष्टरेतउ तकंग ये जायोन्ग सनी जन्म ता।।ध मरबत्रगती इवराजमुरती क्रोग्गोने भक्ता प्राराध नकर उ॥ ते बद्य प्राप्त स्व स्वा जंभ पो ते ना ज जंस यापरणछायेते॥ंदा शातेयंच जा वस्ता उत्तरपुल टक खानीकल उच्चतानु समर्गाभुल तान ची॥ राक्ने भूवधाः प्रावेवेवाजीने यारप्रयुताकराये॥ ८ ध रिहेनी ज्यादामध्यांत सधी सजां राजे ने न खुता वे वेश्रोजयकारेन्स्र भासन् स्वर्गन्यापनासन ण्यतानेवा से जारवंड रा रवडा। ध्यातमवा समर णिनेन वाय तो ग्रया र स्नाभ्य म हो।। माहे ग्रश्यं उपर भूति संग्रमां गुत्रवां॥ वृद्येक सपां त्का सवाजाग श्रीमेषाया । १८ हा। बा मो गनधायने संजोगपं चरेह II. भवधाः मानसां सुधाः प्रभंगरेहे से॥हा बेए प्रका विकारिने मना हा परम उपास ना ने । व्या सेव M. ST में में मना हा वर मह पास ना ना ने हे ने प्रारं व भनेगे धनगराको॥ तेनो स्वयुणक रतां अन

गर्मदेखाडी॥ २९१॥ नेन्यरंबेर गती सर्व्यतहो व्य श्रवणाउनकष्टपो रवताह्या। ए प्रकारेपरमवा सेम क्षेत्रं संस्कृतारेक्साने परमक ख्योग नाहाता । अस्येजां या बा असामां न्यवा संस्रुभयको श्रेमां थे सजां ए गती वा का ना ना ना ना ने कर तमे है व्रमांनजांरोध्ये॥ ११३॥ एवा ऋतने ऋता ३ भय पर्तामाय प्रमाप्य तो नो भेद जां ए ना रते वरमव व्रसःप्रसस्तां गावा॥११४॥ने जपर्म गरुके के ब्रह्म शता जेन्द्रसने मद्ते॥ ने मतता मे ना जनकतार्मत तांग्राणा १५॥मासेने वरम गरुना साथे लागतव क्षातराखा नेमना सा येना जांतरको रका लेका म्गरव्यवहा॥ ११ हा। गरसे ते प्रधाना जन्म तापद विवासे यां सने यो चाडी दे॥ अने जेममा ता ने बाद बनोबाज्यो ग॥११७॥ ययेनो मेलाय यायने न्यानं (णंमे। श्रेम खंशकता मेम ली ने त्या नंद सुरवधोत्र वे ॥१९० ॥ ईना सक्र ना कर है तस्य स्वीध्ये चाकर्या अवंकारदा यरमगुरु-अरवंडयो गनीक्यरगोष्रकर णा १३॥ पुरएगा ई ताच नरद सो यरम व अऊ यरमवी भिनोसनी कतदर्सावेननां च ठरदसो॥ ग्रामत शमग्रक्षा का उसहरा जय र महरा जय र मबा से स स विनेवयम् रतानागताम् य्याकराने योतासं वित्रं ने ॥१॥ऋतक स्यां गा क्षय थया - प्रने वरगक वियोने तीकरेछे जे जमो सन्मानं नपरम्य कर्णाप क्षेत्रे स्व च स्व चे यह ने यां के क्या था। या प्रायक्षीर् क्रिमेवीसंस्थताता ग्रव्याकरात्रेकाले। भाजेजे भेग ने वा त्य देहदेवर हा छे॥ ने तेवेका यो तेवो भेग ने वा ना प्रवाह्य के जाने नद्रपा छ। न नवेभवनेवगानीरनेवोत्रेजां सांभानारेसाधार मवेभवनपर्यामामाम यांनक्ष्रणाव्यामामामामे 530 लाउसरप्रथना ताल माना में जाने में जाने में जाने हैं हैं। 25.5 जीनेवासेवसे छे।एहउसांभवाने जंदेशी त्र यानवासवस्य प्रामात्रेचरण बाहे वांनतावा बेब वजान्याम्याच्याच्यान्य जान्य स्वाध्य अत्या जो अस्य वित्र वेत्र के स्वाध्य अस्य स्वाध्य स जो त्रेसां यथ कता करा ने कहो ॥ ।। हा वेश वो पूस या। मगुरुप्रवराकरतां जयरमभेद सादी कत्र तथा जा वयमब्रावस्वकरेन्ड्याप्ण वछ्तारेस २१॥ राहारकरवाचास्तेकरा ऋ। मेरवेब्। जा प्रकारे वयां भवकेहछ।हे ग्रोनास् जनतमो॥ त्थामाहाता । नव यत्र यत्री यवणने वा से राखाने मुझक् सोती वा न राजंतरमांबहुसारोखाउँया। १५।हावेतेहेनोजा रव वमरमनुरुपकर तेमरवएक राजे यताता गयो बाज्यवाचारकराक्षेज्यो॥ ९ ९॥ तारेसरवसंस्या दा टं वारणणसी। अहोरवाससासाववंमदेववा वज्ये तीवायुईइ अस्वनाकुमार॥१ थास्नक्रामीरंत 9,मो रोदेव खांव्नक वा बाधा जेक हरा ने वेदां तमा · . . . . रनीयकारघे॥तद्वसारजी तांदेह॥१ शतेबी र्गाप्रकार्यात्वस्य सार्थः स्वर्धः स्व नेवासएक वेकां रोको यनो यन या।। जहीं रवार नानाम॥ १था सेवानेक हराने तो सरवनर्थम् २६॥ : सहातवी मृती : प्रधान ने न्यो रवाने फतारे राने र राक साधा १००० ते है वाज - जाय-जाय नामी चारहे मारा वातवीताना हो का मेना वास कराने रहे हाथे हैं हैना जा से साथा ने ना वास कराने रहे हाथे हैं हेनाजः प्रसमान्यव जादाननमे जावे वार्य याते रवंबेदसमस्तवमारा नामने जावला वर्षे कार्यने सम्बद्धा कार्यने सम्बद्धा कार्यने कहा हो नार्थ मान्य कार्यने कार्यन कारे अनुभवनेवारवे अवेकत्र ये न वीत्री

P.·A

श्वाय॥१७॥नेहेचकाररगर्बाससाः प्रस्वनाकेम रणा ग्रामेर ने सरवदेव जे के ते सकल तच धार् त्रश्रार घवा अतावांन छे॥१८॥ तारेते मनाजा वेवने वा खेपणा जां मदेवना जे सज्यावा नेव सा नेईवे।।चेदमासरजनानेज्ञनोरखेकाया।। १ हमते लेकरानेतेमना नेत्रनेवा से जो वानान्हां या या यारणा अने का स्वनी कुमार ना माक ने वी बेबी नाका या प्रस्वना कुवा र नो . प्रेस प्रमावा ने बसो छे। ।।।। अने मेरवना खबराने वारवेदा जवादा बाजा। बांहां छे ते जा वा ने र हरो छे॥ राज गुकारे मर्बदेव तेवासेन्त्रं सञ्जामान्यभीन्यका यादेवनान्त्रा वानेरह्माछे॥२थामादोदैवनेन्नापर्गमोन्यवरस विनेवीरये तत्व न्या द्वाक रतारे नारमे लामां या भ ग्योखेला छे॥२३॥ते जाकंस्यायो नाजा द्यादोई नेई गणेनेवासेदेवसरखांज तत्वजांशाक्रेजेना 7 कोसरवक्राया चायारधातेच्राचरदेववेरार शवमां अधाक नंन्यभाग वो र्वा छे॥ नेवा खता MI शांलोबुतमोन चयांजाय्॥ २५॥ तेवानादैवना समय्देने स्तापनावी से स्तावता जन यो। देवतो T ग रवनामेले कतारेक सा व्रमां गोम २ शादे हधारीज भवतमेव सेछे।।यांच सातदे हस्धाग्रात्ये न्त्र भारतिमाधनायेष्ठवतायाय॥देवनोतन्व विष्णते हेना वारवे यं संये साने खमारा देहने में भिष्णते हेना वारवे प्रमाने प्रमाना दहन भेषे चेत्रमान तत्यभा गार त्या सरवतन चार्के छे विकेतें हे हे ने वासे देव न्मधा होने का ह्या मो ज्या भारतीयं स्थानलयरण ज्ञानाकतनारंजन ज्याही विनावीभाग।।२९९। वोरवेजा चतेचे तेजांगाजी

अने वेग रने वारवे के ना वासे की खाणा नुवर्व गरमेवारवार्य निवासी से मिला वास्त्री से से वासे में मिला के से मिला के नेवमाणनहना तत्वययययय यसे ने वासे जाता सः अ वेरारमावासस्य अग्रावे ने वेच अने चेर्मा ने पुरुष्ति स्थाने अपर विज्ञाने के स्थाने के स्थाने के स्थाने के स्थान रजारुशान्त्राद्य स्वेर्त्रते वी ना न्यां न्यदेवस रशनोतेसकलमाहासंन्यमेषोतानाकोष वासेर हाने बरते छे ते मना ग्रेस कोईनाजा नधीने जायनही। १ शारा चुकारे तत्यनी प्रवृत्त जन्मरवालबोधकरतनीचाले छै॥ तेजेरेनी बोदेह गंगुरमे भसी छे ते प्रमां यो जां ए वे ः महोक्तांन्यदेवक्तावाने स्पावना तनुमे यांन नेवासेवसानेपृद्धाप्रयुत्ताचाद्धराउक्रतका ३ धासना तंन प्रभ्येक राजन या के मजे जा श नातोयरमवचास्यासरवज्ञातीकारका भ्वोसयतमान के तार्याकरे तानु जो एना वें मकंची तमात्रभुखी ज से । जे ज्यू एरं रे एरं जमात्रश्वाजयान्या। ३ द्या जेयो ते न्त्रकला तर्स्वराये सक्तामांनयरम नमहेतदायते । लाजावाहावेखनव सं सनेवासे छेजारी मेछे।। उबां वेदे आरोस बोसा गवाछे।। जेरे यकतानेतेनां क्रतन्त कसुजां गावाप से नहारावेचीत्रामेव्हागाउत्पाः पहाजेकरता स्वानाने सनम्ख्यक्रतकर सन्द्राञ्चलां प्रोत् हेवहायार करवाने साक्षा ३ त्या नो ना तरने स्वता सस्म्याचारकराने जो तां केटलां लेखागलभावारकरानं जाताकरण नाहाजनमा समान्ययार्थना जाता द्रीवृतार्थं जो संस्व ग्रेन न्या या ता द रवा व

5

5,

d ₹.

京,京 J

T Ħ A.

ये ने

7 न्।

ना 7

हां रहे

20

18/14/18/

H TO

ला

ते

। शारहे ना संगते व्यवार्करा ये तो कसरबेल व्या त्रीवाका। नहा तर्तो न या यता रेतां हां या भवामे व्यासाधिशा तो ज्याप्याने कांग्ये के हेन वेहासंमस्कराक्रना उद्या प्रश्ने गहेन व्यात्येसमंधकर्वो॥ध्या तारेगहेनां परवां त्रात्रवरावरायहोयनोसमधकरायेरमवा ग्रवरानेसंसारमा जेमनोना क्षेत्रक्षा द करेछी॥ धराते योत यो तानां यरवां रवा स्नाने न मंधकरेछे ते ऋतारैज पेहे ज जोईने करे लु ते मन्त्रापरान्त्रोककार्यमां जुतता॥ इथ्यान इयेष्ट गाहावे ऋतारेय खांसा पुकाश्नां बाद्य नां जाय वेब राये प्रयोग जा ना वा स्तार जो यो ने प्रता प्रपारजेहेनो॥ धर्धा छेवरजव हान्प्रकेत बुद्धांड गणराजेयेतो-प्राजलनंकरभातना-प्रावेशस गरएपेकरानेपोतानोवाचार्करेछे॥ ध्रंभाजेह ष्रवारेज छ्रमाहारोयराज्यार जावार जानो न्यां ष्ये। येवर स्पावे येउ हा चेहती ग्रमर ग्रम उपा विद्याध्ना । अजनम अजो नी संभव सद्युष्ट्र । ता णेलप्राते अजज्ञ एग यहरे <sup>भ</sup>राकोई ने पेट ग्यं बत हिन्हा। इसार्वसंयरवां तामतां हा वेक्र्त् विषेत्रे हे चे तं च सजां राग गार वं उ वि व व व व व भेने सरव्य ज्वंचे ने उत्र रहे उरा वोछ॥ ५०॥ ना भिने बोला बी तो जो उरा बो खे तो बराबरपरव वध्यो जने जी जा जा मां उरा तो ते त वसदा है भारतिस्थान्य स्वत्राध्य स्वत्राधाने यो त्ये के हेर्ने भारतिस्थान स्वाधितारे स्वत्राधाने यो त्ये के हेर्ने भारतीय से स्वत्राधाने स्वत्राधान स्वाधान स्वाधान स्वाधान स्वत्राधान स

मोहा

कोर्जे खुं वां वांग खांके ज़ंधन याया। यह ॥ तेम नपस्तीष्ठिते कबुला विग्रामा वार्तीक्राधि ववसः आध्या में जन्मे जन्मे सम्ध्र उत्तवताकरवानु॥ ॥ धार जंमकोर ने घेरवला वारोहीय जिले भागडी घेरनहा। नारेएक लाव वारोहीय जन निर्मा साध्ये बन न नहीं । वर्षे रहे रीवात्वध्य न कार्याची एट देव छो। यां भनाता रहे जेन्द्रावामवलाराह्य होते हे ने मांख्या वर नेतर्वाधानवामां रवण्डाना उत्तरे॥ यस है म वन कडाका छन्। या जान कड़ हो विए डो हो। या उत्तर माने हो ते वि हो। ते हो। न्धार्यते॥हावस्यायछने ज्वा। ५६॥ हावेमा न १ दण्ताकासणाय्यमगताद्भयसुन्यसंकाकात्रा सु॥तेसंकल्पभावनानेपेटाने॥ ५०॥ सहकारते राभ वहेनाबासे अवकासमाहाद यो छने मेला जेम नेनेहेनोसब्दकसो॥ नेसब्दउचारग्येनारेबा रात सांभवी। कता नां हां सुधा ने हे नी ज ता बे जां मासे गत्पनभवे है वाय॥ प्रजे वो सती चाति गरे सेलवागत्यतेकेहेवाय॥५ त्याहावेतेगत्यमा पर वासे वेगचा तेने पर्वनवानान चा लेमा होते था ना ववंनजां रावेण हावे यवंन नी सभावचर्तण वां । ने जापना हा यवेह जाहारे जा साथे ना रेचरवण ने इ कराने उस्मान के साथे ना रेचरवण ने इ कराने उसता जाने हो माटा व वात वात के के स्वाहित्र ते ताय - अता उद्यादा ते ने पेर्ध संबद्धा शायने जो दर - से ता उद्यादा ते ने पेर्ध राष्ट्रकारे॥ हुआने जा दर - सोठा ने सुद्धे नारे ब्रुकारेश राष्ट्रकारे॥हेशानेज शक्योजस्य स्थारा वर्षा काव्यवातेसेवासज्ञानस्य युजाराव्यक्षित्रं विश्वत्ये विश्य वंचनत्वस्यातम् निवासे वृत्ते हो। देव विवास विवास

ल. गुन

EUS

विह 武:

54

W. वन

SE SE जी

खोः

न्मर

क्रिक्रतारे। हावेपंच भुतपेहे जांस रयतत्य संकट्ये क्राते। हिंधा कर्गाह्तां प्रणां प्रगाट् हरूमां नर्चनाप्र श्वतत्र को न रहों म नरते॥ मा के प्रतं कारधसा क्रांगेष्रगरवावांमेर्सरेस्ग्रवानामुश्ता हथारे वताचा होरा मजो सा वंच भत्र प्रगटकर र ने प्रासंका वावां वां मे ते हैं नो रसभ सो। तारे चो रासा वसप्रक तारचना।६६॥६ पर्वत प्रतस्यदे रव जेवा चर्ने वरम शचाली। रायकारे इयन्त्र इय तत्वनादे हरचा नेत मान्यं सभोन्यभोन्य॥ ६७॥ - सया र द्यार मे चेरकक गानारेसचेतंनन घेनेचुतवा खाउपाने ग्राटनापर भ्याचासी पणउयताज उचैतंनएक नेजांणता वणा ६ सा - त्रद्यापा सधी ने हे ने - ज नं तक सप्रवीती ग्याने बेहुनो वेहे पार एक एक नासंग्र छ। चाले छेप णभत्यपडा छेर्द्द्रा। ने केई रात्ये हा वे ते कहा ये छा ये मकोईएकडा करणे पुरस्भीरवारी निहेनेएफना रितेषरणहाकरणाजमला॥ ७०॥नेउभयेनाभीरयमा गिनेग जारो ने बेह करे ने बेह ने एक छार वे हे पार माजी मिश्रयेता संग्रे संतता दस छोक राने पचा सकेच 1 (कोयरा वार य दो॥ ७ शाते पर्गमा गालावी से सर्व विह करें छे। ये मकरतां बेह ने ये सान्ये च व रसमाय ॥ । । तारे एक दा डोडो सो डो सा बे गंछे॥ सारे एत विमेहोसाकेहे छेहेडरचा तारानात्यकांरा तेहे जिये लोय ए डो सामे युक्रे के ताहारामा त्यकां एपते भी रेश निरं वेह एक एक ने जवा पहें छे जे ने तो भी रेश ने मासं मन जागहा वे रावा चारक राने जवे भू भू में मासं मन चाणहा वेरा वार्य राते जुबे भू भी हो यो संत ता ॥ ५ ५ ॥ वरा वार्य यो ने स्व भिष्ठा हो यस तहा । । । । । पर प्यार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स-इय

हा ये ते ज प्रकारे जा प्रणासक ल जे स यूत मां न जे ज हायतमप्रकार जाप एक कराये हो वारं मवारंत मधारणकराने॥ ५६॥ यदामात्रनवरानारह्याते या नारी ने जात्या अंसरायुरसर सेत तो नेहत यो ने पचा सप्रकृती गर देने परा वार प्रयो हो। पू तेयोतयोताना जाताना खबये न हो। शासने नो वेहे यारकरा ये छे। यरा न्या परा न्या देहना त्रवांछे।। प्रने केटलाबाजाजाजार्य प्रकृष्ण यद्ये॥ थ। राहेने तो प्राय्या ग्राही मध्यां तजां ण जन था। अने अप्रदेहवां चेयना तत्वर प्राण ः तंशक्य न्यायनामे॥ स्थाकां ए न्याया ने वेपारं क नेहेनेवए। जांसातानवा राउन्त्रं धेंधंधन्त्र ज्ञांना ए यते छे ते प्रतस्वी चारकरो ने ज्वो॥ र शाते प्रम रसने सरएपे जै ने ग्री लरवरा करो हो जो। हा वेपा सनीक्याभागजे सुन्यका हो के पूज्य कर्यां हुतांते सेतेमनेवासरजंनघरारु चयहता । अजे ज्यापन मकतानेतेमनकताः प्रनेतः प्रनेत्वं साउरचता वसन्समः गन्यारह्या । अने प्रसने करां नेप चत्रवेदमांनाजकारागेहतां॥ हशाना यहम नेत्री गछोर उन्मेहं सने प्रश्वह र ने न्रवत्याहं सन्प्रभी गती बासराजया॥ ४ छ॥ : त्रनेवाजोराकः क्रासेस काराक्नोजेमुलमतलव्यम्याचारा जांगाने॥ स्थाप्य यगते वोजक्रोने उत्तरते ॥ मतत्ववनं जहं सेकराते वी ना जं से प्रान्ती में रसेनकाराकेन आयानहा॥ १ ६॥ राष्ट्रकारेषुर्व शाहावेग्यकारे मरवने वासरजंन व्यार्थि वैशेवरमग्रक्तवासरजन वर्गात्र

विष्राणिखपर सवतार्॥ ८०॥धराने स्वाव्याचे स्वा वतेवखतप्रसन्नकागणधामनेवासेईस्वर्घने वसबोधनारबांएप प्राचु रग्रह्मा ज प्राप रूपने स क्रता। १ था बायनो सर्वने जा प्योचे ज्यने सक छ गानीप्रवतीर कार सकार माना मारवनेर गतारपवीभक्तादरसावादीधीछे॥ स्डनाराष्ट्रकारे गमग्रजीमे लाय यया पृष्ठी ग्रव्या स्क्रोधसर् वतेषयो तारेयं चरेह्ना स्मव्यो॥ ८५ शासरवना जःम क्षाने चरो। ए बोन्यं तरमां अशंसोन्या ब्योन्य होते त्रेष्यं मवासेस् खंस्कतने तेउपरांत्र॥ ४ शातेउप गंतपरमवा से सम्बरमगुरु नो तस्य प्राप्त ययो ते लेकराने जनाद्य समर्या यो तानासरुप सत्य हेण्यानुत व्याब्ध्यास्य वहतात ज्ञायना ज्ञायना कातारवराभां न ज्ञाब रह बु॥ हा वेच र रहे ह सुधा स शवदुखयोतानाकरमञ्ज्ञां रहे॥ अधा सनेक्रजां व मेगवैष्णपरमकारएएट्हतत्व सर्वनु सरवभो ग खानुछे॥हावेतेहेनुकार्याजेतांहांतोराक्षान्य a भमंत। ६६॥ नारंजननो भागरह्यो छे नाहोते जां गैत्रामागदेह बानाराकरको सुषु वृत्राक रसेतेसा 哥 विदेहने वी से सकल - हो सवरम सुरवरूप यूने छे नेद "धिषधेनेदेहनो जारेग्नवधी मंत्र गावेतारेत्रता गेणं मनेवा से त्यमाय सुरवभो गवे॥ हावेपरमक FIF णनोजा हारेत्या गकरेतारे॥ ध्या-संश्वेस्त्यका 更 भग्नममेनावासकरे तांहांनावाभागने प्रहंडुभंगे कारना जा व्यामेवसाने रहे छे॥ ८ श्रानान प्रसं भिष्टा वित्रा मेन सम्बद्धां स्थाना ने धारणक भिष्टा वित्रा मेने सम्बद्धां स्थान काले व 文が भेडेले वेते ज्ञायनु जाय खाउप जो का खेडे भेडेले वेते ज्ञायनु जाय खाउप जो का खेडे भूषायतं ज्ञायनं जायस्य क्षतं प्रमानं स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व भूते भावतिकादा ॥ हत्या तत्या । स्वाप्त स्वाप्त

Tal SA

砂木

4

नपु

U

ना

य

N

जनसमातंन तस्योगवडोनेधां प्रमानं सेन्ने रेग १ ।। अने ने ऋताना ना ने से स्टार हो ने जाने ता स सार जां गरे या करे। ए प्रकारे यर म मोस्प संस्थ रणा १-३॥ यां हां सधीय र मगर ये दे उसा वी दी धुन है। अखाल जंसतदाकार यर्ने सकतानुभतन्। स्वाग्या॥ ९०४॥ - ज्रहोजे न्य्रना दीर् स्वर्ता प्राप्ताक भवजेकोर् छंसे न्त्रावीचार प्रमां के साध्यक हते अवसंसार्जात्या ने ॥१०३॥परमग्रक्तस्वोधक्षा वडोकरतारच चैने वा राउतरा जांग वा॥ एपुक -प्रावेशरमे प्रस्त सर्गायर मगुरुने चर्गारवीह वासेचवा॥१-धानेसनांग्यपणुंन्मरवंडलेईनेश ज्ञाम्सयां नकश्ताहुवा। जिनेहजुःयागलः वानकरिने ज्यानर्ज्य मरहेसमां वारां गत्यथने॥ हाचे सांम्य गायरमगुरु के है छे जे ने जए बोधवा ऋताना अद्यादकत सेहे ब्रह्मां न सत साच सा रवसमान्या १ शावासे सम्भाना ना ना ना समान्या आयो तेनान ऋगपा सही त व चंन युद्वोगीये ग्राजो॥१०॥तारेसंनसजंनगोना प्रधाकारीम् बरानेकेहेछेजे॥-प्रहोपरमग्रुतसाम्यन्त्राव क्रावाहमारावर्थायनोग्-जन्न अस्वस्व रे लाहमारा जां तरमे जता ता उच सा सातका वेशेतारेगहेर सोनानं सांभटना नेयरमगुरूष संद्ये॥१. १८॥ अहोतनो संत सजनसक्तराम ने वारसम्भारा देशस्य समरमेन पर्ने गार्थ ने वारसम्गायो ना ना ई छा का वाये ना है। ग्याक्षिश्वानारे तेरापे जागास हा यधराने ते वर्ष वेस्रनेष्ठे वेद्वा का गता है। यधरानं स्व वाबोनावंपमञ्जातायसे॥१९१॥राउन्जातनात्री ना संदेश में आसी श्री। श

€6

न

B

व 13 4 B

तं एप परार झता ने वी रवे पक्उ नहा ॥ ११ ए हा बेते प्र हारे सक्त वरा सर्व गता गता राग्य तेत्र तत्र व्यागन हायाजे के ब सक र ता मोरे या जो गाने जा हो छ वसमीने प्रगटन्मापुछ्ते॥१९३॥न्माप तेसंबेलेस शकारकोई नी कोई देखा ने ज च्यां न कदरसाव ग्राएजहमोरी नाज को पानाभंडार्॥ १९ शानमोने धाउकरानेमेखरमां याजेहेनेजेटस्र वासेरार वसे तारे हे जो जानंत का रहे जानंत जाब से से तोष रवोन्नहा।।१९५।।एउन्मखुरन्मवार्गनोक्रवभंडा ।परमग्र को जिन्न अनु जो गा जो॥ हा बेराउपरो त बोलउन्सोन्यनहो॥१९६॥राज सनवचंनव्रताता तेर्ने एक ज्या प्रनाना जा के ब्रह्म कर ना न अजं न अखोद्यान्त्रं सकरवाजो अन्त्रनादासाध्यग्रे॥ !श्री जे हे ने सुरम बेद सर्जं न सम्ब्रा पुरव करे वा शैसनका दाक ने प्राने ता जी बदे हथारा मर्वय असने प्रेमवडीन्स रवंड अजे छो। ११ ता ने बुकारे भाषणान्त्र स्प्रजाव्य युव स्तारतोक नाने प्रमङ भारवचंनजतास्य जनग्रहते ईनेते जापन वेरतात्वातंनक ३३॥११६॥ ग्वानावा तस्य ने अनंतकरायेती वरा बर्मगु उसतके च छ्युभू विषयासना ने तोस्त राकेई नाज्याये॥ १२ आमासते भगाउपासना कराने सर्व प्रांगा ने राजमागी हने । जेहेतमा रुमजनचा तंन साचर्गा प्रमोनेप्र शिक्षां अस्यक्रायाक्षरवा॥ सम्माने वास्यदाया क्षित्रासी चेन्द्रा देश। अर्था कता क्रषाचा ध्ये। च्रा विस्तासायः अनं तायः अनेतायनमोन्।। भीष :॥ अही केच दा दा व्यक्ता अस्य पोत्येष्त्राप

R

le

S H

1 रि

ने

स नेत

9.4 3

वा TEA

जो

NO. as n

THE

RV

36 ST.

T 716

SAN が清

210

छो।। १२॥ अने जंस मग्रण वृक्तार वय जा ला मण न•ज़् प्रेमान्यभान्य मास्याद्याते सक् सं रहे सन्तामा वास न्याप को स्था सरव ते न्या है। धां म छोने स्था वना मरजंगहार बाप छो। अने सेवानी धेव १२४॥ तेपरमगुत्रनं खरूपछ्रसूष्ट्रते जाने जाप एउभयएक जता उथकेवल ज जां एवा। हावेग हेतमो को रेयेक सरव्यक्त छो। १२५॥ मादोतमा लारबादेवलत्रहले ग्रामान ग्रेस ग्रंबेर्स के नोवेनमनेसर्गछनेन्यस्कारकरुषाशिक्ष हमाराकले समुनारम कर नार एक अवीसा h पछो॥कलेसतेकरप्रकार्ना अमीने यायछे॥ ने नावेद्न करुछ ने तमी नत्यनाभा गरेह बंग ंप्राप्पाछं।।तेहेना ब्रह्मती संस्थुर्ए। ज्यमोने जन H मेउतमरीत्यन्। ज्यावतान्या। १२८॥ तेसंमण ष्रताता ग्रावेतोसा इए वाची त्या उपजे छे॥ या FI. रगानेराजवातनीतलमस्यन्त्रेतर्मेणायरं यां ते हे नो सक्त ज्ञाहारे ज्ञाहार ज्ञाहार ज्ञाहारे ज्ञाहारे ज्ञाहार ज्ञाहारे ज्ञाहार ज्ञा 'मखानक् ले सेनास्यांने से ।। जाप्यात्य त्यायारको॥१३०॥ न्मने न्मर्वंड न्म्मरस्रोद चो।तमाराव्यमगतानो वार कीईनेयुज्डेन वावरमगुरुकेव्ल्यएकमेव्न जाद्य ताय स जाहा॥१३३॥देवदाव्यक्तचहार्यके नवर्ष रूप चार हो तस्वरूप न्याय छो। हा से गणकार वह मोन्यनं तन्त्र गना वंत न्यवद्य धां या। ११०। तहं तन्त्रापनाहो स्थान वंत न्यवद्य धां या। ११०। तहं M त जापना हो अप प्रतेन न मो नम् स्तेः जनते न स्था रक्ष उछ। राष्ट्रकारेना स्वताक के समार्थन संद कला। १३ साम स्थाना स्थाना स्थाना समार्थः वर्षे समार्थः 'मरवंडान जायने यराजा नता कराजे ते हैं

ą

û

F

रा

2

ने

ग्रेष

3 8-

£1. न्।

वनकारु ।। हा बेए तो सर्वना उपरांतवरा ष्ट्रप्रका 'क्रोनेसत्यसत्रे॥११६॥हावेबोसवानुसुहं क्षेत्राग्रं य नो न्मध्या स्वारं म घारसकल जीवनर नागयेकराने॥११५॥नातायेवरते तोजेहेनायतापे लबान्या मं प्राप्त या या। मने तेहे नां परं मभा उप उद्ये ग्रितं प्रवंतजनना पुर्या। १३६। क से सरा जरा वजनममे यर्जाय।।वराजोन्जारामध्यांतग्रंयने वामेख्यासमावेरागने ज्ञांनक्होंछ्॥१३७॥ नेप्रमं तियायमाएगा ने युत्ता र तो युतार च चतो वा रमस विमासेराजवा खेनाजभावनाहे त राखाने कुरुर्प ममंत्रचने॥१३ तावानवानयेचे नेऋपानाधांत्रमा गष्दप्रमेवासे हास गाना यने गार्वेड राखनोरा नक्षत्रमरव्यक्षवरमग्रहसत् केव्यप्ते नम्कार प्रभंगकरानेछे॥ ३८॥हावेएजग्रं घम्रव्यामनेननी हमा सकराने जानं भवपूताता न्यायनो हा स्वतेया वेनेकोईऋताना व्यंसा १९६०। राऋत मेर्या व्या व्या 32 गंन जता हो यते जांग से॥ अने जधा कारा ब्रते जा श्यमेहेर जिसामावार्य सर्मव्यो॥ १५९॥ साखा शिक्राया जेही-ज़हमुत्।। मांहा मोग ल मी महांना। जे त िलधाकाराष्ट्रते कहा॥ समोसंतमु जोन॥ १ ४२॥ वर्ष M विकतात्महेतजे॥ आहेएककारतार॥ जीनकार्च R लेखकेछ।।नहाबारने वार॥१४३॥ तेहाकरतानर॥ 007 विवा कहा विद्या ने द्यां ना ना रूपपदा स स हाजा 10 विश्वितरंत्र नाहीक छुआंना।१९८८॥ ज्यानात 鄠 विक्षाणियवाना जावताय ।। जनमाजन । विक्षाणियवाना जावताय ।। १६०। प्रमाप्तको ब्राजी। क्रता भिष्ठेराक्षणाना रत्पदास जाना न प्रते। द्वारहोच विक्षाणि १६०। सम्क्रता जाहे तलस्र बोधा सह्यो बहुवा मिल्यम्याना का यहाय । जेनमो जनमञ्जातना स

100 000 O

Ų

नं

माराकेहेनारणप्रमन्तेनहो। नेजनाना क्ष करणा मागरपरमग्रमा मकत्वमारसमस्या कत्या मागरपर गणा मागरपर मा या अगमगता । १९६० । ज्ञाजनके हेतका स्व चरेमाहास्ममोरा। तस्रवोधग्रहामके।। नार्ण्य ध्रुवधारु॥१५०॥ ज्य्रेगा। द्राक्ताक्राएगा१६॥ ईतामा सकताना हैत जस्म वोध्यं ची करण रकीयानां मे।।च उर्द्सो स्मवेद गतीसक अहेनलस्बोधयेचीकरण्सेमप्ररण्।। बाष साध्रवसाल मानरवेदसागरः वीनक रेणासा

र।। श्रीमत्तप्रमगुरुन्महः समतः १६ ६७ ता

हाव ही।। १॥